मिथिलाभाषाकोष

रचयिता

पं. दीनबन्धु झा



शेखर प्रकाशन, पटना

मिथिलाभाषाकोष

रचयिता

पं० दीनबन्धु झा
मिथिलाभाषाविद्योतन (मैथिलीव्याकरण) निर्माता



शेखर प्रकाशन
पटना

प्रकाशक : शेखर प्रकाशन
2A/39, इन्द्रपुरी
पटना-800024
मो. : 9334102305

प्रथम संस्करण : शाके 1872
द्वितीय संस्करण : 28 मार्च 2018

प्रति : 500

आवरण : शेखर मीडिया ग्रुप

मूल्य : 500/- टाका

मुद्रक : अक्षर प्रिन्टर्स
दरियापुर, पटना

MITHILA BHASHA KOSH

By

Pt. Dinabandhu Jha



महावैयाकरण

पं० श्री दीनबन्धु झा

प्रकाशकीय

प्रकाशन कार्य आइ काल्हि बड़ सहज बूझल जाइछ मुदा हमरा जनैत ई अत्यन्त दुरूह कार्य अछि । खास कऽ मैथिली जगतक पोथीकेँ देखि कऽ तँ ई कहले जा सकैछ जे पोथी प्रकाशनक जे प्रक्रिया छैक तकरा बहुत हल्लुक रूपें लेल जाइछ । पोथी छपि जाय सैह कीर्तिमान भऽ गेल ।

हम अपन प्रकाशन कार्यमे तीन टा बात अवश्य ध्यानमे रखैत छी - पहिल-पोथीक उपयोगिता, दोसर, पोथीक महत्व आ तेसर पोथीक तकनीकी उत्कृष्टता। हँ, पोथीक बजट देखि ओकर देखनुक आकर्षणमे किछु कमी-बेसी अवश्य होइत रहैछ । खास कऽ 2000 ई.क बाद जखन शेखर प्रकाशन विभिन्न पाठ्यक्रमक पोथीक प्रकाशनक दिस डेग बढ़ौलक तँ दायित्व आर बेसी बढ़ि गेल। मुदा अपन 25 वर्षक एहि अभियानमे जतेक कार्य कऽ सकलहुँ अछि ताहिसँ संतुष्ट अवश्य छी जे मैथिलीक आंगनमे हमरो किछु मोजर अछि आ से काजक बलें ।

ओना हम मैथिलीभाषी खास कऽ बुद्धिजीवी लोकनि मान-सम्मान-पुरस्कार, प्रशंसा, गोलैसीक संसारमे उबडूब करैत मिथिलाक सहज खेती गप्पबाजीमे बेसी समय व्यतीत करब अपन अधिकार आ दायित्व दुनू बुझैत छी । हमरा ई कहियो नहि रूचल आ तेँ आइ ई छोटछिन संस्था मैथिलीक विद्यार्थीक विश्वास अर्जित कऽ संतुष्ट आ तृप्त अछि। एखनो एहि वर्ग लेल अनेक प्रकारक कार्य-योजना चलि रहल अछि जकर फलाफल दू-तीन वर्षमे सोझां आओत ।

हँ, एकटा कचोट छल जे अनेक प्रकारक काज करितो प्रकाशनसँ शब्दकोश नहि बहार कऽ सकलहुँ । मुदा ई अवसर इच्छा जाग्रत होइते प्राप्त भेल। आदरणीय गोविन्द झा जीसँ एहि प्रसंग गप्प भेल तँ ओ कहलनि-महावैयाकरण पं. दीनबन्धु झाक जे 'मिथिलाभाषाकोष' मैथिलीक पहिल कोश अछि से अहाँ छापू। 'हमरा लागल जे हमरा अलभ्य वस्तु प्रकाशन लेल भेटि गेल । हम लागि गेलहुँ एहि काजमे मुदा सामान्य पोथीसँ ई कठिन काज छल । एकरा तैयार करबामे दू वर्षक समय लागि गेल ।

आदरणीय गोविन्द बाबू एकटा आलेखमे चर्च कयलनि अछि जे मैथिलीक एकरूपता (वर्तनी) लेल बहुत प्रयास भेल मुदा सभटा असफल होइत गेल । मिथिला मिहिर साप्ताहिक जखन 1960 मे पटनासँ प्रकाशित भेल तँ ओकर प्रधान

सम्पादक सुधांशु 'शेखर' चौधरी मैथिलीक स्वत:उद्भूत वर्तनी तैयार कऽ ओहिमे चलौलनि । हुनका द्वारा निर्धारित वर्तनी लोकप्रिय आ सर्वप्रिय भेल आ यैह मैथिलीक सर्वकालीन 'स्वर्ण युग' अछि । मुदा पचास वर्षक बाद 2012 सँ एहिमे ह्रास भऽ गेल अछि आ एहिमे विभिन्न प्रकारक विकृति आबि रहल अछि । ई अति चिन्ताक विषय अछि ।

आदरणीय गोविन्द बाबू छौ युग (72 वर्ष)सँ मैथिलीक जागरूक प्रतिनिधि छथि । तँ हुनक सम्मान करैत, पं. दीनबन्धु झाक मिथिलाभाषा कोषक महत्ताकेँ देखैत तथा मैथिलीक वर्तनीक क्षेत्रमे पं. सुधांशु शेखर चौधरीक अविस्मरणीय योगदानकेँ रेखांकित करैत एहि शब्दकोषकेँ प्रस्तुत कऽ अत्यन्त हर्ष ओ संतुष्टिक अनुभव कऽ रहल छी ।

आशा अछि मैथिली जगत एहि उपलब्धिक संज्ञान लऽ पूर्वहि जकाँ सहयोग करत ।

28 मार्च, 2018 —शरदिन्दु चौधरी

(शेखर पुण्य तिथि)

भावाञ्जलि

आइ पराते आयुष्मान् शरदिन्दु जी शुभ समाचार सुनओलनि जे शेखर प्रकाशन मिथिलाभाषाकोषक पुनर्मुद्रण कऽ रहल अछि । सुनितहि हम भावुक भऽ उठलहुँ । इएह कोष हमरा सिखओलक जे कोष कोना बनैछ आ यैह लूरि हमर जीवन-यात्राक संवल भेल । एहि विधामे हम जे किछु लिखल से मानू एही कोषरूपी कल्पलताक फूल-फल थिक । ई सभ मन पड़ल तँ हम सहसा भावविभोर भऽ गेलहुँ ।

कोष नाना भाषामे नाना प्रकारक अछि । प्रस्तुत कोष ताहि सभसँ किछु भिन्न प्रकारक अछि । आन कोष सभ संस्कृत शब्द समेटि-समेटि मोटगर भेल अछि। प्रस्तुत कोष शुद्ध आमूलीय शब्दक संग्रह थिक । एकरा ग्रिअर्सन साहेबक पीजेन्ट लाइफ ऑफ बिहारक तर्ज पर पीजेंट लाइफ ऑफ मिथिला कहि सकैछ छी। ई 1800 ई.क ग्रामीण मिथिलाक मानू चित्रपट थिक । अत: आइ 2018 ई. मे ई इतिहासक समृद्ध स्रोत भऽ गेल अछि । संगहि एहिमे वर्तमानो मिथिलाक बहुत रास दुर्लभ झलक भेटत । संगहि एकरा मैथिलीक प्रथम शब्दकोष होयबाक गौरव प्राप्त छैक । खेद जे एतेक महत्वक अछैत ई एतेक दिन दुर्लभ रहि गेल ।

मन पड़ैत अछि, एक मुहलगू छात्र पिता जीकेँ पूछि देलकनि, शब्दक अर्थ एतेक संस्कृतमय किएक कऽ देल गेल ? उत्तर भेटलनि, आनो जानओ तँ; मैथिल तँ मैथिली शब्दक अर्थ स्वयं जनैत अछि । यथार्थ, ई जतेक घरमे बिकाएल ताहि सँ अधिक बाहर ।

कोष आ विद्योतन दुनूक बीच एक स्पष्ट अन्तर अछि । पहिलमे सर्वत्र शब्दक मानक स्वरूप आ वर्तनी भेटत । दोसरमे एके शब्द विभिन्न ठाम विभिन्न वर्तनीमे दोहराओल भेटत । से किएक ? ई प्रश्न एकर प्रूफे पढ़ैत काल हमरा मन मे उठल । पिता बुझा देलनि-जकरा-जकरा मुहें जेना जे सुनैत गेलहुँ से सभ तहिना लिखैत गेलहुँ । इएह थिक संचयक रीति । ठीके, कहि सकैत छी जे ई कोष नहि, तदर्थ संचित सामग्री थिक ।

कोष आ व्याकरण भाषाक दू अंग थिक । मैथिलीक व्याकरण लिखब यूरोपमे करीब 1898 सँ आरम्भ भेल । देशमे ओहि परम्पराक अनुवर्त्तक भेलाह सुनीति कुमार चटर्जी, सुभद्र झा, रामावतार यादव आदि । परन्तु कोष सभसँ पहिने

यैह आएल । प्रश्न उठैत अछि जे सर्वसाधन सम्पन्न ग्रिअर्सन साहेब कोष किएक नहि लिखलनि । उत्तर अंशतः ऊपर दए चुकल छी । व्याकरण टेबुल पर बैसि लिखि सकै छी, एहि प्रकारक कोष नहि ।

एहि कोषक पुनर्मुद्रणक अवसर पर मन पड़ैत अछि, आइसँ करीब सत्तरि वर्ष पूर्व भीषण युद्धोत्तर कालमे कोना-कोना एकर प्रथम मुद्रण भेल । 1948 ई. मे धातुपाठक छपाइ सम्पन्न होइतहि पिताजी उत्साह-वश अपना बलें कोष छपायब आरम्भ कएलनि । किछु अंश ज्योतिष प्रकाश प्रेस, काशीमे छपल कि आर्थिक कारणें रूकि गेल । एही बीच 1950 ई. मे हम पटना धएलहुँ तँ शेष अंश छपएबाक सौभाग्य हमरा भेटल । जहिना ई पुस्तक गाममे कोष लिखब सिखओलक तहिना एतए छपाएब आ प्रूफ देखब सेहो सिखाए देलक जे जीवन भरि काज दैत रहल । एहि अवसर पर मन पड़ैत अछि, जे 1983 ई. मे एही महावैयाकरणक मिथिलाभाषा विद्योतन तकरो द्वितीय संस्करणक फ्रूफ देखबाक (आ सम्पादन करबाक) सौभाग्य भेटल रहए । मिथिलाभाषा-शब्दकोषक एहि पुनर्मुद्रणक अवसर पर आनो बहुत बात मन पड़ैत अछि । एतए एतबे ।

अन्तमे एक बेर फेर आयुष्मान् शरदिन्दु जीकेँ धन्यवादक संग आशीर्वाद दैत छियनि जे सरस्वतीक आराधनाक संग लक्ष्मीक कृपा अरजैत रहथु ।

2/01/2018 – गोविन्द झा

भूमिकाविषयसूची

भूमिका

मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बनएबामे प्रवृत्त भेलापर मिथिलाभाषाकोषहुक अभाव देखि ओकरो निर्माणमे उत्साह कएल । किन्तु यादृश कोष हमर अभिप्रेत छल, तादृश नहि भय सकल । तथापि "निरस्तपादपे देशे एरण्डोपि द्रुमायते" एहि न्यायक पूर्ति अवश्य भेल ।

चिरकालेँ कोषक पूर्ति भेलापर छापाक चिन्ता भेल । स्वयं द्रव्याभावप्रयुक्त छपएबामे असमर्थ छलहुँ । अनुत्साहिता देखि कोनो लक्ष्मीपात्रक ओतए प्रस्तुत होएबाक साहस नहि होअए । ततःपर महोदारचरित मैथिलीसमुन्नतिक परम उत्साही दरभङ्गा-राजवंशोद्भव राघवपुरक बाबू साहेब श्री कृष्णनन्दन सिंहमहोदय स्मरणपथारूढ भेलाह ।

हिनक उदारता मैथिलगणसँ अविदित नहि । कोनो भाषाक उन्नति गौरवान्वित उत्कृष्ट अनेक ग्रन्थक बिना नहि भय सकैछ ई बिचारि उक्त बाबूसाहेब मैथिलीउन्नत्यर्थ मैथिलीमे उत्कृष्ट ग्रन्थनिर्माताकेँ पारितोषिक देबाक हेतु अढाय सय (२५०) टाका मैथिलीसाहित्यपरिषद् संस्थामे देल । ओ टाका मधुबनीमे प्रवर्तित मैथिलीसाहित्यपरिषदक अधिवेशनमध्य ओकर अध्यक्ष बाबू श्री चन्द्रधारी सिंह महोदयक हाथसँ मैथिलीग्रन्थोत्कर्षापकर्षविवेचनानिपुण महामहोपाध्याय श्री उमेशमिश्रप्रभृतिसँ सर्वग्रन्थोत्कृष्टतया निर्णीत मिथिलाभाषाविद्योतनग्रन्थक निर्माणक पारितोषिक आदरपूर्वक हमरा देल गेल ।

पुनः ततःपरो महामहोपाध्याय कर्मकाण्डोद्धारक महावैयाकरण पं० श्रीपरमेश्वरझाक निर्मित परमोत्कृष्ट मिथिलातत्वविमर्शनामक पुस्तकक प्रकाशनक उपलक्षमे उक्त बाबूसाहेब हुनक सम्बन्धिककाँ २५०) अढाए सए रुपैया पारितोषिक देल ।

हिनक पिता संस्कृतसाहित्यक पूर्ण विद्वान् बाबू श्रीहरिनन्दनसिंहमहोदय तथा पितामह बाबू श्रीयदुनन्दन सिंहमहोदय नितान्तकोमलमधुरभाषी ओ सदाचारसँ लेशतोऽपि अच्युत छलाह ।

उक्त महानुभाव बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयक ओतय उपस्थित भय एहि कोषक छापाक प्रसङ्ग निवेदन कयलापर तत्काले ओ अपन असीम कृपा देखओलन्हि; सोत्साह कहलैन्हि जे छापा अवश्य हो किन्तु कागत ओ अक्षर सुन्दर होएबाक चाही ।

हम उक्त महोदारचरित श्री बाबूसाहेबक सदैव कृतज्ञ रहब जनिक अनुपम कृपासँ ई कोष मुद्रित भेल । एहि प्रसङ्ग विशेष विवरण भूमिकाक अन्तभागमे द्रष्टव्य ।

मैथिलीक अनुरागी मैथिलगण किंवा मिथिलावास्तव्य बन्धुवर्ग तथा प्रवासी मैथिलसंघमहोदय लोकनिक ओतए ई निवेदन करैत अत्यन्त आनन्द होइछ जे मिथिलाभाषाकोष निर्मित भए प्रकाशित भए गेल जकर अद्यावधि अभाव छल । आशा जे ई विषय बूझि हुनका लोकनिक अन्तःकरणमे प्रसन्नता होएत तथा अतिचिरकालेँ गवेषणपूर्वकनिर्द्धारित हमर लेखप्रणालीक अनुमोदन अवश्य होयत । मैथिलीसाहित्यपरिषदक स्थापना तथा मैथिलीसाहित्यपत्रक प्रकाशनसँ आब विज्ञ व्यक्तिक लेखमे परिपाटीक भेदो अल्पे रहि गेल अछि ।

कोषमे त्रुटि

एहि कोषमे साधारणव्यवहारोपयुक्त यथोपलब्ध शब्द संगृहीत कयल गेल अछि। किन्तु बहुत शब्द छूटल अछि । सबारीक नाम हाथी घोड़ा बग्गी एक्का इत्यादि लिखल किन्तु ओकर साज (उपकरण) अलंकरणप्रभृतिक नाम अल्पे लिखल अछि । एवम् मिथिलादेशक शिल्पीक नाम कमार लोहार सोनार मल्लाह इत्यादि उल्लिखित अछि किन्तु ओहिसबहिक कार्यवाही सामग्रीमे कम्मे वस्तुक नाम पड़ल अछि इत्यादि त्रुटि हम मानैत छी । आशा जे उत्साही निविष्ट एक विद्वान किंवा अनेक विद्वान् मीलि अन्वेषणपूर्वक ओहि शब्द-सबहिक संग्रह कए प्रकाशित करताह जकर संग्रह हम नहि कए सकलहुँ अछि तथा प्रसिद्धो बहुत शब्द जे छूटि गेल अछि तकरो संग्रह करताह एवम् प्रमादवश अथवा विपरीत धारणावश अर्थनिर्देशमे जे अन्यथा भेल हो तकरो संशोधन कय कोषकेँ सुचारू बनओताह ।

हमरा कोष बनयबाक साहस करब उचित नहि छल हेतु जे हम आबालतः संस्कृतशास्त्रमात्रक व्यवसायमे छी, अतः अप्रसिद्ध वस्तुक नाम अल्पे जनैत छी । तखन अनकासँ बूझि-बूझि नामसंग्रह करब सेहो आइकाल्हि कठिन अछि कारण जे तादृश लोकक अभाव भेल जाइछ ।

पूर्व कालमे विद्वान्लोकनि शरयन्त्र लेनिहार छलाह[१] अर्थात् यावतो वस्तुक परिचेता ओ निखिलशिल्पवेत्ता, जाहि विषयक जे प्रश्न हो सभक समीचीन उत्तरदाता होइत छलाह, जनिक कथा मिथिलामे प्रसिद्ध अछि । यदि हुनका लोकनिक प्रवृत्ति मिथिलाभाषाक रक्षा दिस होइतैन्हि तँ सर्वांशें मिथिलाक शब्दपुञ्ज सुरक्षित रहि सकैत । पूर्वक एक विद्वान् ज्योतिरीश्वर ठाकुर वर्णनरत्नाकर नामेँ किछु शब्दसंग्रह करबो कयलैन्हि तँ अर्थनिर्देशक अभावसँ कोष कहबाक योग्य नहि । अधिकांश ओकर अर्थ संप्रति अज्ञेय भए गेल अछि । अस्तु, एमहर आबि नाना प्रकारेँ

मैथिलीशब्दक दुरवस्था भए गेलाक स्थितिपर कोष बनाओल गेल अछि से जेहन होयबाक योग्य तेहने भेल अछि । तस्मात् एहिमे उपजात त्रुटिक हम क्षमाप्रार्थी छी ।

एहि कोषमे बहुत प्रसिद्धो शब्द छूटि गेल अछि जे पूर्वहि कहि आएल छी । तकरा प्रमाणित करबाक हेतु नीचाँ किछु शब्द अकारादिक्रमहि देखबैत छी जे द्वितीय संस्करणमे इहो शब्दसभ तथा एतद्भिन्नो छूटल शब्दसभ यथासंभव सन्निवेशित करबाक उद्बोध हो ।

अतिकाल–अतिक्रान्त समय ।

अथरा–पैघ गहीँड़ मटकूर ।

अमेढ़ी–अमेढ़ब १ कड़ामक योजनार्थ मेहमे पैसाओल गोलाकार तृण २

अम्हारु–वह्निकणयुक्त तप्त छाउर ।

अलकतरा-पाथरक कोइलाक तेल ।

आमोद करब–क्रि० आनन्द क्रिया करब १ सुगन्ध-प्रसारण करब २ ।

उपजाहु–अधिक उपजाक (खेत) ।

कनेमने–अ० अत्यल्प ।

करीन छेकब–क्रि० पटएबाक रस्सामे करीन बान्हब ।

कुङ्कुमा–अबीरसँ भरल कोढ़िला वा लाह (दूरसँ अबीर फेकबाक हेतु) ।

केसर–किञ्जल्क ।

खुर्ची–कबाड़क डारिमे पैसएबाक कपाटाङ्ग ।

खुटबन–धोबिनिकेँ एवम् कुम्हैन प्रभृतिकेँ नूआ एवम् बासनप्रभृति अनबाक हेतु देय किछु मात्र अन्न ।

खोंछि–स्त्रीक डाँड़मे बद्ध वस्तु रखबाक वस्त्रप्रान्त ।

गढ़नि–गढ़ाइ, नखासीप्रभृति ।

गन्ध करब–क्रि० दुष्ट गन्धक प्रसारण ।

गरी–मनुष्यक झुण्ड ।

गुज्ज दए उठब–क्रि० आकस्मिक अति कोमल स्पर्शक अनुभवविषय होएब ।

गेल्ह–कौआक बच्चा ।

गोँज-गोँजा–संकीर्णतावश अयथावत् स्थित ।

घाँटो–स्त्रीपूज्य मृत्प्रतिमा-विशेष ।

घोंघाउज (जि)–निर्हेतुक अश्रव्य विवाद ।

छरपटि छोड़ाएब–क्रि० अशान्त करब ।

झर पड़ब – क्रि० कानमे जोरसँ अप्रिय शब्दक आपतन ।

टुस्सा
टूसा } –ठारिक अगिला पत्राङ्कुर ।

डकब–क्रि० कौआक प्रातःकालिक बाजब १ । उत्कट-गन्धप्रसारण २ ।

डारि–कबाड़क अङ्गविशेष ।

तीखर–तीक्ष्ण (आतपादि) ।

दँतब–ना० दाँतसँ युक्त होएब ।

पैँचाड़ (ड़ी)–पैँचक व्यवहार

बरोबर–धान्यविशेष ।

मचकी–आन्दोलनमञ्च ।

महमह करब–क्रि० अत्यन्त सौरभप्रकाश करब ।

लाभ–सभसँ नीच खेत १ सं० प्राप्ति २ ।

गुरुलघूच्चारणविवेक

संस्कृतमे ह्रस्ववर्ण लघु कहबैत अछि, तथा दीर्घवर्ण गुरु । एवम् संयोगसँ पूर्व ह्रस्वो गुरु भए जाइछ, उदाहरण, 'स्वगेहस्थ' एहिमे प्रथम स्वर ह्रस्व लघु, द्वितीय दीर्घ गुरु, तृतीय ह्रस्व गुरु, चारिम ह्रस्व लघु । तस्मात् ओ सबटा छओमात्राक भेल ।

इएह रीति मैथिलीभाषहुमे अछि । विशेष ई जे मिथिला-भाषामे निर्विभक्तिक वा सविभक्तिक सकल पदमे एकोटा गुरूच्चारण अवश्य रहय ई नियम अछि । तें जाहि द्व्यक्षर नाममे दुहू ह्रस्वे अछि ताहिमे उपान्त्य अर्थात् अन्त्यसँ पूर्व ह्रस्वो गुरूच्चारण भए जाइछ, यथा 'मधु नहि अछि' । एवं ह्वस्वद्वयान्त दीर्घादिवर्णत्रिक 'भाबहु, भाभठ' इत्यादिअहुमे उपान्त्य गुरूच्चारण होइछ । 'मधुक आवश्यकता' एहिठाम 'मधुक' एहि सविभक्तिक पदमे उकार गुरूच्चारण, मकाराकार लघूच्चारण । एवम् एकाक्षर पदमे तथा सँ विभक्तिमे अकार गुरूच्चारण, यथा 'त तँ ह हँ रामसँ' इत्यादि । अत: जे लोकनि 'कय' 'भय' क स्थान'क' 'भ'लिखैत छथि हुनका मतेँ 'क' 'भ' इत्यादि एकाक्षर पद भेल, तें 'जा क देखू, पण्डित भ जाउ', इत्यादिमे 'क' 'भ' इत्यादि गुरूच्चारण भेल । अपर विशेष ई जे लौकिक संस्कृतमे एकारादि सन्ध्यक्षर दीर्घे अछि, ह्रस्व नहि, किन्तु मिथिलाभाषामे ह्रस्वो अछि, तस्मात् ह्रस्वभूत ए ऐ ओ औ लघूच्चारण होइछ, यथा 'देखनिहार' 'ऐंठलाह' 'पओने' 'बौंसनिहार' इत्यादिमे । कतय कतय सन्ध्यक्षरकें ह्रस्वता होइछ से किछु कहि चुकल छी, अन्यान्य भाषाविद्योतनसँ बोद्धव्य । एवम् कोन कोन शब्दमे लघुकें गुरुता सेहो सविस्तार भाषाविद्योतनमे प्रतिपादित अछि । एक विषय ई जे अकारेतर स्वर कें गुरुता भेलापर दीर्घो लिखल जाय तँ क्षति नहि, यथा 'बहीनि बहीर थीक'। ह्रस्वोपान्त्यक लिखी तँ से उचिते । तस्मात् 'बहिनि बहीनि' इत्यादि दुहू लेख संगत । केवल ह्रस्व अकारकें गुरुता भेलहुपर ह्रस्वे लिखल जाय, दीर्घ नहि ।

ई विचार जे गुरूच्चारणीभूत ह्रस्व अकारादिक तर बिन्दु रूप चिह्न देल जाय, एवम् लघुभूत एकारादिलिपिक नीचों बिन्दु चिन्ह देल जाय से उत्तम यथा; 'अत्ता अद्धी मधु मधुक पुतहु भाबहु एकठा ऐंठलाह पओना चौकिआएब जँ त ह हँ' इत्यादि ।

एऐओऔ सामान्यत: दीर्घताक कारण गुरूच्चारण थीक किन्तु स्वरादिप्रत्ययसँ पूर्व प्रकृतिक सकल स्वर ह्रस्व भय जाइत अछि । अत: ओहिमे एकारादिओ ह्रस्वताप्रयुक्त लघूच्चारण थीक; यथा 'देखनाइ देखनुक देखताह ऐंठलाह पओलैन्हि बौंसनिहार' इत्यादिमे ।

एकर अपवाद – एकस्वर प्रत्यय तथा अत अब अल एहिसँ पूर्व ह्रस्बता नहि, तेँ लघुत्वाभाव – यथा देख देखि देखी देखत घैरब पौरल । तथा का बा मा गर इत्यादि कतोक व्यञ्जनादिओ प्रत्ययसँ पूर्व ह्रस्वता होएबाक कारणेँ एकारप्रभृति लघु होइछ, यथा 'मैलका सौँसका गेनबा सोनमा भोरगर' ।

एवम् समासमे पूर्वक सकल स्वर ह्रस्व भय जयबाक कारण एकारादि लघूच्चारण होइछ, यथा 'एकबट्टी मैलछन गोअरगमा रौदमुहाँ' ।

एवअपिस्थानीय 'अहि' 'अहु'क योजनामे तदन्त वा तन्मध्यक एके पद मन्तव्य, तस्मात् 'घरहि घरहुँ घरहिक' इत्यादिमे उपान्त्ये गुरूच्चारण ।

मिथिलाभाषा सिखनिहारकाँ गुरुलघुभावज्ञानमे विशेष यत्न देबाक चाही अन्यथा लेखशुद्धि भेलहुपर बजबामे अपाटव प्रकाश होयत । प्रत्येक भाषाक ध्वनि विभिन्न विलक्षण होइछ । तस्मात् परिशुद्ध बजनिहार केन्द्रस्थ व्यक्ति-सबहिसँ किछुओ दिन संलाप करब आवश्यक ।

लिङ्गनिर्णय

मैथिलीभाषामे शब्दक लौकिके पुंस्त्वादि लिङ्गक अर्थ अछि, शास्त्रीय नहि । सेहो प्राणीक बोधक जे शब्द अछि तकरे टा । अप्राणिबोधक बाट घाट इत्यादि शब्द लिङ्गबोधक नहि होइत अछि । तेँ ओकरा अलिङ्ग कहबाक चाही । अलिङ्गक सङ्केत हम एहि कारणें नहि कयल अछि जे ओ अनुगत रूपेँ स्वत: बुझबाक योग्य होएत ।

लिङ्गबोधक शब्द तीन प्रकारक अछि, पुंल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग उभयलिङ्ग । क्रमश: उदाहरण, पुंल्लिङ्ग 'बाप भाय जमाय' इत्यादि, स्त्रीलिङ्ग 'माय बहीनि सतधी' आदि, उभयलिङ्ग 'घोडा भेड़ा बाभन' आदि । उभयलिङ्गक आकारान्त शब्द जँ स्त्रीक बोधक हेतु बाजल जाय तँ ओकरासँ स्त्रीबोधक ईकार आबय, तस्मात् घोड़ी इत्यादि रूप, एवम् बाभन आदिसँ ह्रस्व इकार अबैत अछि, यथा बाभनि कुमारि । इत्यादि व्याकरणसँ बुझबाक योग्य नाना प्रत्यय होइछ, तेँ हम कोषमे प्राय: दुहू लिङ्गक रूप लिखल अछि, बहुतमे छुटिओ गेल होएत ।

एहि ठाम इहो भय सकैत अछि जे स्वतन्त्रो घोडा घोड़ी आदि भिन्ने भिन्न मानल जाय, प्रथम पुंल्लिङ्ग, द्वितीय स्त्रीलिङ्ग, अतएव कोनो वैयाकरणक मत अछि जे अर्थभेदसँ शब्द भिन्न होइत अछि ।

संस्कृतमे शास्त्रीयो पुंस्त्वादि लिङ्ग शब्दक अर्थ होइत अछि । तथा हिन्दीअहुमे । किन्तु मैथिलीमे लौकिकमात्रे, से कहिए आएल छी ।

आब शास्त्रीय लिङ्ग ओ लौकिक लिङ्गक परिचय लिखैत छी । शास्त्रीय पुंस्त्वादि लिङ्ग ओ थीक जे प्रवृत्तिनिवृत्तिमे कोनो उपकार नहि करैत अछि, केवल शब्दस्वरूपविशेषनिष्पादकमात्र होइछ । यथा माला शब्दक शास्त्रीय स्त्रीत्व लिङ्ग अर्थ थीक, ओकर ज्ञान हो वा नहि हो प्रवृत्ति तुल्ये, 'मालाम् आनय' 'माला लाओ' इत्यादिसँ होइत अछि, केवल 'माला शोभना' 'माला अच्छी है' इत्यादि शब्दविशेषसम्पादने फल होइछ । यदि मालाशब्द पुंल्लिङ्ग रहैत तँ 'माला शोभन:, माला अच्छा है' इत्यादि शुद्ध रूप होइत, कारण जे विशेषणक स्वरूप विशेष्यलिङ्गाधीने रहैत अछि ।

संकेतविवरण

उ० एहि संकेतक अर्थ उभयलिङ्ग (पुंस्त्वस्त्रीत्वोभयलिङ्गबोधक) जानब । 'घोड़ा' 'बाभन' इत्यादि शब्द उभयलिङ्ग थीक तेँ जखन स्त्रीमे प्रयुक्त होइत अछि तखन ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय ईकार इकार आदि आबि जाइत अछि, यथा 'घोड़ी' 'बाभनि' इत्यादि । यदि 'बाभन' 'बाभनि' इत्यादि सिद्धवत् पुंलिङ्ग स्त्रीलिङ्ग भिन्ने-भिन्न मानल जाय तँ कोनो विशेष क्षति नहि छल किन्तु से मानने बुझबामे असौकर्य । हमरा तँ स्त्रीमे बाभन आदिसँ इकार, आकोरान्तसँ ईकार आबए एहि सामान्य नियमसँ 'बाभनि' 'कुमारि' 'सुकुमारि' 'घोड़ी' 'भेँड़ी' 'बेटी' इत्यादि अनुगतरूपेँ बुझल गेल, ई लाघव अछि । एहि हेतु स्त्रीप्रत्ययक अनुशासन अछि । तदनुसार ओकर प्रकृतिभागहिक अर्थ लिङ्ग मानल अछि ।

अलि० संकेतविवरण

अलि० एहि संकेतक अर्थ अलिङ्ग (लिङ्गाबोधक) थीक । जाहि प्राणीकवाचकसँ पुरुष ओ स्त्री दुहूक बोध हो से अलिङ्ग भेल, यथा 'लोक' 'पठरू' 'बच्चा' 'नेना' प्रभृति । तथा जाहि प्राणीक सन्तानोत्पादक इन्द्रिय मनुष्यदृष्टिगोचर योग्य नहि अछि, यथा 'मोस' 'गोहि' 'माछ' इत्यादि, सेहो सभ अलिङ्ग थीक । बहुत शब्दमे विशेष ध्यान नहि देबाक कारण अलिङ्ग लिखब छूटि गेल अछि ।

क्रि० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ पर 'क्रि०' ई संकेत लिखल अछि तकरा क्रिया-बोधक नाम जानब, अर्थात् क्रियाक बोधक अबप्रत्ययान्त कृदन्त बुझब, यथा 'छकब' 'ताकब' 'बिकाएब' । जेना संस्कृतमे दशन श्रवण इत्यादि भावप्रत्ययान्त कृदन्त अछि तेना मैथिलीमे देखब सुनब इत्यादि थीक । उदाहरण, 'पुस्तक देखब आवश्यक', 'गीत सुनब आनन्ददायक' ।

'देखब' आदिसँ पर विभक्ति श्रूयमाण रहलासँ 'देखबा' 'सुनबा' इत्यादि वैकल्पिक रूप भय जाइत अछि, यथा, 'देखबासँ' वा 'देखबसँ' इत्यादि भाषाविद्योतनमे स्पष्ट अछि । तस्मात् 'देखबासँ' इत्यादि प्रयोग देखि ह्रस्वान्त 'देखब' 'सुनब' शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे करब । एवम् 'बिकाएब' प्रभृतिशब्दक रूप 'बिकएबाक' 'बिकएबासँ' इत्यादि ह्रस्वमध्यक दीर्घान्त भय जाइछ । अत: 'बिकएबाक' इत्यादि देखि 'बिकाएब' शब्दक अन्वेषण कर्त्तव्य ।

अबप्रत्ययान्त तीन प्रकारक अछि, प्रथम 'छक्' आदि धातु प्रकृतिक, द्वितीय 'तक्' आदि प्रकृतिक, तृतीय बिकादि प्रकृतिक । प्रथममे अबप्रत्यय अयलासँ कोनो विकार (लोप आगम अदेश) नहि होइत अछि । यथा 'छक्+अथ=छकब', 'ठक्+अब=ठकब' । द्वितीयमे अब अएलापर धातुक स्वर दीर्घ भय जाइत अछि,

यथा 'तक्+अब=ताकब', 'जग्+अब=जागब' । तृतीयमे 'अब' प्रत्ययक स्वरूप 'अयब' वा 'आएब' भय जाइत अछि, यथा 'बिक्+अब=बिकायब' वा 'बिकाएब' । एतद्बोधार्थ कोषमे प्राय: प्रकृतिप्रत्यय-विभाग 'छक्+अब' 'तक्+अब' 'बिक्+अब' एवं रूपेँ कयल अछि जे व्याकरणमे ओकर साधनप्रकार भेटि जाय ।

तहिना 'कहाँ' 'कतय' 'कोमहर' इत्यादि शब्द प्रथमासप्तमीभिन्न विभक्तिक लग 'कोन देश' एतन्मात्रबोधक भय जाइत अछि, अधिकरण अर्थक त्याग कए दैत अछि, ओहि सबहिकेँ अधिकरणत्वबोधकत्वावस्थहिमे अव्ययत्व थीक । तस्मात् 'कहाँसँ' इत्यादि उपपन्न भेल ।

ई विषय केवल अधिकरणार्थक अव्ययमे अछि, से अव्ययहाँप्रत्ययान्त 'कहाँ' 'जहाँ' 'तहाँ' तयप्रत्ययान्त 'कतय' 'जतय' 'ततय' 'एतए' 'ओतय' महरप्रत्ययान्त 'कोमहर' 'जेमहर' 'तेमहर' 'एमहर' 'ओमहर' प्राय: एतबे होयत ।

एतद्भिन्न 'आइकाल्हिमे' इहो शब्द संप्रति बाजल जाइत अछि परन्तु हमरा विचारेँ ओ परिशुद्ध नहि थीक । यद्वत् हिन्दीमे एमहर आबि 'उनमेसे' केओ लिखलक, से प्रचलित भय गेल । वस्तुत: 'उनमे' इएह होयबाक चाही, अति प्राचीन लेख तादृशे उपलब्ध होएत, 'अमीषु ब्राह्मण:श्रेष्ठ:' एकर अपभ्रंश तादृशे उचित । एक शब्दसँ दू विभक्ति असंगत । तद्वत् 'आइकाल्हि' शब्दसँपर सप्तमीक प्रयोग वैकल्पिक चलल अछि । यदि 'आइकाल्हिमे' इहो शुद्धे मानल जाय तँ ओकरासँ पर "सप्तमीक लोप वैकल्पिक" एहन एक विशेष अनुशासन मानल जाए ।

अव्ययमे कोनो कोनो पदान्तरानपेक्षो प्रयुक्त होइत अछि यथा हँ हाँ इत्यादि ।

पुं० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ पुं० ई संकेत देल अछि तकरा पुंलिङ्गमात्रबोधक जानब । पुंस्त्व की थीक से लिङ्गविचारमे कहि चुकल छी । जे शब्द प्राणिबोधक भय केवल पुंस्त्व लिङ्गक बोध करबैत अछि, यथा बाप भाय जमाय छागर, ताहि शब्दसँ आगाँ ई संकेत देल अछि ।

यद्यपि मैथिलीमे पुंस्त्वलिङ्गप्रयुक्त कोनो विशेष कार्य नहि होइत अछि तथापि पुरुषक बोध करबैत अछि । तथा पुंस्त्वमात्रलिङ्गज्ञानसँ स्त्रीबोधकत्वाभावक निर्णय सन्ताँ तद्विशेषणमे स्त्रीत्वप्रयुक्त प्रत्यय नहि से बुझल गेल । तेँ 'छोट छागर' एहने प्रयोग भेल 'छोटि छागर' एहन नहि । गुण-बोधककेँ प्राय: विशेष्यलिङ्गप्रयुक्ते कार्य से कहि आयल छी ।

स्त्री० संकेतविवरण

जाहिसँ आगाँ 'स्त्री०' ई संकेत देल अछि तकरा स्त्रीलिङ्गमात्रबोधक जानब । स्त्रीत्वलिङ्गक परिचय लिङ्गविचारमे कहि आयल छी । माय बहीनि पुतहु इत्यादि

केवल स्त्रीबोधक थीक, ओकर गुण विशेषवाचकमे स्त्रीत्वप्रयुक्त रूपविशेष होइत अछि, यथा 'हमर माय बड़ बूढ़ि छथि' इत्याकारक प्रयोग भेल, 'बूढ़ छथि' इत्याकारक नहि । 'बड़' शब्द अलिङ्ग थीक तेँ ओकरासँ स्त्रीप्रत्यय नहि भेल । बड़ी राति, बड़ी खन, बड़ी काल, इत्यादिस्थलमे 'बड़ी शब्द दोसरे थीक, सेहो अलिङ्गे थीक । हिन्दीवत् बड़शब्दसिद्ध स्त्रीलिङ्ग नहि । अतः खनकालादि-विशेषणो होइछ । मैथिलीमे एहि शब्दक प्रयोग प्रायः कालविशेषणतामे होइछ, जेना 'कती काल' 'कती राति' इत्यादिमे 'कती' शब्द ।

शास्त्रीयलिङ्ग कोन वस्तु थीक एहि प्रसङ्ग अनेक मत अछि । वाक्यपदीयनामक भर्तृहरिक ग्रन्थमे छओ सात मत कहल अछि । ओकर प्रतिपादन विस्तारक भयसँ तथा विशेष उपकारक अभाव जानि नहि कयल । मोटा-मोटी ई बुझबाक चाही जे शब्दवाच्य कोनो विलक्षण पुंस्त्वादि शास्त्रैकसमधिगम्य शब्दमे वा अर्थमे रहनिहार अछि, यत्प्रयुक्त रूपमे वैलक्षण्य होइछ ।

आब लौकिक लिङ्गक परिचय दैत छी । प्राणी जाहि अवयवसं पुरुष वा स्त्री कहबैत अछि तदवयवशालित्वे पुंस्त्व ओ स्त्रीत्व थीक । अतः जाहि प्राणीमे ओ अवयव उपलब्ध नहि होइछ ताहि प्राणीक बोधक शब्द अलिङ्ग रहैत अछि । यथा चूटी मोस माछ काछु । यद्यपि पक्षीमे नर मादाक चिह्न पक्ष-विशेषादि होइछ तथापि जे अवयव सन्तानोत्पादक होइछ तदवयवयुक्तत्व विवक्षित अछि । तस्मात् मनुष्यप्रत्यक्षयोग्यमेढ़ रूप अयवशालित्व पुंस्त्व भेल, तथा तादृशयोनिशालित्व स्त्रीत्व । क्षुद्रजन्तु सपनौर मूस लीख इत्यादि शब्द वाच्य जन्तुमे तथा माछ काछु गोहि घरिआर आदिमे दोषवारणार्थ मनुष्य प्रत्यक्ष योग्यत्व विशेषण देल अछि। लक्षणमे मनुष्यपदक उपादान नहि कयने क्षुद्र जन्तुप्रभृतिक स्वकीय प्रत्यक्षयोग्यता स्वावयवमे रहबाक कारण अतिव्याप्ति दोष रहिए जाइत तद्वारणार्थ मनुष्य पद देल गेल अछि । एतादृशे पुंस्त्वादिलिङ्ग लोकविदित अछि, तेँ लौकिक भेल । एतद्युक्त शब्दक रूपमे वैलक्षण्य ओ व्यवहारहुमे यथा - बाभन अयलाह, बाभनि अयलीह, एवंप्रकारक पुरुष ओ स्त्रीमे भिन्न-भिन्न रूप, तथा प्रथमसँ पुरुषक बोध, दोसरसँ स्त्रीव्यक्तिक । अपवाद-इआप्रत्ययान्त, भनसिआ जिरतिआ तिरहुतिआ इत्यादि तथा ऐआप्रत्ययान्त, बनैआ गमैआ इत्यादि अलिङ्ग थीक । एवम् कोन कतोक इत्यादि । एवंविध प्राणीमे प्रयोगार्ह शब्दमे अलिङ्ग लिखब आवश्यक छल किन्तु ओहि दिस विशेष ध्यान नहि देबाक कारण कोषमे त्रुटि रहल, तकर आब पूर्त्ति द्वितीयावृत्तिअहिमे होएबाक संभव ।

अ० संकेत विवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ अ० ई संकेत देल अछि तकरा अव्यय बुझब । अव्यय ओ थीक जाहिसँ आगाँ कोनो विभक्तिक श्रवण नहि हो । यथा नहू नहू (शमैः शनैः)।

यद्यपि कुत्र इत्यादिक स्थानापन्न कहाँ इत्यादि अव्ययसँ पर द्वितीया पञ्चमी तथा षष्ठी श्रूयमाण रहैत अछि यथा, कहाँकेँ बिदा भेलहुँ, कहाँसँ अयलहुँ कहाँक वासी थिकहुँ । एवम् कुत्र इत्याद्यर्थक तयप्रत्ययान्त 'कतय जतय' इत्यादि, एहूसँ उक्त तीन विभक्ति आगाँ रहैछ; तथापि एहि शब्दसबहिमे अव्ययत्त्व अवश्य मानबाक चाही, अन्यथा 'कहाँमे' 'कतयमे' इत्यादिओ प्रयोग होअय लागत । परन्तु तखन 'कहाँसँ' 'कतयसँ' इत्यादिक उपपत्ति कोना ? एहि शङ्काक समाधान ई जे जेना संस्कृतमे दिवाशब्द 'दिनमे' एतदर्थक अधिकरणप्रधा थीक से 'दिवाकर' एहिठाम दिनमात्र बोधक भय कतोक अबप्रत्ययान्त 'नुकाएब' 'छिरिआएब' इत्यादि दू धातु सँ बनैत अछि, श्रूयमाणधातुसं ओ श्रूयमाणधातुप्रकृतिक अबप्रत्ययान्त धातुसँ, यथा 'नुक्+अब-नुकाएब, 'नुकब्+अब-नुकाएब' एवम् 'छिरि+अब–छिरिआएब' 'छिरि अब्+अब–छिरिआएब' । प्रथमक तिङन्तरूप 'छिरिआइत अछि' 'छिरिआएत' इत्यादि । द्वितीयक 'छिरिअबैत अछि' 'छिरिआओत' 'छिरिअओलक' इत्यादि । एहिमे प्रथम अकर्मक, दोसर सकर्मक जानब । किन्तु कोषमे प्रायः एकेटा अर्थ लिखल अछि, कचित् सकर्मक, क्वचित् अकर्मक ।

यद्यपि 'छकब' इत्यादिशब्द व्याकरणहिसँ बुझबायोग्य होयत तथापि धात्वर्थज्ञानार्थ कोषहुमे देल ।

ना० संकेतविवरण

जाहि शब्दसँ आगाँ ना० ई संकेत देल अछि ओकरा नामाधातु-प्रकृतिक अबप्रत्ययान्त जानब, यथा 'लठिआएब'–लाठीसँ मारब, 'टलिआएब'–टाल लगाएब । एकर तिङन्त रूप 'लठिअबैत अछि' 'लठिआओत' इत्यादि । ई सभ नामसँ जेँ बनैत अछि तेँ नामधातु कहबैत अछि ।

सं० हि० वि० संकेताविवरण

सं०, हि०, वि०, ईहो बाला क्रमशः संस्कृत, हिन्दी तथा विदेशी बुझब ।

वानरादिशब्दो वर्गीयबकारादिश्रेणीमे

मिथिलाभाषामे अन्तःस्था वकार नहि अछि, किन्तु जे संस्कृत अनुरूप गृहीत अछि 'वानर' आदि, ताहिमे संस्कृतानुरूपे वकार उचित । तस्मत् अनुरूपमे अन्तस्थे वकार कोषमे उल्लिखित कयल अछि । किन्तु अन्तस्थवकारबाला थोड़ शब्द अछि, तथा मैथिलीमे 'ब' 'व'क उच्चारणमे प्रायः भेद नहि अछि, अतः उभयक ऐक्य मानि अन्तस्थवकारादिको वर्गीयबकारादिशब्दश्रेणीमे लिखल अछि । किन्तु 'व' 'ब' यथोचिते लिखल अछि ।

व्याकरणसिद्ध अल्पे कोषमे

हम मिथिलाभाषाविद्योतननामक मैथिलीव्याकरण बनाओल, ओकर अङ्गभूत धातुपाठखण्डमे लगभग १२०० धातु पठित अछि, ओहिसँ प्राय: ४०००० कृदन्त ओ तद्धितान्त नाम सिद्ध होइत अछि; से सभ एहि कोषमे नहि देल अछि । हेतु जे ओहिसबहिक अवगम उक्त व्याकरणहुसँ भय सकैत अछि । तखन कोषकेँ अतिविस्तृत बनाएब व्यर्थ तथा अधिक प्रयत्नसाध्य, एवम् ओकर प्रकाशनो बहुव्ययसाध्य होइत । व्याकरणक प्रयोजनो तँ इएह थीक जे अल्पप्रयत्नेँ महान्सँ महान् शब्दपुञ्ज अवगत भय जाय । तथापि धातुक अर्थ बुझबाक हेतु उपदिष्ट धातु सबहिक केवल अबप्रत्ययान्त 'छकब', 'ताकब', 'बिकायब' इत्यादि शब्द एहिमे देल अछि ।

व्याकरणसँ ओतेक नाम कोना बहराइत अछि तकर दिग्दर्शन आब करबैत छी ।

एक 'देख' धातुसं ३० गोट कृदन्त रूप बनैत अछि । कारण जे धातुमात्रसँ प्रेरणामे अब्प्रत्यय अबैत अछि; तथा ओहि अब्प्रत्ययान्तसँ पुन: द्वितीय प्रेरणामे 'अब्' प्रत्यय संस्कृत णिच्प्रत्ययस्थानीय, अबैछ; एवंप्रकारेँ एक धातुसँ तीन धातु सिद्ध होइछ, यथा, 'देख्' 'देखब्', 'देखबब्' जकर तिङन्त रूप क्रमश: 'देखैत अछि', 'देखबैत अछि', 'देखबबैत अछि' इत्यादि होइत अछि । ओ धातुमात्रसँ दशविध कृत्प्रत्यय, 'अनिहार' आदि, अबैत अछि; तस्मात् दशक त्रिगुण तीस रूप, एक 'देख्' धातुक होयत । तद्भिन्न नामधातुक 'आँखिअओनिहार' इत्यादि कृदन्त रूप, तथा तद्धितान्त सेहो संभवत: तीन चारि हजार रूप हो । सर्वैकत्वेँ ४०००० वा तदधिके शब्द व्याकरणसिद्ध होएत । ताहिसँ प्राय: डेढ़े हजार व्याकरणसाधित शब्दक समावेश एहि कोषमे अछि । आब 'अनिहार' प्रभृति दश गोट कृत्प्रत्यय देखू :-

अनिहार	देखिनिहार	देखओनिहार	देखबओनिहार
अल	देखल	देखाओल	देखबाओल
अब	देखब	देखाएब	देखबाएब
अनाइ	देखनाइ	देखओनाइ	देखबओनाइ
ऐत	देखैत	देखबैत	देखबबैत
अने	देखने	देखओने	देखबओने
अना	देखना	देखओना	देखबओना
इ	देखि	देखाए	देखबाए
अय	देखय	देखबय	देखबाबय
ऐक	देखैक	देखबैक	देखबबैक

यद्यपि एहिमे अल ऐक प्रत्ययान्त तिङन्त थीक, तथापि कृदन्तो मन्तव्य,

अन्यथा 'पुस्तक देखब आवश्यक' 'देखल अछि', 'देखैक पड़त' इत्यादि प्रयोगक अनुपपत्ति होयत, ई विषय व्याकरणमे स्पष्ट अछि । एहि तीसहुसँ अतिरिक्त वैकल्पिक रूप सभ, यथा 'देखए' इत्यादि, तथा 'औबलि' प्रत्ययान्त 'देखौबलि' ।

देशभाषामे एक अर्थक एके शब्द, पर्याय नहि

देशभाषानिर्माणमे लाघवो एक कारण छल । अतएव घटादिबोधक 'घैल' इत्यादि एकके शब्द मैथिलीमे राखल गेल, संस्कृतवत् अनेक नहि । 'कलसधारी' 'कलसस्थापन', 'घटस्थापन' इत्यादि अनुरूपसंकृते थीक । एहिसँ इहो स्पष्ट होइछ जे जूता, ईटा इत्यादि शुद्ध मैथिली नहि थीक; कारण जे तद्बोधक पनही पजेबा इत्यादि मैथिली शब्द राखल अछि । यद्यपि जूता मैथिलीमे चिरप्रसिद्ध अछि तथा व्याकरणानुसार लठिआएब इत्यादिवत् जुतिआएब इत्यादिओ बनि चुकल अछि, तथापि ओ मैथिली भाषा नहि थीक, किन्तु हिन्दी तथा हिन्दीभव । यदि चिरप्रसिद्धत्वमात्रसँ शुद्ध मिथिलाभाषा मानल जाय तँ हजूर इत्यादिओ मैथिली कहाय सकत ।

बूड़ि, बुड़िबक, बकलेल, ढहलेल, बुड़िभतन इत्यादि जे समानार्थक जेकाँ बुझल जाइत अछि सेहो सभ किछु-किछु भेदापन्ने अर्थकेँ बुझबैत अछि, अत: पर्यायवाची नहि थीक । 'बूड़ि' भेल सामान्य अज्ञ; 'बुड़िबक' भेल बकसन बूड़ि अर्थात् उपस्थित विपत्तिकेँ अनुमानसँ शीघ्र नहि बुझनिहार । काकादिपक्षी दूरहुसँ हाथ उठओलापर शीघ्र आपत्तिक अनुमान कए उड़ि जाइत अछि, बक बेचारा अनभिज्ञ बैसले रहैत अछि, मनुष्यादि अति निकट अयलापर उड़ैत अछि । अतएव सरनरबाला बकमाराकेँ बक मारब सुकर होइत छैक । एवं 'बकलेल' ओ थीक जकरा नीक जेकाँ धोतिओ पहिरबाक ढङ्ग नहि । एहि रीतसँ आनो-आनो भिन्नार्थके थीक से सूक्ष्मदृष्टिसँ विचार कयलापर बुझबाक योग्य भए जाएत । एवम् उपरसँ नीचाँ आघातबोधक अनेक धातु अछि यथा, 'हूरब' 'थूरब' 'थकुचब' 'चूरब' 'कूटब' 'ठोकब' 'तामब' इत्यादि । ओहो सब भिन्ने-भिन्न आघातविशेषक्रियाबोधक थीक । यथा-'हूरब' थीक स्तम्भादिक जड़िक माटिपर ओकर स्थैर्यार्थ मुसलादिसँ आघात । 'थूरब' थीक आघातसँ अनेक खण्ड नहि भेनिहार सर्पमुखदन्त-धोवनकाष्ठमुखादिपर यष्ट्यादिक अग्रभागसँ आघात । एहि रीति आनो सभ विभिन्नार्थके थीक ।

'ड़' 'र'-उभयवर्णयुतशब्द विचार

उत्तमकल्प-जाहि शब्दमे स्वरसँ आगाँ 'ड़' 'र' उभय वर्ण अछि, ताहिमे प्रथम 'ड़' ततःपर 'र' चाही, से हमरा ठीक लगैत अछि । हम एहि कोषमे लिखबाक परिपाटिओ ओएह राखल अछि । यथा, 'कड़रा' 'खड़रा' 'गड़र' 'घड़र' 'पाँड़रि' एहि सबहिक स्थानमे 'करड़ा' इत्यादि नहि लिखल अछि । तादृश शब्दक

औचित्यसाधक युक्ति प्रथम ई जे अनेक शब्दमे तादृश क्रम सयुक्तिक अछि; यथा, 'पटोल'क अपभ्रंश 'पड़ोर' थीक, मैथिलीमे टकारक स्थान ड़कार बहुधा दृष्ट अछि, यथा 'वीटी-बीड़ी', 'घटी-घड़ी', 'घोटक-घोड़ा', 'मोटक-मोड़ा'। एवम् संस्कृतशब्दक लकारक स्थानमे रेफ सेहो बहुत शब्दमे दृष्ट होइछ; यथा, 'हल-हर', 'गल-गर', 'फाल-फार', 'गाली-गारि', 'श्याल-सार'। तस्मात् 'पटोल' शब्दक अपभ्रंश 'पड़ोर' होयबाक चाही, 'परोड़' नहि। एवम् मण्डलशब्दक अभठ 'मड़रा' शब्द उचित, 'मरड़ा' नहि; कारण जे लकारकें रेफ तथा संयुक्तणकारक लोप बहुधा होइछ, यथा 'मण्ड-माँड़' 'दण्ड-डाँड़' 'शुण्डा-सूँढ़', 'मुण्ड-मूड़'। तथा 'पाटला' शब्दक अभठ उक्त प्रकारें 'पाँड़रि' शब्दे उचित। एवंप्रकारक अनेक दृष्टान्तसँ देशीशब्दहुमे तदनुसारे स्थिति मन्तव्य। दोसर हेतु जे 'कड़रा' 'करड़ा', 'कोड़रा' 'कोड़ा' इत्यादि द्विविध शब्दमे पहिल शब्दक उच्चारण मुखसुखावह अछि; तम्मात् 'कड़रा' इत्यादि देशी शब्द मुखसुखोच्चार्ये राखल गेल होएत, तें सन्देहदशामे तादृशे रखबाक चाही – ई उत्तम कल्प।

मध्यम कल्प–पूर्वोक्त विषयमे मध्यम कल्प ई जे संस्कृतभव 'पड़ोर' इत्यादिमे पूर्वोक्त व्यवस्था रहओ, तथा जाहि एकपदक सार्थक पूर्वखण्डमे ड़कार निर्णीत अछि तथा उत्तरखण्डमे रेफ, यथा 'भँड़-हर', ताहूमे औचित्यत् पूर्वोक्त क्रम मन्तव्य। परन्तु जाहिमे एक पदक पूर्वखण्डमे रेफ उत्तरखण्डमे ड़कारे निर्णीत अछि यथा 'मुरबड़', ताहिमे तदनुसारे मन्तव्य होएत। कथ्य जे प्रमाण-सिद्ध 'ड़' 'र' बालामे तदनुकूले क्रम आवश्यक। किन्तु देशीशब्द जाहिमे क्रम प्रमाणित नहि अछि, यथा 'खड़रा' आदि, ताहिमे विपर्यस्तो बेजाए नहि; यथा 'खरड़ा' इत्यादि। तें देशीशब्द दुहू प्रकारक राखल जाए–ई मध्यम कल्प। परन्तु स्वरव्यवहित दू 'ड़' किंवा दू 'र' सर्वथा हेय, यथा 'खड़ड़ा' 'खररा'। एहि मध्यम कल्पमे कोषोक्त 'खड़रा' इत्यादिक वैकल्पिक रूप 'खरड़ा' इत्यादि बोद्धव्य।

'मघोन'शब्दादिविचार

किञ्चिन्मेघयुत समयसदृश समयक तात्पर्यें अनेक शब्द उपस्थित होइछ – 'मेघोन' 'मेघओन' 'मेघाओन' 'मेघौन', एहिमे उत्तम कल्प जे 'ललोन' शब्दसादृश्यात् 'मेघोन' मात्र राखल जाए। मध्यम कल्प जे आदितः तीन गोट राखल जाए, केवल अन्तिम संस्कृतविरुद्ध औकारक प्रवेशसँ त्याज्य। एवम् 'जड़ोन' 'जड़ओन' 'जड़ाओन' 'जड़ौन' इत्यादिअहुमे। तथा 'अमताइनि' 'अमतानि' 'अमतैनि' इत्यादि त्रिविध रूपमध्य प्रथममात्र किंवा आदितः उभय ग्राह्य, अन्तिम पूर्वोक्तकारणें सर्वथा हेय।

फूल, फड़, गाछ, तीनूक एके नाम

जे नाम जाहि फड़क कोषमे लिखल अछि से नाम ओकर गाछहुक बुझबाक

चाही; यथा, 'आम-आम्र, फलविशेष' एवं समुल्लिखित अछि, से आम संज्ञा ओकर गाछहुक; उदाहरण, 'आम खाएल', 'आमक जारन'। एवं जे फूलक नाम से ओकर गाछहुक; यथा, 'सोनहुल फूल' 'सोनहुलक सीर'। जे गाछमे फड़ए से फड़ थीक, अतः धान्यादिको फड़ भेल, तें गाछ ओ फड़ दुहूक नाम धान; उदाहरण, 'ढाढ़मे धान अछि', 'धान काटल'।

कोषमे फलविशेष पुष्पविशेष वृक्षविशेष एना अर्थ लिखल अछि से उपलक्षण थीक। जकर फूले उपयुक्त वा फड़े, वा वृक्षे, वा जे स्मृतिपथारूढ़ भेल, तकरे उल्लेख कएल। अतः कदम्बादिमे पुष्पविशेष अर्थ लिखल, वस्तुतः ओकर पुष्पविशेषो अर्थ लिखि सकी, फलविशेषो एवं वृक्षविशेषो; हेतु जे कदम्बादिसंज्ञा तीनूक थीक।

यद्यपि 'आम' आदि फलमात्रक नाम मानी, 'आमक जारन' इत्यादि व्यवहारमे 'आम' आदि ओकर गाछमे लाक्षणिक मानी से संभव थीक, किन्तु 'आम'आदि गाछहिक नाम रहओ, 'आम खाएल' इत्यादि स्थलमे 'आम' आदि फलमे लाक्षणिक रहओ सेहो कहि सकैतछी। तस्मात् विनिगमनाविरहसँ दुहू अर्थ ओकर वाच्ये मन्तव्य। किञ्च, दुहू अर्थमे मुख्यव्यवहारे बुझल जाइछ, गौणव्यवहार नहि।

कतहु-कतहु एकर अपवाद अछि। यथा, 'कमल' संज्ञा फूल-मात्रक थीक, ओकर गाछक नहि; गाछक नाम 'पुरैनि' थिक। अतएव 'पुरैनिक पात' व्यवहृत अछि, 'कमलक पात' नहि। तथा फलक नाम 'बजरबट्टू' गाछक नाम 'ताड़ी', अतएव ओकर पात 'तड़िपत' कहबैत अछि जाहिमे पहिने ग्रन्थ लिखल जाइत छल। आम्रादिक मजर यद्यपि फूले थीक, किन्तु वैजात्यक कारणें ओ फूल नहि कहबैत अछि। संस्कृतहुमे ओ 'पुष्प' नहि कहाए 'मञ्जरी' कहबैत अछि।

पुष्प फल वृक्ष नामक प्रसङ्ग संस्कृतहुमे तुल्ये सिद्धान्त अछि; विशेष ई जे आम्रादिशब्द फलमे नपुंसक लिङ्ग, वृक्षमे पुंलिङ्ग ओ पुष्पमे लिङ्गभेद नहि।

रङ्गबोधक नाम ओहि रङ्गसँ रँगलहुक

'लाल' 'पीअर' इत्यादि रङ्गबोधक कहल अछि, से ओहि रङ्गसँ रङ्गल वस्त्रादिअहुमे प्रयोक्तव्य, यथा 'लाल रङ्ग' 'लाल वस्त्र'। रँगल ई उपलक्षण थीक ओहिरङ्गक वस्तुक, अतः 'लाल फूल, इत्यादिओ व्यवहार उपपन्न भेल।

कतोक संस्कृतशब्द अग्राह्य

संस्कृतमूलक मिथिलाभाषामे संस्कृत शब्द लेल जाइछ, ताहिसँ संकीर्णतादोष नहि। किन्तु कतिपय भाषाशब्दक मूलभूत संस्कृत शब्द नहि व्यवहृत होइछ, यथा 'सब' शब्दक मूल 'सर्व' शब्द थीक, ओकर व्यवहार मैथिलीमे नहि हाइछ। एवम् 'तत्' 'यत्' इत्यादिओ अग्राह्य। एवम् ऋकारन्त 'पितृ' 'मातृ' इत्यादिओ। ओकरा

स्थान पिता माता इत्यादि प्रथमैकवचनान्ते बाजल जाइछ, तथा राजन्, दानिन् इत्यादि प्रातिपादिक राजा दानी इत्यादिरूपहिँ व्यवहृत होइछ, से सभ 'मिथिलाभाषाविद्योतनमे स्पष्ट अछि ।

ओकारान्त, वान्त

ओकारान्त 'जओ' 'घाओ' इत्यादि जे शब्द कोषमे लिखल अछि से सभ पूर्वमे अन्तस्थावकारान्त छल किन्तु संप्रति आकारान्ते व्यवहृत भए रहल अछि । केवल 'एव' 'अपि'क योजनामे बान्ते व्यवहृत होइत अछि । यथा, 'जओ बाग कएल', 'आब जबे नहि, 'जबो लाएब' 'नाबे नहि' 'नाबो फूटल' 'नाबहिसँ' पार होएब, 'छओ गोट' 'छबेटा' 'छबोटा' ।

ओकारान्त व्यवहारक कारण अछि ओकार वकारकेँ किञ्चित् ध्वनिकृत तुल्यता । अतएव हमरा लोकनि 'पठाओल' लिखैत बजैत छी, केओ केओ 'पठावल' लिखैत छथि । तस्मात् 'नाव' 'घाव' इत्यादि लेख असंगत नहि ।

ऐ औ वर्णविचार

ऐकार तथा औकार सन्ध्यक्षर कहबैत अछि; कारण जे 'अइ' एतदुभय वर्ण मीलि ऐकार एवम् 'अउ' एतद्वर्णद्वय मीलि औकार नृसिंहवत् विलक्षणजातिक वर्ण बनैत अछि । अतएव ऐकारक स्थान कण्ठतालु, औकारक कण्ठओष्ठ पाणिनीय-शिक्षादिमे प्रतिपादित अछि । जेँ 'अइ' एतदुभयावयवक ऐकार तथा 'अउ' एतदुभयावयवक औकार थीक तेँ मिथिलाभाषामे संस्कृतभिन्न शब्दमे 'ऐ' 'औ' क स्थानमे 'अइ' 'अउ' लिखब असंगत नहि । यथा 'कहैत' 'कहइत', 'कौड़ी' 'कउड़ी' ।

हिन्दीमे 'अए'-'अओ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' म्लेच्छ-भाषावत् मानल अछि । म्लेच्छ-भाषामे एकाकारक लिपि अनेक वर्णक अभिव्यञ्जक होइत अछि । परन्तु ओकर बहुत दिनसँ संघर्ष भेलहुपर संस्कृतविरुद्ध खकार-गकारादिक प्रवेश शुद्ध हिन्दीमे नहि भेल । तथा म्लेच्छभाषाक संपर्कवश 'कहिस' 'कहिन' इत्यादि जे हिन्दीमे व्यवहृत होअय लागल छल तकरा हिन्दी व्याकरणकार हटओलैन्हि । किन्तु संस्कृत-विरुद्ध 'ऐ' 'औ' हिन्दीमे रहिए गेल । हमरा अनुमानेँ अतिपूर्व 'जाते हौ' इत्यादिक स्थान 'जाते हओ' इत्यादि लिखल जाइतँ छल । यदि म्लेच्छभाषासंपर्कसँ पूर्वक लेख भेटैत तँ एकर स्पष्टीकरण भय जाइत । लोचनकृत 'रागतरङ्गिणी'मे 'है' एकरा स्थान 'हए' एतादृश लेख पाओल जाइत अछि । अस्तु, संप्रति हिन्दीमध्य संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ'क लेख सिद्धवत् भय गेल अछि । प्रत्युत सन्देह जनु हो जे कीदृश ध्वनि-व्यञ्जकतया 'ऐ' 'औ' लिपि कयल गेल अछि एहिहेतु एहनसन हिन्दीमे नियम भय गेल अछि जे अनुरूपसंस्कृतभिन्न शब्दमे संस्कृतविरुद्धे 'ऐ' 'औ' क उच्चारण हो ।

मिथिलाभाषामे 'ऐला', 'घैल', 'मैल', 'पैली', 'औलबौल', 'चौठि', 'बौँसब', इत्यादि अनेकशतसंख्यक सकल नाममे संस्कृतानुरूपे 'ऐ' 'औ' इदानींपर्यन्त सकल मिथिला देशमे व्यवहृत अछि । ताहिमे कृत्रिम कय दुष्ट ऐकारादि चलाएब नितराम् अनुचित ओ असंभव थीक । तस्मात् मिथिलाभाषामे सर्वत्र 'अइ' एतादृशध्वनिके ऐकार एवम् 'अउ' एतादृशध्वनिके औकार मन्तव्य ।

अत: हिन्दीक वासनासँ चलाओल 'ऐलाह' 'जैब' 'औताह' 'पौल' इत्यादिक स्थान 'अएलाह' 'जाएब' 'अओताह' 'पाओल' इत्यादिए परिशुद्ध मानबाक चाही । विद्यापति, मनबोध, गोविन्द प्रभृतिक लेखमे 'गाओल' 'पाओल' इत्यादिए शब्द अछि 'गौल' 'पौल' इत्यादि नहि; अन्यथा 'उचित वर पाओल' इत्यादिमे छन्दोभङ्ग दोष आपतित होयत ।

कतोक व्यक्ति हिन्दीक अनुकरण कय 'अए' 'अओ' एहि दुहूक स्थान 'ऐ' 'औ' लिखय लागल छथि । यथा 'अएना' एकरास्थान 'ऐना', 'पओताह'क स्थान 'पौताह' इत्यादि । कतोक व्यक्ति तँ 'आए' तथा 'आओ' एकरो स्थान 'ऐ' तथा 'औ' लिखैत छथि । यथा 'आएल' एकरा स्थान 'ऐल' 'पाओल'क स्थानमे 'पौल' इत्यादि । किन्तु ई लेख सर्वथा अनुचित थीक ताहिमे अनेक कारण ।

(क) मैथिली संस्कृतसँ उत्पन्न भेल अछि । अत: एकर वर्ण ओ लेख संस्कृतहिक अनुसार उचित ।

(ख) व्याकरणक अनुसार मैथिलीमे भूतकालमे धातुसँ पर 'अल' प्रत्यय अबैत अछि; यथा, 'देखल' 'पढ़ल' । अत: 'धर' धातुमे 'अल' लगओलापर 'धरल' रूप बनल; ताहिमे 'र' क स्थान 'य' आदेश भेलापर 'धयल' रूप भेल; तत: पर 'य'केँ वैकल्पिक 'ए' आदेश (जे सार्वत्रिक अछि) कयलापर 'धएल' बनैतअछि । एवं 'पब'धातुसँ 'अलक' प्रत्यय अयलापर 'पबलक' ई बनल; ताहिमे 'ब'केँ ओकार आदेश (जे 'नाब' 'नाओ', 'यव' 'जओ' इत्यादिमे दृष्ट अछि) कयलापर 'पओलक' एतादृश रूप बनल; 'पौलक' एहन नहि । एहि प्रकारेँ साधन-प्रक्रिया देखलासँ स्पष्ट होइछ जे 'अए' 'अओ' इएह शुद्ध थीक ।

(ग) शब्दक मूल देखलासँ ई आओरो स्पष्ट भय जाइत अछि; यथा 'कओर' शब्द 'कवल' शब्दसँ सिद्ध भेल अछि, अत: 'व' क स्थान ओकार भेलापर 'कओर' शब्द सिद्ध भेल, 'कौर' नहि ।

(घ) ककरो मत अछि जे उच्चारणक अनुरोधेँ 'धएल'क स्थान 'धैल' लिखबाक चाही । परन्तु इहो उचित नहि, कारण जे विलम्बित वृत्त्या उच्चारण कयलासँ 'धएल' इत्यादिए उच्चरित होइछ । किन्तु शीघ्रतया उच्चारणमे किछु ध्वनिक अन्तर होइछ से मानहि पड़त । बजबाक काल लोक शीघ्रताक कारण

भाषाक वास्तविक स्वरूपकेँ बहुत विकृत कय दैत अछि; यथा, 'करैत अछि'-'करैए', 'नहि'-'नै', 'पओलहुँ'-'पौलौँ' । किन्तु ई सभ रूप शिष्ट मैथिललोकनि नहि लिखैत छथि ।

(ङ) यदि केओ कहथि जे लेखलाघवार्थ विलक्षण 'ऐ' 'औ'क स्वीकार कर्तव्य; 'धएल' 'पठाओल' 'अएना' इत्यादिक स्थान 'धैल' 'पठौल' 'ऐना' इत्यादि लेखमे एक आखरक लाघव अछि । एहिपर वक्तव्य जे ई लाघव उपकारकसँ अधिक अपकारके होएत । कारण जे एहि स्थितिमे एकाकारके 'ऐ' 'औ' लिपिकेँ दू प्रकारक ध्वनिक अभिव्यञ्जक मानय पड़त; तखन 'ऐक्य' 'कैल' 'धैल' 'ऐना' 'औन्नत्य पौल' 'और 'ढौरब' इत्यादिमध्य कोन शब्दमे 'ऐ' 'औ' कीदृश स्वरक अभिव्यञ्जक थीक एकर व्यवस्था मैथिलेतरकेँ तथा नेना सभकेँ कठिन भय जयतैन्हि । हमरा मतेँ 'ऐक्य' 'पाओल' 'घैल' 'अएना' 'औन्नत्य' 'पाओल' 'आओर' 'ढौरब' इत्यादि व्यवस्थित अभ्रान्त लेख होइतअछि । वस्तुत: एकपदमे लाघव-गौरव-विचारे नहि अछि अन्यथा 'एक' 'दू' 'तीनि' 'चारि' 'पाँच' इत्यादिक स्थान 'ए' 'दू' 'ती' 'चा' 'पा' चलाओल जाइत; एवम् 'प्रमदवनविहारीशरण' एहन-एहन नाम नहि राखल जाइत ।

एवम् लाघव एकतर पक्षक समर्थक ततहि होइत अछि जतय दुहू पक्ष समकक्ष हो । किन्तु दोषावह एकतर पक्षक समर्थक नहि भय सकैत अछि । तस्मात् शास्त्रप्रातिकूल्य तथा भ्रमजनकत्व एहि प्रधान दू दोषसँ दुष्ट 'ऐ' 'औ' परिग्रह पक्षक समर्थक नहि होएत ।

(च) 'ऐ' 'औ' अंशमे हिन्दीक सादृश्यपर जोर देनिहारकेँ ई नहि बिसरबाक चाही जे मैथिलीकेँ संस्कृतसँ जे योनिसम्बन्ध छैक से हिन्दीसँ नहि; तथा हिन्दीक कतबो उत्थान होयत तथापि संस्कृतक स्थान ओकरासँ उच्चे रहत । अत: हिन्दीक अनुसरणक अपेक्षया संस्कृतहिक अनुसरण करब उचित । हिन्दीभाषा मैथिलीक सहज थीक, ताहिमे यदि एक उपजीव्यविरोध करय तँ ओकर अनुकरण कय दोसरो उपजीव्यविरोध करय से उचित नहि ।

(छ) आठम शताब्दीसँ लय बारहम शताब्दी समय धरि मैथिलीक जे केओ विद्वान् मैथिलीमे किछु लिखलैन्हि से सभ 'अए' 'अओ' इएह लिखलैन्हि 'ओकरा स्थान 'ऐ' 'औ' नहि । अत: एतेक दीर्घकालसँ चल आयल निर्दुष्ट परम्पराकेँ तोड़िकेँ मैथिलीकेँ हिन्दीक अनुगामी बनाएब सर्वथा अनुचित ।

(ज) संस्कृत-विरुद्ध 'ऐ' 'औ'क स्वीकर्ता लोकनिक लेख कोनो व्यवस्थापर नहि अछि । 'आएल' 'पाओल' इत्यादिक स्थान ओ लोकनि 'ऐल' 'पौल' लिखैत छथि, तदनुसार 'जाए' 'जाओ' एकरो स्थान सर्वत्र हुनका 'जै' 'जौ' लिखबाक

चाही; यथा 'आएल जाए' 'आएल जाओ' इत्यादिक स्थान 'ऐल 'जै' 'ऐल जौ' इत्यादिक लेख करब उचित; एवम् 'माए' 'गाए' इत्यादिक स्थान 'मै' 'गै' लेख कर्तव्य । किन्तु से नहि लिखैत छथि । बहुत व्यक्ति तँ एहनो छथि जे कतहु 'पौल' ओ कतहु 'पाओल' लिखैत छथि । किन्तु परिनिष्ठित आधुनिक बहुसंख्यक विद्वान् जे लोकनि मैथिलीभाषातत्त्वक अनुसन्धान कएलैन्हि अछि ओ जे मैथिलीक परिनिष्ठित लेख कीदृश होयबाक चाही तकर विचार करैत छथि से सभ 'अए' 'अओ' सएह लिखैत छथि । प्रतिष्ठित प्रकाशको लोकनि अधिकांश एही लेखमे अपन-अपन पुस्तक प्रकाशित कयलैन्हि अछि । पटना विश्वविद्यालयक मैथिलीविभाग सेहो एही पक्षक समर्थक छथि । एही लेखक ग्रन्थ सब सर्वत्र पठन-पाठनमे अछि । 'मैथिली-साहित्यपत्र' तँ सुतराम् एहि पक्षमे छल ।

अत: एहि कोषमे 'अए' 'अओ' एकरा स्थान वैकल्पिक रूपहु संस्कृतविरुद्ध 'ऐ' 'औ' नहि लिखल अछि ।

ड ढ द्विविध

'ड' दू प्रकारक अछि—मूर्द्धस्थानमे सरल जिह्वाग्रक संयोगजन्य तथा ओही स्थानमे वक्रीकृत जिह्वाग्रक आघातजन्य । एहिमे प्रथम प्रकारक 'ड' पदक आदिमे तथा संयुक्तमे उच्चरित होइत अछि; यथा 'डर' 'अड्डा' 'पण्डा'; द्वितीय प्रकारक 'ड' स्वरसँ आगाँ असंयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'कड़ी' 'गाड़ी' । यादृश ध्वनिक डकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज बुझब । जेना वक्रीकृताङ्गुल्यग्रसँ तन्त्रीमे आघात कयल जाइछ, तेना वक्रीकृत जिह्वाक अग्रसँ आघात कयने ई वर्ण उत्पन्न होइछ ।

एहि दुहू 'ड'क ध्वनिमे किछु भेद रहलहुपर एके स्थानमे जिह्वाग्रक स्पर्शसँ उत्पत्ति होएबाक कारणेँ वर्णभेद नहि मानल जाइत अछि, किन्तु एकजातीयते । 'क' 'ख' इत्यादि जे भिन्न जातिक होइत अछि से प्रयत्नक विभिन्नताक कारणेँ । 'ड'द्वयमे शास्त्रोक्त प्रयत्नहुक भेद नहि अछि । एवम् 'ढ' सेहो डकारवत् द्विविध अछि, संयोगज ओ आघातज । एकरो नियम डकारवते अछि । संयोगज 'ढ' पदक आदिमे ओ संयुक्तमे उच्चरित होइछ; यथा 'ढक्का' 'बड्ढी' । आघातज 'ढ' स्वरसँ आगाँ उच्चरित होइछ, यथा' 'गढ़' 'बेढ़' । यादृश ध्वनिक ढकारक द्विरुच्चारण नहि भय सकय तकरा आघातज जानब । 'ड' ओ 'ढ' मे विभिन्नता अल्पप्राणतामहा-प्राणतात्मक प्रयत्नक भेदसँ होइत अछि । वर्णक स्थान ओ प्रयत्न आगाँ कहब ।

दुहू ड तथा ढ मे ध्वनिभेदसूचक कोनो चिह्न (तरमे बुन्दा) देबाक व्यवहार अतिपूर्व नहि छल । अत: हम आघातज 'ड' 'ढ'क नीचाँ बुन्दा नहि दय समाने लेख कयल अछि । दोसर कारण जे भेदसूचक चिह्न बेत्रेको बजबाक प्रकृतिक अनुसारेँ

स्वतः उच्चारणमे भेद भय जाइत अछि । अस्तु, एमहर आबि आघातजक तरमे भेदसूचक बिन्दु देबाक परिपाटी चलल अछि; ताहिमे हमहुँ सहमते छी ।

यकार-षकार विचार

यकारक द्विविध उच्चारण अछि; चवर्गतृतीयवत् तथा 'एअ' एतदुच्चारणवत्– प्रथम प्रकारक 'यमुना' 'यशोदा' इत्यादि संस्कृत शब्दहिमे अछि; द्वितीय प्रकारक 'कय' 'जाय' 'खाय' इत्यादिमे, तथा 'क्य' 'ख्य' इत्यादिमे प्रसिद्ध अछि । यथोचित उच्चारणबाला यकारक लिपिक नीचाँ असंयुक्तमे बिन्दु वा तिर्यक् रेखा मिथिलाक्षरमे देल जाइत अछि ।

मिथिलामध्य यजुर्वेदशाखीय लोकक संख्या अधिक रहबाक कारण यजुर्वेदवत् ओकर द्विविध उच्चारण प्रचलित भेल । अतएव षकारहुक उच्चारण तदनुसार पुराणादिकहुमे प्रचलित भेल । यजुर्वेदक माध्यन्दिनीयशाखाक प्रातिशाख्यमे कहल अछि 'षकारस्य खकारः स्याट्टुकयोगे तु नो भवेत्, अर्थात् षकारक उच्चारण खकारवत् हो परन्तु टवर्गक योगमे नहि । एहि अनुसारेँ 'पुरुष' आदिमे सर्वत्र षकारक कवर्गद्वितीयवत् उच्चारण, केवल टवर्गक योगमे 'कष्ट' 'विष्णु' इत्यादि शब्दमध्य मूर्द्धन्यहिक उच्चारण होइछ ।

परन्तु अतःपर षकारक प्रसङ्ग संशोधन कयल गेल अछि । उक्त प्रातिशाख्यानुशार उच्चारण करब यजुर्वेदहिमे उचित, आन वेद वा पुराणादिमे नहि, से धर्मधुरीण कर्मठप्रवर बाबू श्री गुणेश्वरसिंहप्रभृति तथा जगद्विख्यात विद्वद्वरेण्य श्रीबच्चा झा प्रभृतिक सिद्धान्त भेल । अतएव आब हमरा लोकनि षकारक उच्चारण संशोधनानुसार कय रहल छी । समुचितो इएह थीक । यदि उक्त प्रातिशाख्यानुसार सर्वत्र उच्चारणव्यवस्था मानी तँ 'ऋण' क स्थान 'रेण', 'संस्कृत'क स्थन 'संस्क्रेत', 'हर्ष'क स्थान 'हरेष' इत्यादिओ बाजय पड़त; हेतु जे यजुर्वेदमे तादृशे उच्चारण युक्तिसंगत अछि ।

यकारक द्वैविध्य केवल मिथिला ओ बङ्गला दुइए देशमे व्यवहृत अछि, अन्यत्र यकारक स्थानप्रयत्नानुकूल यथोचित एके प्रकारक उच्चारण अछि ।

आब जाहि शब्दमे यादृश यकारक उच्चारण मिथिलामे व्यवहृत अछि तकर उल्लेख करैत छी । शब्दक आदिमे यकारक जकारवत् उच्चारण होइत अछि; यथा, 'यम' 'योग' । पदक मध्यमे यथोचित; यथा, 'नियम' 'प्रयोग' 'बेजाय' 'जाय' । एकर अपवाद-एकपदस्थ स्वरमात्रव्यवहित दू 'य' क उच्चारण जकारवत्; यथा, 'युयुधान', 'युयुत्सु'; तथा रेफोत्तरवर्ती यकार जकारवत्, यथा 'आर्य' 'वर्य' 'हर्यक्ष' ।

वर्गचतुर्थ-वर्णविचार

वर्गक चारिम घ् झ् ढ् ध् भ् एहि पाँच वर्णक यादृश ध्वनि सुनल जाइछ, तेहनेसन ध्वनि 'अह्' परक तद्वर्गीय तृतीय वर्णहुक होइछ । अर्थात् 'घ्'-'गह', 'झ्'-'जह्' इत्यादि तुल्यश्रुतिके होइत अछि । एहि कारणेँ क्वचित्-क्वचित् दुहू व्यवहृत होइत अछि; यथा, 'मघी' 'मगही', 'सोझाँ' 'सोजहाँ', 'साढ़ू' 'साड़हू', 'खोधा' 'खोदहा', 'उभी' 'उबही' इत्यादि दुहू बाजल ओ लिखल जाइछ ।

परन्तु जाहि ठाम चतुर्थ वर्णसँ आगाँ दीर्घस्वर अछि ताहि ठाम ई विषय; अतः 'पैघ' 'बोझ' 'टेढ़' 'बाध' 'थोभ' इत्यादि स्थलमे आगाँ ह्रस्व रहबाक कारण द्वितीय प्रकारक उच्चारण नहि । प्रत्युत तद्भिन्न स्थलहुमे क्वचिदेव । उत्तम कल्प तँ चतुर्थ वर्णहिक बाजब ओ लीखब ।

रौदा घैला इत्यादि अशुद्ध

'रौदा भेल', 'घैला लाउ' इत्यादि अशुद्ध थीक; 'रौद भेल' 'घैल लाउ' इत्यादिए शुद्ध । कारण जे 'घैल' इत्यादिए नाम थीक । भ्रमक हेतु ई जे 'घैल' 'रौद' 'कोबर' 'माँडब' 'तिलकोड़' 'सोन' इत्यादि बहुत शब्दकेँ विभक्तिसँ पूर्व दीर्घ होइछ, 'घैलाक जल रौदामे' 'सोनाक माला गरामे', इत्यादि । कतोक साक्षरो व्यक्ति एहि भ्रममे पड़ैत छथि । एहि हेतु व्याकरण देखब आवश्यक । तस्मात् 'घैलाक जल, तिलकोडाक पात' इत्यादि प्रयोग देखि 'घैल' 'तिलकोड़' प्रभृति शब्दक अन्वेषण एहि कोषमे कर्त्तव्य ।

शब्दक अर्थ त्रिविध

शब्दक अर्थ तीन प्रकारक होइत अछि–वाच्य, लक्ष्य ओ व्यङ्ग्य । ताहिमे वाच्य अर्थ ओ थीक जकर प्रथमतः शब्दसँ स्मरणद्वारा बोध हो । यथा 'आगि लाउ' एहि वाक्यमे 'आगि' शब्दसँ अग्निरूप अर्थ उपस्थित भय अवगत होइत अछि । लक्ष्य अर्थ थीक प्रथमोपस्थित अर्थमे असंगति किंवा तात्पर्यक अनुपपत्तिसँ तत्सम्बन्धी जाहि आन अर्थक अवगति हो से; यथा 'क्रोधेँ आगि भय गेलाह' एहि ठाम प्रथमोपस्थित अग्निरूप अर्थ असंगत अछि, तेँ संतप्तत्वरूपधर्मसँ अग्निसदृश अर्थ अवगत होइत अछि; तस्मात् 'आगि' शब्दक दीप्त तथा अग्निसदृश अर्थ लक्ष्य भेल । एवम् मनुष्यमे कहल जाइत अछि जे 'ई मनुष्य नहि थिकाह' एहि ठाम वाच्य अर्थ असंगत अछि, तेँ 'मनुष्य' शब्दसँ मनुष्योचितक्रियावान् प्रतीयमान अर्थ लक्ष्य भेल ।

जयबापर उद्यत अतिथिकेँ गृहस्थ कहल जे 'सन्ध्या भेल, अहाँक गाम दूर अछि ।' एहिसँ ई व्यङ्ग्य भेल जे अहाँ एखन गाम जनु जाइ, आइ राति हमरहि ओहि ठाम रहू ।

नैयायिक लोकनि शब्दक वाच्य ओ लक्ष्य दुइएटा अर्थ मानैत छथि ।

लेखापेक्षया बजबामे भेद

लेखापेक्षया बजबामे स्वाभाविक कोनो-कोनो शब्दमे किछु-किछु भेद भय जाइत अछि; यथा, 'देखलहुँ' ई शुद्ध थीक से जननिहारो 'देखलौँ' बाजि उठैत

छथि । तकर कारण बजबामे शीघ्रता । एवम् 'नहि'क स्थान 'नै', 'कियेक'क स्थान 'किये', 'एतय'क स्थान 'एत' । एवं शीघ्रोच्चारणमे पूर्वोच्चारित शब्दक अन्तिम अकार प्रायः हटाय देल जाइछ; यथा, 'रामदेव राम्देव', 'बलजोरी-बल्जोरी' । एवं प्रकार मध्यवर्ती अकारक बहुधा अनुच्चारण होइछ जेना इङ्गलिशमे होइत अछि । एतादृश उच्चारणक चालिसँ बहुत शब्द सन्दिग्ध होइछ जे अकारमध्यक थीक वा तद्रहित; यथा, 'अनहेर'-'अन्हेर'; ताहि ठाम अगत्या दुहू शुद्धे मानैक पड़त ।

वर्णक स्थान

जाहि वर्णक जे स्थान थीक ताहि स्थानमे जिह्वाव्यापारसँ सुस्पष्ट वर्ण उच्चरित होइत अछि । जकर जिह्वा मोट रहैत अछि ओकरा यथोचित स्थानमे यथावत् जिह्वाक असम्बन्धसँ सुस्पष्ट बाजल नहि होइछ । किञ्च, वर्णोच्चारणयोग्य जिह्वायुक्तो व्यक्ति यदि जोरसँ स्थानान्तरमे जिह्वाव्यापार करथि तँ दुष्टवर्ण उच्चरित होयत । तस्मात् वर्णक स्थानज्ञान आवश्यक । अतः वर्ण सबहिक स्थान कहैत छी ।

ओष्ठसँ आरम्भ कय लबलबीक समीप पर्यन्त आस्य थीक, ताहिमे वर्णक स्थान पाँच गोट अछि–कण्ठ, तालु, मूर्द्धा, दन्त तथा ओष्ठ । एहि पाँचे स्थानमे जिह्वाव्यापार-जन्य वायुसंयोगसँ वर्णक अभिव्यक्ति वा उत्पत्ति होइत अछि । लबलबीसँ नीचाँ कण्ठविवरक प्रारम्भदेश कण्ठस्थान; ताहिसँ नीचाँक मुखावयव मूर्धा; दन्तसंयुक्त देश दन्तस्थान; तथा मुखक अन्तिम अवयवद्वय ओष्ठस्थान थीक । उक्त क्रमेँ मुखावस्थित एही पाँचो स्थानक क्रमेँ वर्णमालामे कवर्गादि पवर्गान्त पाँचो वर्गक उपन्यास अछि । यथा सर्वोच्च कण्ठस्थानवाला क, ख, ग, घ, ङ; ताहिसँ निम्न तालुस्थानबाला च, छ, ज, झ, ञ; ताहिसँ निम्न मूर्द्धस्थानबाला ट, ठ, ड, ढ, ण; ताहिसँ नीच दन्तस्थानजन्य त, थ, द, ध, न; ताहूसँ अगिला ओष्ठस्थानभव प, फ, ब, भ, म विन्यस्त अछि । जेना स्थान-स्थितिक क्रमेँ कवर्गादि पाँचो वर्ग पठित अछि तहिना य, र, ल, व इहो चारू अन्तस्थो वर्ग तालु, मूर्द्धा, दन्त, ओष्ठ, एहि क्रमशः अधोऽधःस्थित चारि स्थानक्रमेँ पठित अछि । एवम् ऊष्महुमे हकार छोड़ि आओर श, ष, स, तीनूवर्णक न्यास स्वस्वजनकस्थानक्रमहिँ अछि । यद्यपि स्थानक्रमें ह श ष स 'एना' पाठ उचित छल किन्तु सर्वोच्चकण्ठस्थानबाला हकार सभक आगाँ पढ़ल गेल तकर कारण अन्वेष्टव्य थीक । एक ई हेतु भय सकैत अछि जे हकारक नियमतः कण्ठेस्थान नहि, 'ह्म' 'ह्य' इत्यादि हकारक ककरो मतेँ वक्षःस्थान थीक । तस्मात् ओकर पाठ वैलक्षण्यात् सभसँ आगाँ कयल गेल हो ।

एवम् अ इ उ ऋ लृ एहि एकैक स्थानबाला पाँच स्वरमे केवल उकारकेँ छोड़ि अन्य चारू स्वरक पाठ कण्ठादिस्थान क्रमहिँ अछि । उचित छल जे 'अ इ ऋ लृ उ' एहिक्रमेँ पाठ कयल जाइत, किन्तु ऋ लृ तथा ए ऐ ओ औ सन्ध्यक्षर

थीक तेँ ओहि पाँचोकेँ एक संघीकरणक हेतु उकारसँ आगाँ ऋ लृ पढ़ल गेल– तखन अ इ उ एकर पाठ स्थान क्रमहिँ अछि; तथा ऋ लृ एवम् ए ऐ ओ औ एकरो पाठ तदनुसारे अछि – तालुस्थानबाला ए ऐ प्रथम, ततःपर ओष्ठस्थानबाला ओ औ । एकैक स्थानबाला अकारादि लृकारान्तक पाठोत्तर उभयस्थानबाला एकारादिक पाठ अछि । एतावता वर्णमालामे वर्णस्थितिक क्रम स्थानक्रमेँ अछि तकर स्पष्टीकरण भेल । प्रकृतमनुसरामः ।

दन्त, मूर्धा, तालु तीनूकेँ थोड़-थोड़ अन्तर अछि । दन्त-देशसँ आगाँ उच्च-देश मूर्धा ओ ताहिसँ आगाँ लगले नीच देश तालु थीक । वर्णोत्पादक तालुक भागसँ कण्ठस्थान दूर अछि । यद्यपि 'तारु' शब्दसँ प्रसिद्ध तालु कण्ठसँ नीचाँ मूधसिँ ऊपर समग्र थीक, किन्तु मूर्धसंलग्ने तालुभाग वर्णोच्चारणमे साधक अछि ।

जिह्वाक मूल, मध्य, अग्र, तीन भागमे कोनो-कोनो वर्णक उत्पत्तिमे उपकारक होइत अछि । कवर्गक उच्चारणमे जिह्वाक प्रारम्भभाग, चवर्गक उत्पादनमे जिह्वाक मध्यभाग, तथा टवर्ग ओ पवर्गक उच्चारणमे अग्रभाग उपयुक्त अछि ।

प्रत्येक वर्णक स्थानकथन

अ क ख ग घ ङ ह	७ वर्णक	कण्ठस्थान
इ च छ जझ ञ य श	८ वर्णक	तालुस्थान
ऋ ट ठ ड ढ ण इ ष	८ वर्णक	मूर्धस्थान
लृ त थ द ध न ल स	८ वर्णक	दस्तस्थान
उ प फ ब भ म	६ वर्णक	ओष्ठस्थान
ए ऐ	२ वर्णक	तालुकण्ठस्थान
ओ औ	२ वर्णक	ओष्ठकण्ठस्थान
व	१ वर्णक	ओष्ठदन्तस्थान
ङ ञ ण न म तथा		
अँ इँ आदि अनुनासिक	वर्णक	नासिको स्थान
अनुस्वार	वर्णक	नासिकास्थान
विसर्ग	वर्णक	पूर्वस्थित स्वरकस्थान ।

वर्णक प्रयत्न

स्थानक ऐक्य रहलहु पर 'क' 'ख' इत्यादि वर्णक भेद किएक एहि प्रश्नक उत्तरमे कथ्य जे प्रयत्नक भेदसँ । तस्मात् प्रयत्नक परिचय लिखैत छी ।

कोनो-कोनो वर्णक उच्चारणमे कण्ठविवरक विकास अपेक्षित, कोनो-कोनोमे ओकर संकोच (चोँकचब), एवम् कोनोमे हृदयस्थ वर्णोत्पादक वायुक अल्पता, कोनोमे आधिक्य अपेक्षित । एहि चारि कार्यक जनक प्रयत्नक नाम क्रमशः विवार,

संवार, अल्पप्राण ओ महाप्राण शास्त्रमे कहल अछि । ई चारू बाह्य प्रयत्न कहबैत अछि जे आस्यसँ बहिर्भूत अछि । एहि चारि प्रयत्नमे दू-दू प्रयत्न प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे आवश्यक, विवार-संवारमे एक, तथा अल्पप्राण-महाप्राणमे एक ।

एहि प्रयत्नसँ अतिरिक्त चारिटा आभ्यन्तर प्रयत्न अछि :- स्पृष्ट, ईषत्स्पृष्ट, विवृत ओ संवृत । ई चारि प्रयत्न वर्णजनक जिह्वाक स्पर्श, अल्पस्पर्श, दूरस्थिति, समीपस्थिति, एहि चारि कार्यक संपादक होइत अछि ।

ई चारू प्रयत्न मुखाभ्यन्तरकार्यकारितासँ आभ्यन्तर कहबैत अछि । एहि चारिमे एक-एक प्रत्येक वर्णोत्पत्तिमे अपेक्षित होइछ ।

एतद्भिन्न, स्वरक एक दू तीन मात्रा कालस्थितिजनक तीनटा प्रयत्न अछि । एहि तीनूक नाम कार्यक नामहिपर यौगिक ह्रस्वत्वादिजनक प्रयत्न कहि सकी । इहो बाह्यो कहबैत अछि । व्यञ्जनक अर्द्धमात्राकालस्थिति स्वाभाविके अछि तेँ तज्जनक प्रयत्नक अपेक्षा नहि ।

आब कोन-कोन प्रयत्न कोन-कोन वर्णमे अपेक्षित से कहैत छी । बाह्य प्रयत्न जे चारिटा कहल ताहिमे 'विवार' प्रयत्न वर्गक प्रथम, द्वितीय ओ श ष स ह वर्णक । 'संवार' प्रयत्न तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्गक तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, य र ल व तथा स्वरक । 'अल्पप्राण' प्रयत्न वर्गक प्रथम, तृतीय, पञ्चम, य र ल व, तथा स्वरक। 'महाप्राण' तद्भिन्न सकल वर्णक, अर्थात् वर्गक द्वितीय, चतुर्थ तथा श ष स ह वर्णक ।

आभ्यन्तर प्रयत्नमे – 'स्पृष्ट' पाँचो वर्गक सकल वर्णक । 'ईषत्स्पृष्ट' य र ल वक । 'विवृत' श ष श ह तथा ह्रस्व अकार भिन्न सकल स्वरक । 'संवृत' ह्रस्व अकारक । आब प्रत्येक वर्णक समुदित प्रयत्न देखबैत छी :-

क च ट त प – विवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
ख छ ठ थ फ – विवार	महाप्राण	स्पृष्ट
ग ज ड द ब – संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
घ झ ढ ध भ – संवार	महाप्राण	स्पृष्ट
ङ ञ ण न म – संवार	अल्पप्राण	स्पृष्ट
य र ल व – संवार	अल्पप्राण	ईषत्स्पृष्ट
श ष स ह – विवार	महाप्राण	विवृत
'अ'भिन्नस्वरक – संवार	अल्पप्राण	विवृत
ह्रस्व 'अ'क – संवार	अल्पप्राण	संवृत

यद्यपि ग ङ, ज ञ इत्यादि वर्गक तृतीय तथा पञ्चमक उक्त प्रयत्न सभटा समाने अछि ओ कण्ठादि स्थानो तुल्ये, तथापि पञ्चमक नासिको स्थान, तृतीयक नहि, तेँ स्थानभेद-प्रयुक्त भेद ज्ञातव्य । कण्ठादिस्थान, आभ्यन्तर प्रयत्न तथा बाह्य प्रयत्न, तीनू वर्ण सबहिक अभिव्यञ्जक वा उत्पादक थीक ।

मिथिलाभाषा अनुनासिकप्रचुर

मिथिलाभाषामे अनुनासिक अधिक अछि । 'पाएरेँ काशीसँ प्रयागकेँ बिदा भेलहुँ, इत्यादिमे द्वितीय, तृतीया ओ पञ्चमी विभक्ति तथा 'अलहुँ' तिङ् विभक्ति सानुनासिक अछि । तथा एवकारादिस्थानीय 'अहिँ' 'अहुँ' सेहो प्रायः सानुनासिक अछि-'सबहिँ' 'सबहुँ' । एतद्भिन्नो 'आगाँ' 'पाछाँ' इत्यादि बहुत शब्दमेँ अनुनासिक अछि । तेँ केओ-केओ जाहिमे अनुनासिक नहि चाही ताहूमे अनुनासिक बजैत छथि; यथा, 'साँप' । किन्तु 'सर्प' शब्दमे रेफलोप ओ पूर्वकेँ दीर्घ कय 'साप' शब्द बनल अछि, तेँ ओहिमे अनुनासिक नहि उचित । वर्गक पञ्चम वर्णक लोप भेलापर पूर्व स्वर अनुनासिक होइत अछि; यथा, 'अङ्क' 'आँक', 'पङ्क' 'पाँक', 'अङ्गण' 'आँगन', 'अञ्जन' 'आँजन' 'घण्टी' 'घाँटी', 'वण्टन' 'बाँटब', मण्ड 'माँड़', 'कान्ति' 'काँति', 'संक्रान्ति' 'सँकराँति' । यथा, 'चक्र' 'चाक', 'चुक्र' 'चूक', 'वड्' 'बड', 'वार्ता' 'बात' । संस्कृतभवमे तँ ई नियमे जकाँ अछि । क्वचित् भेदो, यथा, 'आगाँ' 'पाछाँ' ई दूहू शब्द 'अग्रे' 'पश्चात्' सँ सिद्ध भेल अछि । हम अपना जनैत एहि कोषमे समुचित रूपमे अनुनासिक लिखल अछि । कोनो-कोनोमे अनुनासिक अननुनासिक दुहूक प्रचुर प्रयोग देखि दुहू रूप देखाओल अछि ।

संस्कृतसँ मैथिलीमे भेद

संस्कृतसँ मिथिलाभाषा कोना बनल तत्प्रसङ्ग सविस्तर 'मिथिलाभाषाविद्योतन'क भूमिकामे कहल अछि; तथापि अति संक्षेपसँ कहैत छी । देशाध्यक्ष संस्कृत भाषाकेँ अतिमहान् रहबाक कारण आपामर जनताक हेतु अनुपयुक्त बूझि साधारण जनताक व्यवहारोपयोगी अतिसंक्षिप्तशब्दात्मक देशभाषा बनाओल तथा प्रचार कयल । ततः पर ओकर अधिक प्रचार भेलासँ विद्वानो सभ संस्कृतक व्यवहार हटाय ओही भाषामे व्यवहार करए लगलाह । प्रत्येक सुबन्त, तिङन्त, कृदन्त, तद्धितान्त, रूप देखलासँ स्पष्ट बोध होइछ जे देशभाषानिर्माता प्रकृतिभाग संस्कृतसँ साक्षात् तथा प्राकृतादिद्वारा गृहीत कयल ओ बहुत स्वतन्त्रो; तथा प्रत्येक अर्थक एकएकमात्र शब्द राखल; एवम् तद्धित, कृत्, सुप्, तिङ् प्रत्यय सकल स्वकल्पिते राखल । तस्मात् संस्कृतसँ देशभाषामे भेद प्रत्येक वाक्यमे स्पष्टे अछि । तथापि रीतिमे जे वैलक्षण्य अछि तकर दिग्दर्शन करबैत छी ।

मैथिलीमध्य एकार्थक एके शब्द । समासक अत्यल्पता । एकत्वादिबोधक वचनक अभाव । क्यजादिनानाप्रत्ययस्थानीय प्रत्ययक अभाव । सुप्मे तथा तत्प्रकृतिमे विकारक अभाव । प्रथमाक सर्वत्र लोप । आदरानादरादि अर्थभेदसँ तिङ् प्रत्ययक वैचित्र्य । सन्धिकार्यक अभाव ।

संस्कृतसँ साम्य

सुपक प्रकृतिभाग तथा धातु बहुत संस्कृततुल्यवर्णक अछि; यथा, माथ, कपार, गाल, ओठ, दाँत, तारु, कण्ठ इत्यादि नाम, तथा लिख, पढ़, सुन, रुस, कान, कूद, इत्यादि धातु । एवम् 'सुनब' 'कीनब' 'करब' 'धरब' प्रभृति । जेना प्राकृतादिभाषामे संस्कृतसँ साम्य अछि तेना मिथिलाभाषहुमे किन्तु प्राकृतादि मे संस्कृतक सकल नाम तथा निखिल धातु किछु रूपानतर कय गृहीत अछि; मैथिलीमे एकके नाम ओ एकके धातु ।

हिन्दीसँ भेद

हिन्दीमे एकबोधक ओ अनेकबोधक वचन अछि; यथा 'घरमे, घरोंमे' 'जाता है, जाते हैं', 'दाना है, दानें हैं', से हिन्दी व्याकरणमे 'एकवचन' 'बहुवचन'शब्दैं कहल जाइछ, किन्तु दू अर्थमे 'बहुवचन' कहब असंगत, तस्मात् 'एकवचन' अनेकवचन' कहब उचित, अस्तु । मैथिलीमे संख्याबोधक वचन नहि अछि । अतएव 'घैल अछि' एहिसँ घटगत संख्या नहि बुझल जाइत अछि । संख्याक बोध 'एक' 'दू' 'तीन' 'चारि' 'बहुत' इत्यादि शब्दहिसँ होइछ; यथा, गणेशकाँ एक दाँत, दू माय, तीनि आँखि, चारि हाथ ।'

हिन्दीमे 'एव' 'अपि' स्थानीय 'ही' 'भी' शब्दक योजना पदक आगँहिमे होइछ; यथा, 'रामको ही' 'रामको भी' मैथिलीमे सविभक्तिक पदक मध्यहिमे; यथा 'रामहिकेँ' 'रामहुँकेँ' इत्यादि । एवम् समस्त पदक मध्यहुमे ओकर प्रयोग होइछ; यथा 'रामेनाथ वा रामनाथे अयलाह' । 'रामोनाथ वा रामनाथो छथि' इत्यादि । एहि प्रसङ्ग अनेक भेद 'भाषाविद्योतन' मे द्रष्टव्य ।

हिन्दीमे संस्कृतवत् शास्त्रीयो लिङ्ग मानल अछि; यथा, 'छोटी पुस्तक' 'छोटा गाँव', मैथिलीमे लौकिकमात्र, इत्यादि लिङ्गविचारमे कहि आयल छी ।

हिन्दीमे साधारण सप्तमी विभक्ति सँ विलक्षण निर्द्धारण मे 'मेसे' कतोक वर्षसँ मानल गेल अछि; यथा, 'चार घरोंमेसे एक घर मुझे मिला ।' मैथिलीमे निर्द्धारणहुमे साधारणे सप्तमी अछि; यथा, 'चारि घरमे एक घर हमरा भेटल ।' भाषामे परस्पर वैलक्षण्यक अनभिज्ञ ओ हिन्दीक वासना सँ आप्लुत केओ-केओ मैथिलो मैथिलीमे 'मेसँ' लिखय लागल छथि, एवं हिन्दीक 'नकि' जेकाँ मैथिली भाषहुमे 'नहिकि' इत्यादि लिखैत छथि, से आदरणीय नहि ।

हिन्दीमे पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द उत्तरवाक्यगत तच्छब्दानपेक्ष कतोक दिन सँ मानल गेल अछि; अतएव उत्तरवाक्यमे तच्छब्दक अप्रयोग; यथा 'उसने जो कहा, हो गया ।' मैथिली मे संस्कृतसिद्ध निर्णयानुसार पूर्ववाक्यस्थ यच्छब्द नियमतः उत्तरवाक्यगत तच्छब्दसाकाङ्क्ष अछि; यथा, 'ओ जे कहलैन्हि से भए गेल ।'

हिन्दीमे अन्वयिपदार्थगतलिङ्गसंख्याभेदप्रयुक्त षष्ठी विभक्ति 'की' 'का' 'के' तीन प्रकारक होइत अछि; मैथिलीमे सर्वत्र 'क' मात्र एके अछि । प्राचीन गीतमे क्वचित् क्वचित् 'के' 'केर' देखि केओ-केओ 'रामके पुत्र' 'रामकेर आँगन' इहो लिखैत छथि परन्तु से अधमोक्ति थीक । पूर्वक गीतादिमे उत्तम, मध्यम, अधम तीनू उक्ति देखल जाइछ । हमरा विचारेँ अधमोक्तिक त्याग करब उचित ।

हिन्दीमे पूर्वपरवाक्यक सन्दर्भसूचक अव्यय 'कि' इत्याकारक अछि; यथा, 'उसने कहा कि मैं जाऊँगा ।' मैथिलीमे उक्तार्थसूचक 'जे' शब्द अछि; यथा 'ओ कहलैन्हि जे हम जाएब ।' ओ शब्द संस्कृतयच्छब्दस्थानीय थीक । संप्रति केओ-केओ मैथिल बाल्यतः हिन्दीक अधिक व्यवहार कयनिहार लिखैत छथि 'ओ कहलैन्हि की हम जाएब', परंतु ई उचित नहि । एवं 'जेकी' 'भलेही' 'चाहे' इत्यादि सेहो त्याज्य ।

हिन्दीमे संस्कृतभिन्न शब्दमे म्लेच्छभाषास्थित संस्कृतविरुद्ध ऐकार औकार परिगृहीत अछि; मैथिलीमे शास्त्रानुकूल 'अइ' 'अउ' एतादृशध्वनिके 'ऐ' 'औ' सर्वत्र अछि । 'ऐन-मैन' इत्यादिक स्थानमे 'एन-मेन', 'और' इत्यादिक स्थानमे 'आओर' इत्यादि लेख उचित । एवंविध हिन्दीसँ मैथिलीमे बहुत भेद अछि; कतेक देखाउ । विस्तरक भयसँ एहि प्रसङ्ग विरत होइत छी ।

जेना हिन्दीमे कान, नाक, मूह, हाथ, इत्यादि कर्ण, नासा, मुख, हस्त, इत्यादि संस्कृतक अपभ्रंश गृहीत अछि तहिना मिथिलाभाषाहुमे । एवं देशिओ लोटा, गोटा, इत्यादि बहुतशब्द हिन्दीमे मैथिलीमे एके रङ्ग अछि । देख, सुन, पढ़, उठ, इत्यादि धातुओ बहुत समाने अछि ।

बहुत शब्दमे ह्रस्व दीर्घ, इकार अकार इत्यादि भेदप्रयुक्त हिन्दीमे भेद अछि, अधिकांश वर्ण तुल्य; यथा 'जीरा-जीर' 'पुतोहू-पुतहु' 'हलदी-हरदि', 'चूड़ी-चूड़ि', 'दाल-दालि', 'आग-आगि', 'रात-राति', 'कल्ह-काल्हि' ।

हिन्दीमे जेना अनेक धातु मीलि एक विलक्षण क्रियाक बोध करबैत अछि- 'देखा करना' 'देख जाना' 'देख देना' 'देख लेना' 'देखने देना' इत्यादि तहिना मैथिली भाषहुमे 'देखल करब' 'देखि जाएब' 'देखि लेब देखि देब' 'देखय देब' इत्यादि विशेषक्रियाबोधक होइछ । एवं आनो-आनो हिन्दीसँ बहुत तुल्यता अछि ।

शब्दक विभाग अनेक प्रकारेँ

प्रथम प्रकार

मैथिलीमे नाम संस्कृतवत् चारि प्रकारक अछि–कृदन्त, तद्धितान्त, समास, तथा अव्युत्पन्न । ताहिमे कृदन्त नाम ओ थीक जाहिमे अन्तभाग 'अनिहार' प्रभृति कृत्संज्ञक प्रत्यय हो; यथा 'देखनिहार' 'देखब' 'देखनाइ' । तद्धितान्त नाम ओ थीक जकर अन्त (अन्तिम भाग) 'गर' 'पन' इत्यादि तद्धितसंज्ञक प्रत्यय रहय; यथा

'धनगर' 'बुडिपन' । समास मे कहबैत अछि जे अनेक नाम मिलाय एक शब्द बनाओल जाइछ जकर संज्ञा व्याकरणमे 'समास' कहल अछि; यथा 'सरबेटा' 'भलमानुस' 'बलिकट्टा' । अव्युत्पन्न ओ थीक जाहिमे प्रकृतिप्रत्ययविभाग नहि अछि तथा सार्थक खण्डद्वययुक्त नहि अछि; यथा 'घैल' 'कोहा' ।

द्वितीय प्रकारेँ शब्दविभाग

रूढ, यौगिक, योगरूढ भेदसँ शब्द तीन प्रकारक होइत अछि । अवयवार्थक बोध नहि कराय समुदायार्थक बोध करओनिहार रूढ थीक; यथा 'घैल' 'घर' 'बासन' । अवयवार्थबोधपूर्वक समुदायार्थक बोधकारक यौगिक थीक; यथा 'भनसिआ' 'सरबेटा' 'पनिभर' । अवयवार्थसंवलित विलक्षण समुदायार्थक बोधक योगरूढ थीक; यथा 'पनबट्टी' पान रखबाक बाटी ई अवयवक अर्थ भेल ओ पात्रविशेष (प्रत्यक्षगम्यजातिविशेषयुत) ई समुदायक अर्थ थीक । दुहूक बोध युगपत् होइछ, अतएव यदि तीमनहिक बाटी पानक पात्र बनाय ली तँ 'पनबट्टी' नहि कहाओत ।

तृतीय प्रकारेँ शब्दविभाग

प्रकारान्तरेँ पुनः शब्द चारि प्रकारक अछि । जातिशब्द, गुणशब्द, क्रियाशब्द ओ संज्ञाशब्द । जातिक बोध करओनिहार 'घैल' 'ब्राह्मण' आदि जातिशब्द थीक; गुणबोधक 'उजर' 'गरम' 'कोमल' इत्यादि गुणशब्द थीक; गमनादिक्रियाबोधक 'गेनिहार' 'गेनाइ' इत्यादि क्रियाशब्द कहबैत अछि; तथा एकमात्र व्यक्तिबोधक 'देवदत्त' 'भवदत्त' इत्यादि संज्ञाशब्द थीक ।

जातिक परिचय

अश्वमे तीन शब्दक प्रयोग होइत अछि–जानबर, पशु, घोड़ा । एहिमे प्रत्येक शब्दसँ विशेषणविधया विशेष अर्थ अवगत होइत अछि । ओही विशेष अर्थक नाम जाति थीक । ओकर फूट-फूट नाम जन्तुत्व पशुत्व अश्वत्व शास्त्रोक्त अछि । किन्तु मिथिलाभाषामे ताहि-ताहि जातिक नाम फूट-फूट नहि अछि । केवल ओकर व्यापक नाम जातिशब्दे अछि । यथा 'अहाँ कोन जाति थिकहुँ' एहि प्रश्नक उत्तर 'हम ब्राह्मण थिकहुँ' एहि शब्देँ कयल जाइछ । एवंप्रकारक प्रश्नोत्तरवाक्यसँ स्पष्ट होइछ जे ब्राह्मणत्वादि जातिविशेष तथा तज्जातियुत व्यक्ति उभयक नाम ब्राह्मणादिशब्दे अछि । अतएव 'अहाँक कोन जाति थीक'; 'गेना कय जातिक होइत अछि'; 'क्षेत्रमे अनेक जातिक घोड़ा अबैत अछि' इत्यादि व्यवहार होइत अछि ।

व्यक्तिसँ भिन्न अनेक व्यक्तिमे रहनिहार कोनो विशेष अर्थ अछि ताहिमे प्रमाणान्तर ई जे वनमे कोनो एक अपरिचित जन्तुविशेष देखलाक उत्तर पुनः ओहने दोसर जन्तु देखि लोक बजैत अछि जे ई ओएह जानबर थीक जे पूर्व दृष्टिगोचर भेल छल । व्यक्तिभेद रहलहुपर पूर्वदृष्टजाति पश्चात् दृष्टहुमे रहबाक कारणेँ 'ओएह' शब्द प्रयोग करैछ । अवयवो भिन्न रहैत अछि तेँ अवयवक ऐक्यनिबन्धन 'ओएह' ई प्रत्यभिज्ञा नहि कहि सकी; अन्यथा गोदर्शनानन्तर तत्सदृश गवयजन्तुकेँ देखि 'ओएह जन्तु ई थीक' एतादृश ज्ञान होइतैक, किन्तु से नहि होइत छैक, अपितु 'ओहने ई अछि' एतादृशे ज्ञान होइत छैक । तस्मात् उभयसाधारण जातिविशेषप्रयुक्ते 'ओएह' शब्दक प्रयोग मन्तव्य । 'ओएह' शब्दक अर्थ 'पूर्वदृष्टगतजातियुक्त' एतादृशे समुचित ।

चारिम प्रकारेँ शब्दविभाग

मैथिलीशब्द चारि प्रकारक अछि, संस्कृतानुरूप, संस्कृतभव, देशी ओ विदेशी । जे संस्कृतशब्द सकलसाधारण मिथिलाभाषामे व्यहृत अछि से संस्कृतानुरूप भेल । यथा देह, वानर, अनाथ, अधिक, अपराध, दोष । यद्यपि 'कर्तव्य' 'गन्तव्य' इत्यादिओ संस्कृतानुरूपे थीक तथापि आपामर व्यवहृत नहि अछि; तस्मात् ओ शुद्धसंस्कृत भेल । एवम् 'कथमपि' 'कदापि' 'येनकेनोपायेन' 'तस्मात्' इत्यादिओ शुद्धसंस्कृते थीक । किन्तु संस्कृतमूलक मैथिलीभाषामे संस्कृतशब्दक प्रवेशेँ संकीर्णतादोष नहि, तेँ ओ शब्द मैथिलीमे आयलो ठेठ मैथिली भाषा नहि कहाय सकैत अछि; एही कारणेँ ओहि सबहिक उल्लेख एहि कोषमे नहि कयल अछि ।

कतोक संस्कृत शब्द अर्थान्तरमे प्रसिद्ध

कतोक शब्द जाहि अर्थमे संस्कृतमध्य बाजल जाइत अछि से शब्द मिथिलाभाषामे प्रविष्ट भय ओहिसँ आन अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'मात्सर्य' शब्द संस्कृतमे द्वेषार्थक थीक; 'मत्सरोऽन्यशुभद्वेषे' एहिकोषप्रदर्शित द्वेषार्थक 'मत्सर' शब्दसँ स्वार्थिकष्यञ् प्रत्यय कएलासँ त्रैलोक्यत्रैगुण्ययादिवत् 'मात्सर्य' शब्द सिद्ध भेल अछि; ओ शब्द मैथिलीमध्य स्नेह अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि । यथा 'हमरा एँ नेनापर बड मात्सर्य अछि' । एवम् दीर्घवाचक 'आयत' शब्द मैथिलीमे आबि सुन्दर अर्थमे प्रसिद्ध भय गेल अछि–'ई गहना बड आयत अछि' अर्थात् सुन्दर अछि । तथा 'संवाद' शब्दक अर्थ मेल अर्थात् तदनुकूलार्थप्रतिपादन अछि, किन्तु मिथिलाभाषामे अनका कहबाक हेतु कथ्य अर्थक बोधक भय गेल अछि । तथा अनवधानतार्थक 'प्रमाद' शब्द मैथिलीमे 'धाखेँ नहि कहब' अर्थक बोधक भय गेल । एवम् संस्कृतमे 'जङ्घा' छाबाक नाम थीक, किन्तु जङ्घाशब्दभव 'जाँघ' शब्द ऊरु (जानुसँ उपर नितम्बसँ निचला अङ्ग)क बोधक भय गेल अछि । एवम् आवेशादिशब्द स्नेहादिमे प्रसिद्ध अछि ।

संस्कृतानुरूप शब्दमे 'व' इत्यादि अविकृते

मैथिलीमे वकारक स्थान बकार, शकारक स्थान सकार, षकारक स्थान खकार आदेश होइत अछि । क्रमशः उदाहरण-'वामन-बाओन', 'विवाह-बिआह',

'श्राद्ध-सराध', 'भरवश-भरोस', 'वर्ष-बरख', 'मूषक-मूस' । परन्तु उक्त तीनू आदेश ताही शब्दमे होइत अछि जाहिमे विकारान्तर भेल हो, किन्तु जाहिमे वर्णान्तर अविकृत अछि ताहिमे नहि, यथा 'विषय' 'विचार' 'शान्ति' शोथ' 'षष्ठी' 'षडानन' इत्यादिमे संस्कृतानुरूपे वकारादि बोद्धव्य । एवम् शकराहुक प्रसङ्ग जानब ।

संस्कृतभव

संस्कृतभव ओ शब्द थीक जे संस्कृत किछु विकृत बनाय गृहीत कयल गेल अछि; यथा 'पसार' 'परबत' 'हर' । विकृत रूप तीन प्रकारेँ बनैत अछि, कोनो आखरकेँ हटाय देलासँ, वर्णान्तरक योजनासँ, तथा कोनो आखरकेँ हटाय ओकरा जगहपर वर्णान्तरक समावेश कय देलासँ । ई तीनू संस्कृत-शास्त्रमे लोप, आगम ओ आदेश कहबैत अछि । विकार तीनू भेल । उदाहरण–'प्रसार' शब्दमे प्रथम रेफक लोप कयलासँ 'पसार' संस्कृतभव भेल । 'पर्वत' मे अकार आगम कयलासँ 'परबत' भेल । एवम् 'हल' शब्दक लकारक स्थान रेफ आदेश कयलासँ 'हर' शब्द । एहिमे आगमबाला थोड़ अछि, लोपादेश-बाला बहुत । तत्रापि संस्कृतभवमे सात प्रकार अछि, 1–लोप-मात्र, 2–आगममात्र, 3–आदेशमात्र, 4–लोपआगम, 5–लोपआदेश, 6–आगमआदेश, 7–लोपआगमआदेश तीनू । क्रमशः उदाहरण– 1–'पसार' रेफक लोपमात्र, 2–'पिरीति' इकारआगम मात्र, 3–'गर' केवल लकारक स्थन रेफादेश, 4–'परेम' प्रेमन् नकारक लोप तथा अकार आगम, 5–'सात' सप्तन् मे नकारक लोप ओ आकारकेँ दीर्घ आदेश, 6–'परान' अकार आगम ओ णकारकेँ नकार आदेश, 7–'सराध' दकारक लोप, अकार आगम, शकारकेँ सकार आदेश ।

उदाहरण देखाओल । आब कतय कोन विकार होइत अछि तकर दिक्प्रदर्शन करबैत छी । क्वचित् लकारकेँ रेफ; यथा, 'हल-हर', 'गल-गर', 'काल-कारी', 'पिप्पली-पीपरि', 'गालि-गारि', 'श्याल-सार', 'धूली-धूरा', 'शृगाल-सिआर' ।

क्वचित् टकारकेँ डकार; यथा, 'त्रोटन-तोडब' 'घोटक-घोडा', 'मोटक-मोडा', 'पर्पट-पापड', 'पाटला-पाडरि', 'कीट-कीडा', 'वीटी-बीडी', 'पटोल-पडोर' ।

क्वचित् तकारकेँ थकार; यथा, 'हस्त-हाथ', 'मस्त-माथ', 'पुस्तक-पोथी', 'मुस्त-मोथा', 'वास्तूक-बथुआ', 'प्रस्तर-पाथर' । संयुक्तमे व्यञ्जनक लोप ततः पूर्वकेँ दीर्घ सामान्य शास्त्रसँ सिद्ध अछि ।

'क्ष' केँ 'ख' वा 'च्छ' 'पक्ष-पख, पाँखि', 'अक्षि-आँखि', 'कुक्षि-कोखि', 'रूक्ष-रुख', 'बुभुक्षा-भूख', 'अक्षर-आखर, अच्छर', 'पक्ष-पख, पच्छ' ।

'द' केँ क्वचित् 'ड'; यथा, 'दर-डर', 'दंशन-डँसब', 'दण्ड-डाँड', ।

ऋकारके क्वचित् इकार; यथा, 'पृष्ठ-पीठ', 'वृश्चिक-बीछ' ।

संयोगमे पूर्व वर्णक लोप; क्वचित् परवर्णहुक; उभयत्र पूर्व स्वरकेँ दीर्घ;

यथा, 'मस्तक-माथ', 'हस्त-हाथ', 'हस्ती-हाथी', 'प्रस्तर-पाथर', 'कर्ण-कान', 'अर्क-आक', 'चर्मन्-चाम', 'सप्तन्-सात', 'गर्भ-गाभ', 'छत्र-छाता', 'पत्र-पात', 'यष्टि-जाठि', 'मुष्टि-मूठि', 'अग्नि-आगि' । क्वचित् दीर्घाभावो; यथा, 'पथ्य-पथ', 'अपभ्रंश-अभठ' ।

वर्गीय पञ्चमक लोप भेलापर पूर्व स्वरकेँ प्रायः अनुनासिक दीर्घ; यथा, 'अङ्क-आँक', 'वङ्क-बाँक', 'अङ्ग-आँग', 'जङ्घा-जाँघ', 'लङ्घन-लाँघ', 'पञ्चम-पाँच', 'वण्टन-बाँट', 'मुण्डन-मूडन' । वर्गपञ्चमोपेत संयोगमे अपञ्चमक यदि लोप तँ पूर्वकेँ शुद्धे दीर्घ हो अनुनासिक नहि; यथा, 'आङ' 'आङन' 'माण' 'कङाल' ।

संस्कृतभव शब्दक लेख उच्चरणानुकूले होयबाक चाही; यथा-जतय, जेना, जनौ, सब, परब, सरबसोख, सार, सेआन, बरख, बरखा, बरखी, इत्यादिमे मूलभूतसंस्कृतानुकूल य व श ष नहि, किन्तु उच्चारणानुसार ज ब स ख । एतबा अवश्य जे अप्राप्तविकारान्तरक जे शब्द गृहीत अछि, -यमुना, यशोदा, वानर, शोथ, शान्ति, षष्ठी, षट्चक्र, इत्यादि-ताहिमे यकारादिओ संस्कृतानुरूपे लिखबाक चाही । ओकर उच्चारण यथोचित वा चालिक अनुसार से दोसर विषय भेल ।

हमर मिथिलाभाषा प्राकृतहुक अनुच्छायापर बनल अछि । प्राकृतमे 'दुहितृ' शब्दक स्थान 'धी' शब्द मानल अछि, से हमरो भाषामे गृहीत अछि । एवम् 'यदा'क अभठ 'जइआ' अछि; तदनुकूल मिथिलाभाषहुमे 'जहिआ' शब्दे उचित, 'यहिआ' नहि । एवम् 'यस्य' क स्थान 'जस्स' प्राकृत थीक, तदनुसार यच्छब्दसिद्ध 'जसु' 'जकरा' 'जनिक' 'जे' 'जेना' इत्यादिए उचित, अन्तस्था य नहि । प्राचीन लेखहुमे तादृशे उपलब्ध होइछ ।

एहिपर यदि केओ कहथि जे बङ्गलाभाषा ओ मिथिला भाषा पूर्व तुल्ये जेकाँ छल ओ अछि तेँ रवीन्द्रनाथादिक जे नियम से मिथिलाभाषहुमे मन्तव्य । हुनका लोकनिक सिद्धान्त भेल अछि जे संस्कृतभवहुमे य व श तथा ष संस्कृतानुकूले रहय जाहिसँ संस्कृतमूलकत्व स्पष्ट हो । एहिपर वक्तव्य जे तादृश हुनकालोकनिक विचार मैथिलीसंप्रदायसँ विरुद्ध थीक तथा प्राकृतभाषो देशभाषासंपादनमे सहायक थीक एकर अपर्यालोचनमूलक थीक । हमरा भाषामे बङ्गलाभाषासँ साम्य अवश्य अछि, किन्तु हिन्दी भाषहुसँ तँ साम्य अछिए जकर विशेष विवरण 'हिन्दीभाषासँ साम्य' एहि शीर्षक लेखमे कहि आयल छी । हिन्दीभाषाक विद्वान्लोकनि तँ हमरे मतक समर्थक छथि, अतएव 'जहाँ' 'जिसको' इत्यादिए शुद्ध मानैत छथि । हमर विचार अछि जे जाहि देशमे यादृश लेख बहुत पूर्वसँ चल अबैत इदानींपर्यन्त अछि ओकर यथासम्भव समर्थने करबाक चाही; प्रचलित लेखसंप्रदायकेँ वृथा उनटएबाक नहि चाही । तस्मात् यच्छब्दभव 'जतय' 'जखन' इत्यादि मे तथा 'या' धातुभव 'जाइत'

इत्यादिमे वर्गतृतीय लेख्य । चरम सिद्धान्त जे संस्कृतभव शब्दमात्रमे उच्चारणानुकूले लेख कर्त्तव्य ।

देशी शब्द

देशी ओ कहबैत अछि जे शब्द ने संस्कृत वा प्राकृतसँ आयल अछि आ ने देशान्तरभाषासँ, किन्तु स्वतन्त्र मानल अछि; यथा 'छाती' 'पहुँचा' 'छकब' इत्यादि अनेक सहस्र शब्द देशी थीक ।

देशीमे द्विरुच्चारण

मिथिलाभाषामे क्वचित् नित्य क्वचित् वैकल्पिक वर्णद्वित्व होइत अछि; यथा 'घट्टी' 'बड्ढी', 'सकत-सक्कत', 'चटपट-चट्टपट्ट', 'अमत-अम्मत' 'अतर-अत्तर', 'गप-गप्प', 'दुबर-दुब्बर' । वर्णद्वित्व भेलापर 'झलां जश् झशि' एहि संस्कृत शास्त्रानुसार ओहिमे पूर्वस्थित वर्गद्वितीयवर्ण ओहि वर्गक प्रथम भय जाइत अछि, तथा चतुर्थवर्ण तृतीय भय जाइछ; यथा 'अक्खा' 'बग्घा' 'आकच्छ' 'दोसज्झा' 'ठट्ठर' 'बड्ढी' 'हत्था' 'गप्फा' । द्विरुक्तसँ पूर्वस्थ दीर्घ ह्रस्व भय जाइत अछि; यथा 'छीका-छिक्का', 'मूका-मुक्का', 'पाखा-पक्खा', जूता-जुत्ता', 'चूटी-चुट्टी' ।

विदेशी शब्द

विदेशी शब्द ओ थीक जे देशान्तर भाषासँ आबि मैथिलीमे मिश्रित भय गेल अछि, यथा 'हजूर' 'अगुबार' 'मिनट' । ई तीनू शब्द क्रमशः म्लेच्छभाषाक, हिन्दीक तथा अंग्रेजीक थीक । मिश्रण होएबाक हेतु थिक तत्तद्भाषाक प्रचुर प्रचार । क्षत्रियक राज्यमे तत्तद्देशीय भाषा भाषान्तरसँ असंकीर्ण छल । कारण जे ओ राजा सभ अपन भाषाक प्रचार राजाक कर्त्तव्य नहि बुझैत छलाह । किन्तु यवनक शासनमे ओ सभ अपन भाषहुक प्रचारमे यत्नशील भेलाह । न्यायालयादिमे म्लेच्छभाषासँ व्यवहार चलाओल गेल । ताहिसँ ओकर पठन-पाठन होअए लागल । ततः पर बहुधा व्यवहार चलबाक कारण 'हजूर' 'हाजिर' 'दरखास्त' 'दस्तगर्दा' 'दस्तखत' इत्यादि 'प्रभु' 'उपस्थित' इत्यादिशब्दापेक्षया गौरवान्वित बुझल जाय लागल । ततःपर गौराङ्ग राज्यकालमे उक्तरीत्या अँगरेजीभाषाक प्रचारसँ 'मिनट्' 'सेकेण्ड' 'हाफ' 'पाबर' इत्यादि अँगरेजी शब्दो मिथिलाभाषामे व्यवहृत होअए लागल अछि । पूर्व थोड़ कालक व्यवहार 'छन' 'घड़ी' 'पल' इत्यादि शब्दें होइत छल; यथा 'हमरा छनो भरि अवकाश नहि' 'पलखति नहि', 'एक घड़ी थमहू' । आब 'सेकेण्ड' 'मिनट' 'घण्टा'सँ व्यवहार चलल अछि । गौराङ्गशासन कालहिसँ अँगरेजी शिक्षामे उपकारार्थ ओहि सङ्ग हिन्दिओ भाषा पठन-पाठनमे आवश्यक भय जयबाक कारणें हिन्दीभाषाहुक प्रचुर प्रचार भेल । पूर्व मिथिलामे ओकर गन्धो नहि छल । हमर बाल्यावस्थासमयमे केओ-केओ अँगरेजीशिक्षापन्ने हिन्दीभाषा-पटु छलाह । हम जन्मतः अठारहम वर्षमे

अध्ययनार्थ काशी गेलापर ओतहि हिन्दी भाषा सीखल । आब तँ सर्वत्र बालको सभ मे अपन मातृभाषापेक्षया हिन्दीभाषहिंमे निपुणताक प्रयत्नशील देखल जाइत अछि । अस्तु, हमर कथ्य जे अँगरेजी तथा हिन्दीक अधिक प्रचारसँ ओहू दुहू भाषाक शब्द सभ जे मिश्रित भए गेल अछि से विदेशी भेल ।

विदेशी शब्द दू प्रकारक अछि—अनुरूप ओ तद्भव । 'हजूर' आदि अनुरूप भेल, 'नजरि' इत्यादि विदेशी 'नजर' आदि शब्दभव । हमरा एहि कोषमे विदेशी शब्द देबाक इच्छा नहि छल, तथापि बहुत व्यक्तिक आग्रहसँ थोड़ेक विदेशियो शब्द देल अछि ।

संस्कृत छोड़ि भाषामात्रक एक प्रधान स्थान होइत अछि । अम्बिकादत्त व्यास अपन कृत हिन्दी व्याकरणमे लिखने छथि जे हिन्दीक कोनो शब्दमे यदि सन्देह हो तँ नागर देशक बाजबसँ निर्णय करबाक थीक । तँस्मात् हिन्दीक केन्द्र नागर भेल । तकरा मिथिलासँ विभिन्नताक कारण हिन्दी शब्दकेँ हम विदेशी मानैत छी किन्तु कोषमे ओकर परिचय हिन्दी शब्दें लिखल अछि; बहुतमे छुटिओ गेल होएत ।

मैथिलीकोष कीदृश चाही

हमरा इच्छा छल जे मिथिलाषाक उन्नतिक हेतु एहन कोष बनाबी जाहिमे अकारादिक्रमें परिशुद्ध निखिल शब्दक संग्रह हो । मिश्रित विदेशी शब्दक यथासंभव त्याग कएल रहए । यदि रखबहिक आग्रह हो तँ ओहि हेतु दोसर खण्ड रहओ । अर्थनिर्देश यथासंभव मैथिली, हिन्दी, संस्कृत, तीनू शब्दसँ कएल जाय । विशेष शब्दमे लौकिको प्रयोग देखाओल रहय जे यथावत् अर्थक बोध हो । जे वस्तु जाहि गुणें उपादेय होइत अछि तकर उपादान कएल जाय । दृष्टान्त, पक्षीमे कोनो पक्षी प्रिय बजबाक हेतु ग्राह्य होइत अछि, यथा श्यामा; कोनो लड़बाक हेतु, यथा बुलबुल; कोनो मनुष्यजेकाँ बजबाक हेतु, यथा पहाड़ी मेना; कोनो तत्तज्जातीयकें भक्ष्यताक हेतु; कोनो सुन्दरताक हेतु । एवं प्राधान्यतः जाहि गुणें जे अपेक्षित होइछ से कहल रहए । एवम् जे फूल जाहि हेतु संग्राह्य होइछ, जाहि मासमे फुलाइत अछि, जेना लगैत अछि, जेहन फूल होइत छैक से परिचय यथासंभव देल जाइक । तथा कृतान्न, व्यञ्जन, मिष्टान्नादिक नामोल्लेख एहि रूपें कएल जाय जे एहि प्रकारें संपादित वस्तुक नाम अमुक । एवम् क्रीड़ासभक नाम ओही रीतिसँ लीखल जाय जे एहि रीतिसँ संपाद्य क्रीड़ा अमुक थीक, जाहिसँ ओकर स्वरूप अवगत हो । धान्यमे हलुकधना, गरुहन, इत्यादि परिचय; सर्पसे एतादृश विषाह इत्यादि । एवम् रत्नाहिअहुमे । सजातीय वस्तुक नामावली वर्गक्रमें फूटो लिखल रहय; यथा, मनुष्यवर्ग, मनुष्यावयववर्ग, गृहवर्ग, गृहावयववर्ग; एवम् रत्न, यान, अन्न, वस्त्र, भूषण, इत्यादि जाहिसँ इहो अवगत भय सकय जे एतबा मनुष्यक, एतबा भूषणाहिक नाम एहिमे अछि ।

एहि प्रकारक मैथिलीबृहत्कोष निर्मित भय यदि प्रकाशित हो तँ महान् उपकारक होयत, संस्कृतव्यवहारहुमे उपकार पहुँचत । तस्मात् एतादृश कोष अनेक विद्वान् मीलि अवश्य बनाबथि । हम तँ एकाकी तादृश मनोऽभिलषित कोष नहि बनाय सकलहुँ, स्वल्पाकारे बनाओल । मैथिलबन्धुवर्ग सूर्यक अभावमे दीपवत् एहि कोषक आदर अवश्य करताह से आशा अछि ।

कोषक निर्माणमे साहाय्य

एहि मिथिलाभाषाकोषक निर्माणमे 500) रुपैया राघवपुरक हरिनन्दन सिंह मेमोरिअल ट्रष्टसँ हमरा देल गेल, जाहिसँ छपयबामे बहुत सहायता पहुँचल । एहिसँ अतिरिक्तो जे एहि कोषक मुद्रणमे खर्च पड़ल सेहो सभटा परमकृपया बाबू श्रीकृष्णनन्दन सिंह महोदयसँ सहज हमरा भेटल ।

ट्रष्टक निर्माण

राघवपुरक बाबू श्रीयदुनन्दन सिंह महोदयक सुयोग्य पुत्र बाबू श्रोहरिनन्दन सिंह महोदयकेँ साहित्यमे विशेष प्रेम तथा पूर्ण योग्यता छलैन्हि । अत: हुनक सुयोग्य पुत्र परमोदारचरित बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंहमहोदय हुनक कीर्त्यर्थ हुनका नामेँ ट्रष्टक स्थापना कएल, जाहिसँ मिथिलाकसाहित्यकुसुम विकसित भय रहल अछि । एहि संस्थाक स्थायिता रूपेँ विधानसँ बराबरि मैथिलीसाहित्यक अभ्युन्नति होइत रहत, यदि अधिकारापन्न विचारक लोकनि यथोचित समय-समय पर एकर सञ्चालनमे आलस्य नहि करथि । एहिमे सर्वाधिकार विचारक लोकनिक उपर निर्भर अछि ।

ट्रष्टसँ पूर्व पुरस्कार

ई ट्रष्ट जाहि समयमे स्थायिताक हेतु राजस्वीकृत कराओल गेल तत:पूर्वहिसँ तत्सम्बन्धी पुरस्कारात्मक कार्य आरम्भ भय गेल छल । ओहिसँ अद्यावधि चारि विषयक रचनामे पुरस्कार वितीर्ण भेल अछि (1) मैथिलीव्याकरण, (2) मिथिलाक इतिहास, (3) शतदलकाव्य (मधुपकृत) ओ (4) मिथिलाभाषाकोष ।

ट्रष्टक संक्षिप्त परिचय

नाम:– हरिनन्दन सिंह मेमोरियल ट्रष्ट ।

स्थापक:–बाबू श्री कृष्णनन्दन सिंह, राघवपुर, दरभङ्गा ।

उद्देश्य:–(1) पुस्तकालय तथा संग्रहालयक स्थापना, जाहिमे (क) समीक्षा (ख) भारत ओ मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास (ग) योगदर्शन (घ) दर्शनसभक समन्वय (ङ) व्यावहारिक दर्शन (च) मैथिलकृत सकल भाषाक रचना (छ) मैथिली भाषाक निखिल ग्रन्थ (ज) सिद्धान्त ज्यौतिष (झ) शान्तिमार्गाश्रित व्यक्तिक जीवनी (ञ) भ्रमणवृत्तान्त इत्यादि विषयक ग्रन्थक संग्रह रहत ।

(2) मैथिलीमे विशिष्ट रचनापर 250) सँ 500) पर्यन्त पुरस्कार । पुरस्काराई रचनाक विषय रहत–(क) प्रामाणिक मैथिली व्याकरण, (ख) प्रामाणिक मैथिलीकोष, (ग) मिथिलाक सांस्कृतिक इतिहास, (घ) आधुनिक महाकाव्य, (ङ) जनप्रिय काव्य ओ नाटक, (च) आधुनिक दार्शनिक निबन्ध, (छ) मिथिलाक उन्नतिक उद्बोधक उच्च कोटिक उपन्यास, (ज) अलंकार निरूपण, (झ) अंग्रेजीक प्रसिद्ध-प्रसिद्ध तेहन ग्रन्थक· अनुवाद जे मैथिली साहित्यक विकासक तथा स्वसभ्यताक संघटनामे उपकारक हो ।

(3) दोसरा-दोसरा वर्षपर दार्शनिक ओ सांस्कृतिक व्याख्यान, जाहिमे व्याख्याताक पुरस्कार 500) सँ 1000) धरि रहत ओ व्याख्यानलेखमुद्रण ट्रष्टक अधीन रहत ।

अन्तमे उक्त बाबू साहेबक औदार्य तथा मैथिलीमे अनुपम अनुरागक भूरि-भूरि प्रशंसा कए सकलशक्तिमान् सच्चिदानन्द घन श्री विष्णुभगवान्सँ प्रार्थना करैत छी जे एहि बाबू साहेबकाँ सर्वार्थे परिपूरिताभिलाष बनओने रहथि ।

संवत् 2008 वि०　　　　　　　　　　श्री दीनबन्धुः

अथ मिथिलाभाषाकोषः

नत्वा जनकसुतायाः पदकमलं दीनबन्धुरभिरामम् ।
मिथिलाभाषाकोषं तनुते तोषं सतां कलयन् ॥
वैदेहीपदकमलनत हेतु धीरजनतोष ।
दीनबन्धु निर्मित करथि मिथिलाभाषाकोष ॥

अ

अँः–अ, परोक्त वाक्यार्थमे अस्वारस्यजन्य क्रोध ।
अए–अ० सादर स्त्रीक संबोधन ।
अएँ–अ० पुनःश्रवणेच्छा १ । विस्मय २। क्रोध ३ ।
अओ–अ० सादर पुरुषक संबोधन ।
अओरा–धात्रीफल, हिं, आँवला ।
अकचकाएब–क्रि० अकचक्+अब-साश्चर्य इतस्ततः ताकब ।
अकचकाह–साश्चर्य इतस्ततः प्रेक्षणकर्ता ।
अकच्छ–वारंवार क्रियासँ हतोत्साह ।
अकछाएब–अकच्छ होएब ।
अकट–अखण्डनीय १ । गुरुपाकी २ ।
अकटकाँट–साफ नहि कएल ।
अँकटा–अन्नविशेष ।
अकट्टी–हास्यास्पदा अधिक बजनिहार ।
अकठ–साँखुप्रभृति सुकाठसँ भिन्न काठ ।
अँकडा–बिना छाँटल (चाउर) ।
अकडा लागब–क्रि० लग+अब-शिराक रोगविशेष ।
अँकडाह–किञ्चित् आँकड १ । आँकड्+आह-आँकडसँ युक्त २ ।
अकतिआर–वि० शक्ति ।
अकथ–अकथ्य ।
अकनाएब–क्रि० अकनब्+अब-कान एकाग्र कय सुनब ।
अकबक–किछु नहि फुरब ।
अकबारब–क्रि० अकबार+अब-पाँजमे लेब ।
अकर–सं० पोतसँ शून्य खेत १ । तादृश राजा, स्वतन्त्र २ ।
अकरकचाह–साफ नहि कएल (खेत)।
अकरकन / **अकरकनाह** – साफ नहि कयल । (अन्न)
अकराएब–क्रि० अकरब्+अब-अयोग्य क्रियासँ अयश पाएब ।
अकराओन–घृणास्पद (जगह) ।
अकरी–कर्माक्षम, अकर्मण्य ।
अकरोठ–अक्षोट मेबाविशेष ।
अकर्मण्य–सं० कर्माक्षम ।
अकर्मी–अपकर्मकारी ।
अकसक–अधिक भरबाक कारण सक्लेश पेट ।
अकसकाएब–क्रि० अकसक्+अब-अधिक पेट भरलासँ श्वास-गतिमे क्लेश पाएब ।
अकसकी–पेटक अतिपूर्तिसँ श्वास-गतिमे क्लेश ।

अकस्मात्–अ० सं० दैवात्, हि. अचानक।
अकहुत्थ–अतिविशाल (निन्दामे) ।
अकाट्य–नहि कटबाक योग्य (वचनादि) ।
अकादारुण / **अकादारुन** – अतिविशाल (निन्दामे)
अकान–सुनबामे असावधान स्वभावक ।
अकानब– क्रि० अकान्+अब–अकनाएब, कान एकाग्र कय सुनब
अकाबोन–दुर्ग जङ्गल ।
अकाल–दुर्भिक्ष समय १। अनवसर २।
अकास–आकाश ।
अकासकाँकोड़–निन्दनीय (मनुष्य) ।
अकासदीप–आकाशदीप ।
अकासी देब–क्रि० अकासी द+अब-वृथा आकाश दिश ताकब ।
अकासी वृत्ति–अनिश्चित जीविका ।
अकारथ–अकृतार्थ, व्यर्थ ।
अकिल–वि० बुद्धि ।
अँकुरब–क्रि० अँकुर+अब-अङ्कुरयुक्त होएब।
अँकुरा–अङ्कुर ।
अँकुरी–अँकुरायोग्य भिजल दलिहन ।
अकुलाएब–ना० आकुल+अब-व्याकुल होएब ।
अँकुसी–अङ्कुशसदृश लाक्षालंकरण १ । फल तोडबाक लग्गीक मोरल अवयव २ ।
अकोल–सिकस्त जगह ।
अक्खा–बोरा, सं० गोणी ।
अक्री–अकर्मण्य ।
अक्लेश–विना श्रम ।
अखज–वि० शत्रुता।
अखड़ब–क्रि. अखड्+अब संनद्ध होएब ।
अखड़हा–दङ्गलभूमि १ । बाबाजीक स्थान २ ।
अखड़ा–मेही नहि पीसल (अन्न आदि)।
अखढ़–डाभीप्रभृति उपयुक्त तृणसँ आन तृण ।
अखढ़िआ / **अखढ़िया** –अखाढ़ा पर शिक्षित । नहि अगुतएनिहार ।
अखत–पत्रविशेष ।
अखतनामा–लेखविशेष ।
अखरकट्टू–अक्षर लिखबामे कच्चा ।
अखरताली–हस्ताक्षर लेख ।
अखरोट–अक्षोट; फलविशेष ।
अखाढ़–आषाढ़ मास ।
अखाढ़ा–अखड़हा-दङ्गल वा व्यायामक हेतु कोड़ल भूमि १। बाबाजीक स्थान २ ।
अखारब–क्रि० अखार्+अब-आक्षालन प्रक्षालन ।
अँखिआएब–ना० आँखि + अब= अँखिअब्+अब=दुष्ट दृष्टिसँ ताकब ।
अँखिउट्ठी–आँखि उठब, अक्षिरोग-विशेष ।
अँखिगर–उ० देखबासँ वस्तुतत्त्ववेत्ता ।
अँखिफोड़ा–कीटविशेष ।
अँखिमुन्नी–क्रीड़ाविशेष ।
अखुआ / **अँखुआ** – करचीक वंशस्थ मूलाधार ।
अगओँ–ब्राह्मणकेँ देबाक हेतु प्रथम उद्धृत अन्न ।
अगड़बाला–अग्रबाल जातिविशेष ।
अगड़ाही–दावानल ।

अगण्य–सं० गणनाक अयोग्य ।
अगता–पूर्व उपजनिहार (अन्न) १। अग्रतः बधिआ कएल (घोड़ा) २ ।
अगत्ती–अधिक उकठ कएनिहार ।
अगत्त्या–सं० उपायक अभावेँ ।
अगधाएब–क्रि० अगध्+अब–अतितृप्ति वा गर्वसँ अनिच्छा प्रकाश करब ।
अँगनइ–छोट आँगन ।
अँगनैत–आँगनक मालिक ।
अँगपोछा–अङ्गप्रोञ्छिका, अङ्ग पोछबाक वस्त्र ।
अँगबरिआ–हरबाहसँ आन हरक सङ्ग रहनिहार (जन) ।
अगबा–केवल, अन्नान्तरसँ अमिश्रित एक विध (अन्न) ।
अगबास–वासक अगिला भूमि ।
अँगबाह–उ० चलबामे सङ्ग रहनिहार ।
अगम–अगम्य ।
अगर–अगुरु, वृक्षविशेष ।
अँगरखा–अङ्गाकार पहिरबाक वस्त्र ।
अँगरखी–छोट अँगरखा ।
अगरमस्त–औषधविशेष ।
अगराएब–क्रि० अगर् + अब–आनन्दजन्य निन्दित चेष्टा करब ।
अगरेस–अग्रेसर, मुख्य ।
अगरैल–फुलक थारीक प्रभेद ।
अगल-बगल–एम्हर ओम्हर ।
अगस्ति–सं० पुष्पविशेष ।
अगहड़ी–अग्रखण्ड, केराक अखण्डित सौँस पात ।
अगहन–आग्रहायणिक, कातिकसँ अगिला मास ।
अगहनी–अगहनक उपजा ।
अगहनुआ–अगहनमे तैआर भेल चाउर आदि ।
अगहरा–अग्रहार ।
अगाउ–अग्रिमक हेतु देय वा दत्त । पेशगी ।
अगाओँ–अगओँ । ब्राह्मणोद्देश्यक प्रथम उद्धृत (अन्नादि) ।
अगाड़ / **अगाड़ी** } – वंशादिक अग्रभाग ।
अगिआ–आगि तपलासँ उत्पन्न चिह्नविशेष ।
अगिआ-बेताल–अधलाह काज तीव्र वेगसँ कएनिहार, बहुत क्रोध कएनिहार । उद्दण्ड ।
अगिआसी–तपबाक हेतु आगि ।
अगिआह–आनक नीक नहि सहनिहार १ । ढेरी में ताप स्वभावक (नार आदि) २ ।
अगिनझम्प–पुष्पविशेष ।
अगिनबान–व्रणविशेष ।
अगिमुत्तु–आनक अधलाह कार्य कयनिहार ।
अगिलकण्ठ–अधलाह कथा बजनिहार ।
अगिलग्गी–आगि लगनाइ ।
अगिलह–उ० झगड़ लगओनिहार, उत्पाती स्त्री अगिलहि ।
अगिला–उ० अग्रिम उ० स्त्री अगिली ।
अगिलेसू–अगिल्बह, उत्पाती ।
अगुअति–घरक अगिला चार ।
अगुआ–अग्रेसर, आगाँ भेनिहार १ । एक प्रकारक लाक्षालंकरण २ ।
अगुआएब–ना० आगु + अब–आगाँ जाएब ।
अगुआड़–गृहक अगिला अवकाश ।

अँगुठा–अङ्गुष्ठ, हाथ पाएरक बुढ़बा आङ्गुर ।
अँगुठी–अङ्गुरीयक, आँगुरक भूषण ।
अगुताइ–शीघ्रता ।
अगुताएब–क्रि० अगुत्+अब–शीघ्रता करब ।
अंगुताह–उ० शीघ्रता कएनिहार ।
अगुबार–हि० आगाँक हेतु । अगाउ ।
अँगुरकट्टा–आँगुरक रोग विशेष ।
अँगुरी–अङ्गुली, आँगुर ।
अँगेजब–क्रि० अँगेज्+अब–अङ्गहित करब, सह्य करब ।
अँगैठी–अङ्गारधानी, आगि रखबाक पात्रविशेष १। अङ्गक ऐँठब २।
अँगैठीमोड़–अङ्गक ऐंठब ।
अँगोछ–अँगपोछ, अङ्ग पोछब ।
अँगोठ–अङ्गोष्ठ, अङ्गक आकार ।
अगोरब–क्रि० अगोर+अब–रक्षा करब ।
अँगोरा–अङ्गार, पजरल काष्ठखण्ड ।
अग्निझम्प–पुष्पविशेष ।
अघट–घाटसँ भिन्न तट ।
अघनुआ–अगहनमे भेल (चाउर आदि)।
अघाएब–क्रि० अघ्+अब–उमठब, तृप्त होएब ।
अघोर–अघोरमतावलम्बी साधु १ । हुनक क्रिया २ ।
अघोरी–उ० अघोरमतावलम्बी ।
अङनइ–छोट आँगन ।
अङनैत–आँगनक मालिक ।
अँङपोछ–अङ्ग पोछब ।
अङपोछा–अङ्ग पोछबाक वस्त्र ।
अङबरिआ–हरक सङ्ग आरि छटनिहार जन ।
अङबाह–हरक संग काज कयनिहार (जन) ।
अङरखा–अङ्गाकार वस्त्र ।
अङरखी–छोट अँगरखा ।
अङुठा–अङ्गुष्ठ ।
अङुरकट्टा–आँगुरक रोगविशेष ।
अङुरी–अङ्गुली, आँगुर ।
अङेजब–क्रि०अङेज्+अब–अङ्गहित करब, सह्य करब ।
अङैठी–अङ्गारधानी, आगि रखबाक पात्र १ । अङ्गक ऐँठब २ ।
अङैठी मोड़–अङ्गक ऐँठब, मोडब ।
अङोछ–अङ्ग पोछब ।
अङोठ–अङ्गसादृश्य ।
अङोरा–अङ्गार ।
अङ्क–सं० आँक ।
अङ्कुर–सं० अँकुरा ।
अङ्कोल–सं० औषधिविशेष ।
अङ्ग–सं० आँग, शरीरावयव ।
अङ्गा–शरीराकार वस्त्र ।
अङ्गित–अपेक्षित (व्यक्ति) ।
अङ्गूर–द्राक्षा, फलविशेष ।
अचक / **अचक्क** } – अ० अचानक ।
अचक्की–अकचकाह ।
अचम्भा–भाँड़ रखबाक वंशरचित आधार ।
अचरज–आश्चर्य ।
अँचरा–बालिकाकेँ पहिरबाक छोट वस्त्र विशेष ।
अँचरी–छोट आँचर १ । चारमे जोड़ल भाग २ ।

अँचरौंत–रक्ताञ्चलक वस्त्र ।
अचल–सं० नहि चलनिहार ।
अचलभारथी–(ती) नहि चलनिहार (निन्दामे) ।
अँचाएब–क्रि० अँचब्+अब-हस्तमुख प्रक्षालन करब ।
अचाश्चक / **अचानक** } – अ० दैवात् ।
अँचार–आम्रादि फलक सलवण साधित खाद्यविशेष ।
अचेत–संज्ञाहीन।
अच्छत–अक्षत, पूजार्थ धोएल चाउर ।
अच्छर–अक्षर, आखर ।
अछओँ–ग्रहणक अनिच्छा, अतितृप्ति ।
अछताएब–क्रि० अछतब्+अब-पछताएब ।
अछार–अल्पकालिक सुवृष्टि ।
अछारब–क्रि० अछार्+अब-पानिमे बीआ बाओग करब ।
अछाह–छाया ।
अछिआ–चिताक चूल्हि ।
अछिनज़ल–अच्छिन्न जल, शूद्रास्पृष्ट जल ।
अछोप–अस्पृश्य चाण्डालादि जाति ।
अजग–अयज्ञक, अनुत्सृष्ट (पोखरि प्रभृति) ।
अजगर–सर्पविशेष ।
अजगुत–अयुक्त, अद्भुत ।
अजगेबी–आश्चर्य ।
अजन–अधलाह लोक ।
अजबारब–क्रि० अजबार+अब-शून्य करब।

अजब–वि० आश्चर्य ।
अजबारि–वस्तुयुत (पात्र) १ । वस्तु शून्य (पात्र) २ ।
अजमाएब–क्रि० अजमब्+अब-जाच करब।
अजराजोरी–जबरदस्ती, बलात्कार ।
अज़स–अयश, अकीर्ति ।
अजस्त्र–अजस्त्र, बहुत ।
अजान–अज्ञान ।
अजिआ सासु–सासुक सासु ।
अजीर्ण–सं० पेटमे अन्नक विपाक ।
अजुका–अद्यतन, आइ भेल (वस्तु) ।
अजूरा–वेतन, भारा ।
अजेगर–सर्पविशेष ।
अजोध–विशाल सर्प ।
अजोह–अपक्व, बिनु जोआएल (फल)।
अज्ञान / **अज्ञानी** }–सं०-ज्ञान शून्य, अविचारी ।
अझक / **अझक्क** }– अ०-किञ्चित् देखब ।
अञ्चोक–अचिन्तितावसर ।
अञ्जस–लेश (आन्तर ज्वरादिक) ।
अञ्जीर–मेबा, फलविशेष ।
अँटकब–क्रि० अँटक्+अब-गतिनिवृत्ति ।
अँटकर–अन्दाज ।
अँटका–जगन्नाथ प्रभृतिक नियत भोज्य ।
अँटकाओ–प्रतिबन्धक वशात् रहनाइ ।
अँटकारब–क्रि० अँटकार+अब-अन्दाज करब ।
अटपट / **अटपटाँग** / **अटपटाङ** }– अण्टबण्ट ।

अँटब–क्रि० अँट्+अब-समावेश होएब ।
अटल–नहि टरनिहार, दृढ़ ।
अँटाबेसं–समावेश ।
अटारी–अट्टालिका, कोठाक छत ।
अँटिआएब–ना० आँटी+अब्=अँटिअब् + अब्-आँटी बान्हब ।
अटूट–अत्यधिक ।
अटोर–संग्रह ।
अठकपारि–विघ्नाक्रान्त, अलच्छ, अभागल ।
अठकोसल–आठ व्यक्तिक मन्त्रणा, गुप्त मन्त्रणा ।
अठगोड़बा–कीटविशेष ।
अठतालीस–अष्टचत्वारिंशत्, आठ अधिक चालीस ।
अठतालीसम– अष्टाचत्वारिंशत्तम अठतालीसक पूरक ।
अठतीस–अष्टत्रिशत्, आठ अधिकतीस ।
अठतीसम–अष्टत्रिंशत्तम, आठ अधिक तीसक पूरक ।
अठन्नी–अष्टाणकी, आठ आनाक राजत मुद्रा ।
अठबभना–उपनयनमे आठ ब्राह्मणक भोजन ।
अठसट्ठि–अष्टषष्ठि, आठ अधिक साठि।
अठसट्ठिम–अष्टषष्टितम, आठ अधिक साठिक पूरक ।
अठाइस–अष्टाविंशति आठअधिकबीस ।
अठाइसम–अष्टाविंशतितम, आठअधिक बीसक पूरक ।
अठाबन / **अठाबन्न** }– अष्टापञ्चाशत्, आठ अधिक पचास ।

अठाबन्नम–अष्टापञ्चाशत्तम, अठाबन्नक पूरक ।
अठारह–अष्टादश, आठ अधिक दश ।
अठारहम–अठारहक पूरक ।
अठासी–अष्टाशीति, आठ अधिक अस्सी ।
अठासीम–अष्टाशीतितम, अठासीक पूरक।
अँठिअमत / **अँठिअम्मत** }– अष्टयम्ल, आँठीमे अम्मत ।
अँठिआ / **अँठिया** }– अनुचित आँठी सँ युक्त [अँठिआ केरा]
अठुलाहि – स्त्री० अभिमानिनी, गौरबाहि।
अठैत–सर्पविशेष ।
अठोँगर / **अठोङर** }– ब्राह्मणक विवाहमे प्रसिद्ध कर्मविशेष ।
अठ्ठा–तासक आठम फर्द ।
अठ्ठाइस–अष्टाविंशति, आठ अधिक बीस।
अठ्ठाइसम–अष्टाविंशतितम, अठ्ठाइसक पूरक ।
अँड़कोस–अण्डकोष ।
अड़खीस–कानि, द्वेष ।
अड़चन–हि० बाधा ।
अड़ब–क्रि० अड्+अब-गतिकेँ रोकब, अवरुद्धगतिक होयब ।
अड़रनेबा–फलविशेष । हि० पहपीता ।
अडराएब–यत्रकुत्र कथा बाजब १ । घूमब २ ।
अँड़री–एरण्ड, हि. रेँडी ।
अड़सट्ठा–प्रमाणपत्रविशेष ।
अड़सा–विलम्ब ।
अडाँच–दू ठाठक एकत्र बान्ह ।
अडाँचब–क्रि० दू ठाठकेँ एकठाम बान्हब।

अडाँची–एला ।
अडाँचीदाना–मिष्टान्नविशेष ।
अड़ानी–अड़एबाक वस्तु ।
अड़ारा–नदीक तट ।
अड़ारि–कण्टकविशेष १ । मनमे झगड़ा राखब, अडखीस २ ।
अँड़िआ, **अँड़िया** – अण्डकोषयुक्त (बड़द आदि) ।
अँडुआर–मालक पैघ थन ।
अड़ोपब–क्रि० अड़ोप्+अब–आरोप करब, साग्रह निश्चय करब ।
अड्डबड्ड–अण्टबण्ट, व्युत्क्रम ।
अढ़–व्यवधान ।
अढ़इआ, **अढ़इया** – अढाए सेरक बटिखारा ।
अढ़ाएब–क्रि० अढ़ब्+अब–प्रवृत्ति कराएब ।
अढ़ाए, **अढ़ाय** – अद्धयर्द्धद्वि, आधा अधिक दू ।
अढ़ाहिस्सी– अन्यक अकरण जन्य क्रोध सँ तत्सम कार्यक अकरण ।
अढ़िआ, **अढ़िया** – पादप्रक्षालनक पात्र-विशेष ।
अढीठ–अनिर्भय ।
अढ़ैआ–अढ़ाए सेरक बटिखारा ।
अढ़ैपँजरा, **अढ़ैपाँजर** – मालक रोग विशेष ।
अढैया–अढाय सेरक बटिखारा ।
अढैहत्थी–अढ़ाए हाथक लाठी ।
अणाच–दू ठाठक एकत्र बान्ह ।
अणाचब–क्रि० अणाच्+अब–दुइ ठाठकेँ मिलाए बान्हब ।
अणाची–एला, हि० इलायची, फल-विशेष ।
अणाचीदाना–मिष्टान्नविशेष ।
अणिआ–अण्डकोश सँ युक्त (बड़द) ।
अणुआर–मालक पैघ थन ।
अण्ट बण्ट, **अण्ट सण्ट** – असम्बद्ध ।
अण्टा–सीर चलबाक हेतु ठारिमे माटि ।
अण्टोटल–असम्बद्ध अप्रिय (बात) ।
अण्टोटाह–उ० असम्बद्ध अप्रिय कथा बजबाक स्वभाव वाला ।
अण्ठाएब, **अण्ठायब** – क्रि० अण्ठब्+अब-उपेक्षा करब ।
अण्ठिआ, **अण्ठिया** –समाजसँ आन अपरिचिति ।
अण्डकोष–सं० अँड़कोस ।
अण्डवृद्धि–सं० अण्डकोषक वृद्धि ।
अण्डा–अण्ड, गर्भसँ निःसृत सजीव गोल ।
अण्डी–एरण्ड, अँड़री ।
अतए–अतः ।
अतर–सुगन्धि द्रव्यविशेष, हि. इत्र ।
अतरदान–अतर रखबाक पात्र ।
अतरबात–छारबामे एक एक बाती छोड़ि स्थापित बाती ।
अतराएब–क्रि० अतर्+अब–अन्तर कय जनमब ।
अँतरी–अन्त्र, भोँटी ।
अतिखाइन–कि श्चित् कषाय, कनिएँ आतिख ।
अतिथि–सं० अभ्यागत ।

अतिरिक्त–सं० भिन्न ।
अतिवृद्धप्रपितामह–सं० वृद्ध प्रपितामहक पिता ।
अतिवृद्धप्रमातामह–सं० वृद्ध प्रमातामहक पिता ।
अतिसय, **अतिसैँ** – अतिशय ।
अतीस–अतिविषा, ओषधिविशेष ।
अत्ता–फलविशेष ।
अत्यन्त–सं० अतिशय ।
अथक, **अथक्क** – नहि थकनिहार ।
अथबल–उ० अस्तबल, पाएरक अयोग्यतादि कारणें चलबामे अक्षम ।
अथाह–अगाध, जकर थाह नहि पाबी।
अदण्ड–अनुचित दण्ड १ । समुचित सँ अधिक (खर्च) २ ।
अदत्त–अतिकृपण ।
अदना–साधारण, अनबूझ ।
अदनार–काँच दानासँ युक्त (धान) ।
अदन्त–बिना दाँतक (माल) ।
अदव–वि० प्रताप ।
अदरदिआह–उ० अदृढ़ ।
अदलबदल–हेरी-फेरी ।
अदलहिसाब–वि० बिना हिसाबक ।
अदलहुकुमी–वि० आज्ञाभङ्ग ।
अदालति–न्यायार्थ निवेदन ।
अदिना–भदबा ।
अदृष्ट–सं० भागधेय ।
अदृष्टघट्टू–अभागल ।
अदौ–अ० सनातन (वास) ।
अदौरी–संहित खाद्यवटीविशेष ।
अद्धी–आधा पाइ ।
अद्भुत–सं० आश्चर्य ।
अधओड़–आध खण्ड ।
अधकट्टी–रसीदक आधा खण्ड ।
अधकपन, **अधकपना**, **अधकपनी** – धृष्टता ।
अधकपारी–रोगविशेष ।
अधक्की–धृष्ट ।
अधखँड़–खण्डित ।
अधङ्ग, **अधङ्गी** – पक्षिविशेष ।
अधडँड़ेर, **अधडणेर** – शरीरक मध्य भाग ।
अधनट–नटखटाह, योग्यता राखि आनक उपकार नहि कयनिहार मलिन मनक ।
अधनफ्फी–जाहि मालमे आधा नफा हो ।
अधन्नी–आध आनाक मुद्रा ।
अधपइ, **अधपै** – आध पाओक बटिखारा वा नपना ।
अधबएसू, **अधबयसू** –अर्द्धवयस्क ।
अधबहुआँ–आधा बहुआँबाला (अङ्ग)।
अधबाड़–पृथक् आधा कएल ।
अधबोलिआ, **अधबोलिया** –आधा शब्दक अनुच्चारण कए शिशुक बाजब, वा तादृश बजनिहार ।
अधम–सं० अधलाह ।
अधमोनी–आध मोन प्रमाणक (पथिआ वा बटिखारा) ।

अधरति–अर्द्धरात्र, निशीथ ।
अधरतिआ–निशीथमे उगनिहार (तारा)।
अधरम–अधर्म ।
अधरमी–अधर्मी ।
अधर्म–सं० पाप ।
अधर्मी–सं० पापी ।
अधलाह–असुन्दर, दुष्ट ।
अधसर–सर्पविशेष ।
अधसेरा / **अधसेरी** } – आधा सेरक बटिखारा वा नपना ।
अधाठी–कोदारिक छओ भरिक प्रमाण।
अधिक–सं० बेशी ।
अधिकरास–अत्यधिक ।
अधिकार–सं० सामर्थ्य १ । विवाहबाधक सम्बन्धाभाव २ ।
अधिकारमाला–विवाह बाधक सम्बन्धाभाववान् व्यक्तिक नामावली ।
अधिकांश–सं० अधिक भाग ।
अधीन–सं० स्वायत्त ।
अधेड़–आधा खण्ड ।
अधोखा / **अधोखी** } – गृहाङ्गविशेष ।
अधोड़ / **अधओड़** } – अधबाड़ ।
अनकट–नहि कटबाक योग्य ।
अनखुनाह–उ० आनक नीक नहि देखनिहार, स्त्री अनखुनाहि ।
अनगनित–अगणित ।
अनगुति–अनुदित, अति प्रात:काल ।
अनगौआँ–आन गाममे बसनिहार ।
अनघोल–अधिक घोल ।

अनचिन्हार–अपरिचित ।
अनजान–अज्ञान ।
अनट–बेरबाद ।
अनट-बनट / **अनट-सनट** } – असमीचीन, अनर्गल ।
अनटोटल–असंबद्ध ।
अनठेकान–बिना ठेकान ।
अनत–अन्यत्र ।
अनतए–अन्यकेँ, अन्यत्र ।
अनठीआ–अन्यत्र स्थित ।
अनतए / **अनतय** } – अव्य. अन्यत्र ।
अनदिना–अवसरशून्य दिन ।
अनधना–धानमे मिश्रित आन धान ।
अनधुन–बिना ठेकान, विनाविचार ।
अनन्त–सं० अन्तहीन ।
अनन्तमूल–ओषधिविशेष ।
अनपरासन–अन्नप्राशन, प्रथम अन्नभक्षण।
अनबाह–हरबाहक पाछाँ रहनिहार (जन)।
अनबिसबास–अविश्वास ।
अनबूझ–अबोध ।
अनभरोस–अनाशा ।
अनभुआर–स्थानादिसँ अपरिचित ।
अनमना–अन्यमनस्कता, क्रीडादिसँ मन बहटारब ।
अनमनाएब–क्रि० अनमन् – अब– अप्रसन्नमनस्क होएब ।
अनमनाह–उ० अन्यमनस्क होएनिहार ।
अनमूह–बजबामे अप्रौढ़, मुहसच्छ ।
अनमेल–विसदृश, जाहिमे जकर मेल नहि खाए ।

अनमोल–अमूल्य ।
अनरस–खाएल अन्नक विपाक ।
अनरसा–मिष्टान्नविशेष ।
अनर्गल–असंगत ।
अनर्थ–अन्याय ।
अनवसर–सं० अयोग्य समय ।
अनसथरि–अधलाह स्थान ।
अनसाह–असूयायुक्त, आनक नीको काजमे दोष लगओनिहार ।
अनसुन / **अनसुनी** } – अश्रवण ।
अनसोहाँत–अप्रिय ।
अनहद–अत्यन्त ।
अनहोनी–असम्भाव्यक होएब ।
अनाइत–अनायत्त, दैवात् ।
अनाज–अन्न गेरह ।
अनाथ–सं० अशरण ।
अनायत–अत्याज्य सम्बन्धिक ।
अनारसा–मिष्टान्नविशेष ।
अनारी–अज्ञ ।
अनुगुति–अनुदित, अति प्रात:काल ।
अनुखन–अनुक्षण
अनुचित–सं० असमीचीन ।
अनुपान–कदलीविशेष १ । औषध खाय खायब २ ।
अनुपी–पुष्पविशेष ।
अनुभव–सं० तर्क ।
अनुमान–सं० तर्क ।
अनुरूप–सं० अत्यन्त सदृश ।
अनुरोध–सं० रोच १ । इच्छा २ ।
अनुसन्धान–सं० अन्वेषण १ । स्मरण २ ।
अनुसार–सं० रीति ।

अनूप–अनुपम ।
अनेक–सं० नाना ।
अनेर–अ० निष्कारण, वृथा १। अरक्षित २।
अनेर धुनेर–अरक्षित ।
अनोन–लवणहीन १ । स्वल्प नोन सँ युक्त २ ।
अन्त–सं० अवसान ।
अन्तकाल–सं० अवसान काल १ । मरणकाल २ ।
अन्तय–अ० अन्यत्र ।
अन्ता–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।
अन्तिम–सं० अवसानभव ।
अन्दर–वि० अभ्यन्तर ।
अन्दाज–वि० तर्क ।
अन्दाजब–क्रि० अन्दाज्+अब-तर्क करब।
अन्देसा–अनिष्टशङ्का ।
अन्न–सं० धान आदि ।
अन्नप्रासन–अन्नप्राशन, प्रथम अन्नभक्षण ।
अन्नर–अभ्यन्तर ।
अन्यथा–सं० अ० आन प्रकारेँ ।
अन्याय–सं० न्यायसँ अपेत ।
अन्यायी–सं० अन्याय कयनिहार ।
अन्वेषण–सं० गवेषण ।
अन्हरजाली–यथार्थ बुद्धिक प्रतिबन्धक बुद्धिविकार ।
अन्हराएब–क्रि० अन्हर्+अब-अन्धकार युक्त होएब ।
अन्हरिआ– अन्धकारयुक्त ।
अन्हरिया– (राति) ।
अन्हरोख–प्रत्यूष, अन्हारसँ युक्त भोर ।
अन्हरोन–किञ्चित् अन्हारसँ युक्त (काल)।
अन्हार–अन्धकार १ । अन्धकारयुक्त २ ।

अन्हारी देब–क्रि० द् + अब-तमबाक प्रभेद ।
अन्हेर–अनर्थ ।
अन्है–सर्पाकार मत्स्यविशेष ।
अपक–विपाक ।
अपकरम–अपकर्म ।
अपकार–सं० आनक अधलाह करब ।
अपकारी–आनक अधलाह कयनिहार ।
अपखोरा–जलपात्रविशेष ।
अपङ्ग–अपाङ्ग, अवयवरहित, शरीर सँ अकर्मण्य ।
अपच–विनु पचल ।
अपजस–अयश ।
अपजसी–अयशस्वी ।
अपटीक खेत–निर्जन स्थान ।
अपथ–अपथ्य, कुसंयम ।
अपन–स्वीय ।
अपना अपनी–अ० स्वयं स्वयम् ।
अपनाएब–ना० अपन+अब्-अपनब् + अब = अपन बनाएब । आत्मसात् करब ।
अपनाभरि–अ० यथाशक्ति ।
अपने–स्वयम् १ । आदरणीय संबोध्य २ ।
अपमान–सं० अवज्ञा ।
अपमानित–सं० अनादृत ।
अपरचाल–घृणास्पद काज कएनिहार, अपरोजक ।
अपतिभ–अप्रतिभ, मुहसच्छ ।
अपरपच्छ–अपरपक्ष, पितृपक्ष, आश्विन कृष्णपक्ष ।
अपरपात–अल्पवयस्कक मृत्यु ।
अपरस–रोगविशेष ।

अपराजित–अपराजिता, एक प्रकारक फुल १ । ओकर लत्ती २ ।
अपराध–सं० कसूर ।
अपराधी–सं० अपराधयुक्त ।
अपरोजक–अप्रयोजक, कार्यमे अपटु ।
अपसराहि–स्त्री. अधिक अपवित्रतायुक्त (स्त्री) ।
अपसेआँत–अधिक श्रमयुक्त, श्रान्त ।
अपसोच–शोक ।
अपाटक–उ० अपटु, स्त्री० अपाटकि ।
अपात–अ० अन्तमे सबसँ थोड ।
अपालन–सं० गायक अरक्षा ।
अपि–अ० समुच्चय, एतत्प्रसङ्ग विद्योतन द्रष्टव्य ।
अपिआड़ी–माछ बझएबाक खाधि ।
अपुआँग / **अपुआङ** – तृणविशेष ।
अपूर्व–विलक्षण ।
अपेच्छा–अपेक्षा, आपकता ।
अपैत–उपहृत ।
अपोआँग–तृणविशेष ।
अप्रिय / **अप्री** – अप्रिय ।
अफजल–असर्ध देह रखनिहार ।
अफनाएब–क्रि० अफन् + अब-उत्सुकता प्रकाश करब ।
अफरब–क्रि० अफर् + अब-खएलासँ अकसक करब ।
अफरा–मालक देहमे रहनिहार कीट-विशेष ।
अफार–बिना जोतल (खेत) ।
अवकाश–सं० छुट्टी १ । अन्तर२ ।

अवकच्चू–सर्वथा अपक्व १ । आधा कएल २ ।
अवगति–सं० ज्ञान ।
अवगुण / **अबगुन** – दोष ।
अबश्च–अनाक्रान्त ।
अबजोस–मेबाविशेष ।
अबढङ्ग–ढङ्गहीन, अपटु ।
अबढँगाह / **अबढङाह** – उ० अपटु, स्त्री० अबढङाहि ।
अबण्डु–उ० अकर्मण्य ।
अब-तब–अ० इदानीं तदानीम् ।
अबती–अ० अयबाक समयमे ।
अवधि–सं० पर्यन्त देश वा समय ।
अबरख–अभ्रष, धातुविशेष ।
अबरजात–गतायात ।
अवर्ण–जातिभ्रष्ट ।
अबल–सं० दुर्बल ।
अवलम्ब–सं० आश्रय ।
अबहला–उ० निन्दनीय अबल । स्त्री० अबलही ।
अबला–सं० असहाया (स्त्री)
अवश्य–अ० अवश्यम् ।
अवसर–सं० उचित समय ।
अवस्था–सं० स्थिति १ । वय+क्रम २ ।
अवस्थित–सं० स्थित १ । वासी २ ।
अबाक–वचनहीन ।
अबाज–वि० शब्द ।
अबाजाही–अबरजात, गतायात ।
अबाद–बिनु खसल (खेत) ।
अबार–उजाहिमें चलैत माछ ।
अबारा–अवारणीय, कुचालि ।

अबाह–आवाक दोषयुक्त १। पएदार २ ।
अविधि–सं० अनुचित ।
अविष–विषहीन ।
अबीर–पटवास, सुगन्धि द्रव्य ।
अबीरी–अबीरक सदृश (रङ्ग) ।
अबुरबान–विचित्र मनुष्य ।
अबूह–दुष्करता, तर्कक अविषय ।
अबेत–बिनु बेओंतल ।
अबेर–अवेला, अतिक्रान्तकाल ।
अबोध–सं. बोधहीन (शिशु) ।
अव्यवस्थित–व्यवस्था नहि रखनिहार, मिथ्यावादी ।
अभक्ष्य / **अभक्ष** – अखाद्य ।
अभरख–अभ्रष, धातुविशेष ।
अभाग–अभाग्य ।
अभागल–उ० अदृष्टघट्टू, स्त्री० अभागलि।
अभार–अजस ।
अभाव–सं० असत्ता ।
अभास–आभास ।
अभिप्राय–सं० इच्छा ।
अभिमान–सं० अहङ्कार ।
अभिसार–बटगमनी, स्त्रीक स्वामीक समीप जयवा कालक गीत ।
अभेला–अवहेला, अनादर ।
अभ्यन्तर–सं० भीतर ।
अभ्यागत–सं० अतिथि ।
अभ्यास–सं० वारंवार पढ़ब वा करब ।
अमचुकारी–अमत ढेकार ।
अमचूर–शुष्क आमक चूर्ण ।
अमजिहुल–किञ्चित् अमत, किञ्चित् मधुर ।

अमट–आम्रावर्त, आतपशोषित घनीभूत आम्ररस ।

अमड़ा–आम्रातक, अम्लफलविशेष ।

अमत–अम्ल रसविशेष ।

अमतहा–अम्लप्रकारक ।

अमताइ–अम्लता

अमताइनि–किञ्चित् अम्लतायुक्त ।

अमताएब–क्रि० अमत् + अब-अमत होएब ।

अमताह–किञ्चित् अमत ।

अमती–काँटबाला लताविशेष ।

अमतौआ–अमत प्रकारक (नेबो आदि)।

अमरकन }
अमरकन्द } –कन्दवत् चिरजीवी (गाछ)

अमरलत्ती–सं० अमरवल्लरी, लताविशेष।

अमरोड़ा–अम्ललोणी, शाकविशेष ।

अमल–वि० समय ।

अमलगिरी–अमलाक कार्य ।

अमलतास–आरग्वध, वृक्षविशेष ।

अमलबेंत–सं० अम्लबेतस, ओषधिविशेष।

अमला–वि० अधिकृत विशेष पुरुषक अधीनस्थ कार्यकर्ता ।

अमलापोस–वि० स्वाधीनस्थक पोषक (हाकिम) ।

अमलासाजी–वि० अमलासँ मेल ।

अमसूल–धान्यविशेष ।

अमाघौर–धान्यविशेष ।

अमात–शूद्रजातिविशेष ।

अमाबस–अमावस्या ।

अमावास्या–अमाबस, अमावस्या ।

अमाल–तृणविशेष १। चरखाक सूत्रविशेष २।

अमिलगर–अधिक आमिलसँ युक्त ।

अमीन–क्षेत्रक मापक ।

अमीर–दु:ख नहि सहनिहार ।

अमूल–सं० बिना मूलक ।

अमृत–सं० पीयूष ।

अमृतफल–फलविशेष ।

अमृतबान–घृतादिक पात्रविशेष ।

अमृतभेला–सूगाक प्रभेद ।

अमृती–मिष्टान्नविशेष ।

अमेढब–क्रि० अमेढ़+अब-ऐँठब ।

अमेढ़ी–ऐँठनाइ ।

अमोल–अमूल्य, मोल नहि भेटबाक योग्य ।

अमोट–आम्रावर्त, अमट ।

अम्बात–आमवात रोगविशेष ।

अयना–आदर्श १ । आगमन २ ।

अरकसिया–आरासँ चिरनिहार जाति-विशेष ।

अरखीस–कानि, कोपरक्षा ।

अरगज–अपक्व अनेक औषध मिश्रित तेल ।

अरगट–अनुमान ।

अरगनी–कपड़ा रखबाक टाँगल डण्टा ।

अरघब–क्रि० अरघ्+अब-खएला पीलापर बहार नहि होएब [औषध नहि अरघैत अछि] ।

अरजब–क्रि० अरज्+अब-अर्जन करब ।

अरतल–शीघ्र कर्तव्य ।

अरधङ्ग–अर्द्धाङ्ग, रोगविशेष ।

अरना–जन्तुविशेष, वन्यमहिष ।

अरबधि कए–अ. कृत्रिम कए ।

अरबा–बिनु उसिनल (चाउर आदि)

अरबेठ–अरबा चाउरक चिकस ।

अरस–नीरस ।

अरसी–आरसि, आदर्श ।

अराड़ा–नदीक तट ।

अराड़ि–अड़खीस, द्वेषविशेष ।

अरारि–उदकीय, वृक्षक प्रभेद ।

अरिआ–आरिसम्बन्धी ।

अरिआएब–क्रि० अरि+अब-अकच्छ होएब ।

अरिआत–अनुव्रजन ।

अरिआतब–क्रि० अरिआत्+अब-प्रत्युद्गमन ।

अरिया दुर्भिक्ष–एक खेतमे उपजा समीपहिक खेतमे दुर्भिक्ष ।

अरिआलङ्घन–जाहिमे आरिलाँघिकेँ पानि बहए, तादृश (वर्षा) ।

अरिपन–पिठारसँ लिखल यन्त्र ।

अरिलघाँओ }
अरिलघाँन } – आरिक लङ्घन ।

अरुआएब–क्रि० अरु+अब-भातक अधिककालज विकार ।

अरुचि–सं० खएबाक अनिच्छा ।

अरुबी–खाद्यकन्दविशेष ।

अरे–अ० नीचक, सम्बोधन १। आश्चर्य २ ।

अरेबा–अ० भयशोकादिव्यञ्जक ।

अरोस-परोस–ग्राम समीप ।

अर्घ–सं० अर्घ्य ।

अर्घब–क्रि० अर्घ् + अब-अरघब ।

अर्घासन–दशाहाभ्यन्तर पितरक अन्नार्थ अर्घ आसन ।

अर्घी–अर्घ देबाक पात्रविशेष ।

अर्जी–वि० निवेदन ।

अर्जुन–सं० वृक्ष विशेष ।

अर्थ–सं० प्रयोजन [एहि अर्थे आएल छी] १। वस्तु [कोनो अर्थें हम छोट नहि] २ ।

अर्थाएब–क्रि० अर्थब्+अब-ज्ञात रहनहुँ जिज्ञासा करब ।

अर्रदर्र बाजब–अण्डबण्ड बाजब ।

अर्हणा–जामाताक हेतु अर्घादिदान ।

अलगचित्त–दाओविशेष ।

अलगटेँट–योग्यकेँ बजबाक अवसर नहि दय उत्तर देनिहार ।

अलगटेँटाह–अगलटेँट + आह-किञ्चित् अलगटेँट ।

अलगट्ट–अनुचित तर्क ।

अलगफुनगी मारब–क्रि० मार् + अब-बिनु तत्वत: बुझनहि बाजि उठब ।

अलगब–क्रि० अलग्+अब-उपर आएब ।

अलग बलग–अ० शीघ्रताजन्य असमीचीनतापूर्वक ।

अलगाह–उ० अलग्न होएनिहार, स्त्री० अलगाहि ।

अलगी–स्त्री० चञ्चल स्वभाववाली ।

अलगोजा–बासुरीविशेष ।

अलङ्करण–सं० भूषण ।

अलङ्ग–एकदेश ।

अलच्छ–अशुभकर ।

अलछपन }
अलछपना } – अशुभकरत्व ।
अलछपनी }

अलटपलट–हेरफेर ।

अलबटाह–उ० ओरिआएकेँ नहि काज कएनिहार । स्त्री. अलबटाहि ।

अलबल–असम्बद्ध (वचन) ।

अलबेला–उ० स्वेच्छाविहारी । स्त्री० अलबेली ।

अलमान–ऊनक सादा ओढना ।

अलमारी–पुस्तकादि रखबाक पात्रविशेष।
अलसाएब–क्रि० अलस्+अब–आलसयुक्त होएब ।
अलौकिक–सं० लोकव्यवहारानभिज्ञ ।
अल्हुआ–मूलविशेष, हि. शकरकन्द ।
अव्यवस्थित–सं० मिथ्या व्यवस्था कएनिहार ।
अंश–सं० भाग ।
अशुद्ध–सं० अपवित्र १। विवाहादि निषिद्ध समय २।
अशुभ–सं० अमङ्गल ।
अशोक–सं० वृक्षविशेष ।
अशौच–सं० जननमरणादिजन्य अशुद्धि ।
अषाढ़–आषाढ़, जेठक अगिला मास ।
अष्टकोसल–आठ व्यक्तिक मन्त्रणा, गुप्त मन्त्रणा ।
अष्टगन्ध–धूपविशेष ।
अष्टमी–आठम तिथि ।
असक–आवश्यक १। रोगी २। अशक्य ३ ।
असकताएब–क्रि० असकत् + अब – आलस्य करब ।
असकताह उ०–आलस्ययुक्त । स्त्री. असकताहि ।
असकूर–असंनिधि ।
असगनी–नूआ टँगबाक डण्टा ।
असगन्ध–अश्वगन्धा, औषधविशेष ।
असगुन–अशकुन ।
असँ–शैथिल्य ।
असनी–कपड़ा रखबाक डोरि ।
असङ्ख्य–सं० अगणित ।
असङ्ग–असंज्ञ, संज्ञा (चैतन्य) हीन ।
असङ्गत–सं० असुष्ठु ।
असंज्ञ–संज्ञाहीन ।
असत्य–सं० मिथ्या ।
असफल–सं० विफल ।
असबाब–वि० वस्तुजात, सामग्री ।
असबार–अश्ववार, सवार ।
असर–वि० प्रभाव ।
असरफी–स्वर्णक मुद्राविशेष ।
असराएब–क्रि० असर्+अब–धातुकेँ ठोकि ठोकि पसारब ।
असरेस–अश्लेषा नक्षत्र ।
असर्ध–श्रद्धाक अयोग्य ।
असर्फी–दस मासाक स्वर्णमुद्राविशेष ।
असल–वि० तात्त्विक ।
असह–चेष्टाहीन ।
असहाज–असह्य ।
असाइ–कीटविशेष ।
असाओन–किछु कम, असान ।
असाध / **असाध्य** } – अप्रतीकार्य ।
असान–किछु कम ।
असामी–प्रजा, रैअति ।
असार–सारिलसँ भिन्न, सारभिन्न (काठ)।
असारब–क्रि० असार+अब–पीटिकेँ लाम बनायब ।
असिआस–अत्यायास ।
असिद्ध–सं० किञ्चित् भागमे पक्व ओ किञ्चित् भागमे अपक्व १। भातसँ भिन्न पक्व अन्न २।
असिनहट–आसिन ओ तत्समीपक समय।
असिनी–आश्विनमे भेनिहार एक धान।
असीतर–अस्सीसँ किछु कम वयसक (लोक) ।

असुआएब–क्रि० असु+अब–पाकक वैगुण्यसँ सक्कत होएब ।
असुस्त–अस्वस्थ, दुःखित ।
असुस्ताह–उ० किछु दुःखित । स्त्री. असुस्ताहि ।
असोक–अशोक, वृक्ष–विशेष ।
असोख–विचारशून्य ।
असोच–अशोच्य, धनादिपूर्ण ।
असोथकित–अत्यन्त थाकल ।
असौजन / **असौजन्य** }–खएबाक वा सिद्ध खएबाक अव्यवहार ।
असौजनिआँ–खएबाक व्यवहार सँ बहिर्भूत ।
अस्त–सं० अस्ताचलक अधः स्थित (सूर्यादि) ।
अस्तर–वि० दोहराक तरका वस्त्र ।
अस्तव्यस्त–कार्यमे व्याकुल, अत्यन्त अनवकाश (निन्दा) ।
अस्तूरा–केश कटबाक अस्त्र, छूरा ।
अस्त्र–सं० हथियार ।
अस्मानखोचा मारब–क्रि० मार् + अब–असाध्य कार्य करब ।
अस्मानतारा–रबाइसक प्रभेद ।
अस्द्धरस–रुकि रुकि श्वास चलब ।
अस्वरस–सं० असम्मति ।
अँह–अ० क्रोधद्योतक १ । निषेध द्योतक २ ।
अहगर–पर्याप्त ।
अहदिपन / **अहदिपना** / **अहदिपनी** } – आलस्यशीलता ।
अहदी–आलसी ।
अहरा–पक्षीक आहार ।
अहा / **अहाहा** } –अ० खेद आश्चर्य आदिक द्योतक ।
अँहा–आदरणीय सम्बोध्य ।
अहाँङ–अहङ्कार ।
अहिबात–सौभाग्य ।
अहिबाती–स्त्री० सौभाग्यवती स्त्री ।
अहो भाग्य–अ० सं० आनन्दसूचक ।
अह्लाद–आह्लाद, आदर ।
अह्लादब–क्रि० अह्लाद्+अब–सस्नेह आदर करब ।

आ

आ–अ० आओर ।
आइ–अ० अद्य, वर्तमान दिनमे ।
आइसँ–अद्यारभ्य ।
आएँ–अ० विस्मय १ । संबोधनोत्तर सावधानता २ ।
आएत–सुन्दर ।
आएब–क्रि० अब्+अब–आगमन
आओँ–अन्नक विकार–विशेष, सं० आम ।
आओँट–व्याकुल ।
आओन–गाड़ीक पहिआक सामी ।
आओर–अ० समुच्चय १ । अतिरिक्त २ ।
आक–अर्क, पुष्पविशेष ।
आँक–एकसँ नओ पर्यन्त अङ्क १। चिह्न २।
आँकड़–हि० कंकड़, बहुत छोट–छोट पाथर ।
आँकब–क्रि० अँक् + अब–अङ्कित करब ।
आकर–सं० खानि ।
आकरि–बहिला (माल) ।

आकस्मिक–सं० दैवात् होएनिहार
आकार–सं० आकृति, स्वरूप ।
आकाश–सं० अस्मान ।
आँकुर–अंकुर ।
आँकुस–अंकुश, अँकुसी ।
आकृति–आकार ।
आखर–अक्षर ।
आखरि करब–क्रि० कर्+अब-रोसेँ सिंहसँ माटि उखाड़ब ।
आँखि–अक्षि, नेत्र ।
आँखि उठब–क्रि० उठ्+अब-अक्षिरोग विशेष ।
आँखि गुड़ारब–क्रि० गुड़ार्+अब-क्रोधेँ आँखिक उत्फालन ।
आँखि देखाएब–क्रि० देखब्+अब-आक्षेप करब ।
आँखि देब–क्रि० द्+अब-दोषावह अक्षिपात करब ।
आँखि नहि लगाएब–क्रि० लगब्+अब-तुच्छ बुझब ।
आँखि निड़ारब–क्रि० निड़ार्+अब-रोगेँ आँखिक उत्फालन करब ।
आँखि लागब–क्रि० लग्+अब-किञ्चित् काल आँखि मुनब १। दोषावह ओ साश्चर्य अक्षिपात होएब २।
आखिर–वि० अन्त ।
आँग–अङ्ग, शरीर ।
आगत-स्वागत–अतिथि सम्मान ।
आँगन–अङ्गण ।
आगन्तुक–सं० अयनिहार ।
आगम–भाविवर्षादिक चिह्न ।
आगर–अप्रतिरुद्ध वातागम स्थान, हवादार १ । खानि २ ।
आगरह–आग्रह ।
आगाँ–अग्र ।
आगि–अग्नि ।
आँगी–स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आगु–अग्र ।
आँगुठ–अङ्गुष्ठ, बुढ़बा आँगुर ।
आँगुर–अङ्गुली, हाथ-पाएरक शाखा ।
आगू–अग्र ।
आग्रह–सं० अति प्रार्थना ।
आङ–अङ्ग ।
आङन–अङ्गण ।
आङी–स्त्रीक पहिरबाक अङ्गा ।
आङुर–अङ्गुलि ।
आँच–चूल्हिमे लगाओल जारनक ज्वाला ।
आँचब–क्रि० अँच्+अब-चूल्हिमे जारन देब ।
आचमन–सं० जलसँ मुहक शुद्धि ।
आचमनी–आचमनक पात्रविशेष ।
आँचर–अञ्चल ।
आचार–सं० व्यवहार ।
आचार्य–सं० उपनयन करओनिहार गुरु।
आच्छन्न–सं० व्याप्त ।
आज–अ० अद्य, वर्तमान दिनमे ।
आँजन–अञ्जन, अक्षिरोगक औषध विशेष।
आजुक–वर्तमानदिनसम्बन्धी ।
आँजुर–अञ्जलि: मिलल दुहू हाथ ।
आँट–अवधि ।
आँटा–गोधूमादिचूर्ण ।
आँटी–प्रमाणविशेषपरिच्छिन्न बद्धतृण ।
आठ–अष्ट, एक अधिक सात ।
आठम–अष्टम ।
आँठी–अष्टि, आम्रादिक बीज ।

आड़–व्यवधायक ।
आडम्बर–सं० आड्वाल ।
आड़ा–व्यवधानकारक लम्बा उच्च माँटि।
आँड़ा–अण्डबीज, सजीव गोल वस्तु ।
आड्वाल–आडम्बर ।
आँत–अन्त्र ।
आँत उतरब–क्रि० उतर + अब-अण्डकोषक रोगविशेष ।
आँत ममोरब–क्रि० ममोर्+अब पेटक व्यथाविशेष ।
आँतर–प्रथम सिराउड़क मध्य भाग ।
आता–फलविशेष ।
आतिख–आतिक्त, कषाय ।
आँती–अण्डकोषमे अँतरीक प्रवेश, रोग विशेष ।
आतुर–सं० अति उत्सुक ।
आतू–अ० कुकुरक आह्वानशब्द ।
आद–आर्द्रक, कन्दविशेष ।
आदङ्क–आतङ्क, भयविशेष ।
आदति–वि० स्वभाव ।
आदमी–वि० मनुष्य १। भृत्य २। व्यक्ति ३।
आदर–सं० संमान ।
आदरस–आदर्श ।
आदाय–वि० गृहीत ऋणक प्रत्यर्पण ।
आदि–सं० प्रथमावयव ।
आद्योपान्त–सं० आदि सँ अन्त पर्यन्त ।
आध / **आधा** }–अर्द्ध, समांश ।
आधा-आधी–परस्पर आधा ।
आधार–सं० अधिकरण १ । भक्षण २ ।
आधी–सतरञ्ज मे आधा जीत ।
आध्वान–उद्गार, ढेकार ।
आन–अन्य० भिन्न ।
आनन्द–सं० हर्ष ।
आनन्दित–सं० हर्षसँ युक्त ।
आनब–क्रि० अन्+अब-आनयन ।
आन्दोलन–हल्ला मचाएब ।
आन्हड़–हि० अन्धड़, बिहारि ।
आन्हर–अन्ध, दर्शनशक्तिरहित-नेत्रद्वययुत।
आन्ही–बिहारि, हि० आँधी ।
आप कए–अ० दोषसमुच्चय, सेहो [ई गाए बूढ़ि आप कए (=सेहो) मरखाहि आप कए] ।
आपट–अनुचित आग्रह ।
आपति / **आपत्ति** } – विपत्ति ।
आपस–प्रत्यर्पण ।
आपसी–प्रत्यर्पित ।
आफद–वि० आपत्, उपद्रव ।
आफदी–उपद्रव कएनिहार ।
आब–इदानीम्, हि० अब ।
आबा–मृद्भाण्डपाकानल ।
आबाज–वि० शब्द ।
आबाद–वि० बिनु खसल (खेत) ।
आबादी–उपजाबाला (भूमि) ।
आबेस–स्नेह ।
आभड़-खुभड़–उच्चावच, ऊँचनीच ।
आभा–झलक १। सादृश्य २।
आभ्युदयिक–सं० नान्दी श्राद्ध ।
आम–आम्र, फलविशेष ।
आम कलमी–राजाम्र ।
आमद–वि० आय, द्रव्यागम ।

आमदनी–वि० नियत आमद ।
आम सरही–क्षुद्राम्र ।
आमाघौर–धान्यविशेष ।
आमील–काँच आमक सुखाएल खण्ड ।
आमेख–ईर्ष्या ।
आमोद-प्रमोद–अनेक विषयक आनन्द ।
आयत–सुन्दर ।
आरत–अलक्त, नखराग १ । आर्त्त २ ।
आरतक पात–लाक्षारससम्भृत पात ।
आरति–आर्त्ति ।
आरती–आरार्तिक, नीराजन ।
आरब–बिना उसिनल (चाउर) ।
आरम्भ–सं० प्रथमक्रिया ।
आरसि–आदर्श १। औँठीक प्रभेद २ । छातीक खोदहा ३। आगि रखबाक मृत्पात्र ४।
आरा–उभयतः डण्टाबाला आरी ।
आरारोट–वि० खाद्यविशेष ।
आरि–खेतक चारू कातक उच्च सीमा, हि मेढ़ ।
आरी–चिरबाक लौहयन्त्रविशेष ।
आरु–खाद्य कन्दविशेष ।
आल–लाल रङ्गविशेष ।
आलन–टाट वा भीतक मध्यमे देबाक खढ़ ।
आलस–आलस्य ।
आलसी–आलस्ययुत ।
आलात–गजीफाक शरविशेष ।
आलाप–परस्पर गप्प ।
आलू–कन्दविशेष ।
आलू बोखारा–आलू आकारक अमत फल ।
आशा–सं० शुभसंभावना ।
आशीर्वाद–सं० शुभेच्छाबोधक बचन ।
आशीष–शुभेच्छा ।
आश्रम–सं० निवासस्थान १ । गार्हस्थ्यादि २ ।
आषाढ़–जेठसँ अगिला मास ।
आस–आशा, शुभक विश्वास ।
आसकति–अशक्ति, आलस्य ।
आसकूर–दूर, असमीप ।
आसन–सं० बैसबाक कम्बलादि १ । वृक्षविशेष, सं. असन २ ।
आसनी–छोट आसन ।
आसमर्द–घोल ।
आसरम–निवासस्थान ।
आसरा–आश्रय, अवलम्बन ।
आसिन–आश्विन, भादबसँ अगिला मास ।
आसिरबाद–आशीर्वाद ।
आँसु–आश्विनमे उपजनिहार धानक सदृश अन्न ।
आस्था–सं० सेवा परिचर्या १ । आदर-बुद्धि २ ।
आस्फोट–आडम्बर ।
आस्मर्द–घोल ।
आह–अ० क्रोध ओ शोकक व्यञ्जक ।
आहट–किञ्चित् शब्द ।
आहर–खेत लगक जलाशय ।
आहरा–पक्षीक भक्ष्य ।
आहल–परिमाणविशेष (तृणक) ।
आहार–भोजन १ । धान्यादि पटएबाक जलाशय २ ।
आहि–आधि, मानस दुःख ।
आहिरे, **आहिरेबा** } – अ० खेदव्यंजक ।

इ

इआर–मित्र ।
इआरी–मित्रता ।
इकड़ी–तृणविशेष ।
इचना–मत्स्यविशेष, इश्चाक ।
इछाइन, **इछैन** } – दुर्गन्धविशेष ।
इछैनीबच–औषधविशेष ।
इजमलिया–केबाड़क लोहक छिड़की ।
इजर–इज्जल, तृणविशेष ।
इजहार–वि० वादी ओ प्रतिवादीक कथन।
इजोत–उद्योत, प्रकाश ओ प्रकाशवान् ।
इजोरिया–चन्द्रकिरण वा तद्युक्त (राति) ।
इज्जति–वि० मर्यादा, प्रतिष्ठा ।
इड़हर–संहितव्यञ्जनविशेष ।
इतर–सं० अन्य १ । क्षुद्र २ ।
इतरपन, **इतरपना**, **इतरपनी** } – क्षुद्रता ।
इतराएब–क्रि० इतर + अब-अगराएब ।
इतलाय–वि० निवेदन ।
इनहोर–गरम, उष्ण (जल) ।
इनाम–वि० पारितोषिक ।
इनार–पैघ कूप ।
इन्तजाम–वि० प्रबन्ध ।
इन्द्रजओ–इन्द्रयव, यवाकार औषधविशेष।
इन्द्री–लिङ्ग ।
इन्होर–उष्ण (जल) ।
इयार–मित्र ।
इयारी–मित्रता ।
इरोत–अढ़, व्यवधान ।
इलची–फलविशेष हि. लीची ।
इलमलिआ–केबाड़क लोहक छिड़की ।
इस्–अ० पीड़ाद्योतक ।
इसखिआम–इसखौक योग्य ।
इसखी–सिटनिहार, स्वशरीर-सौन्दर्यप्रेमी ।
इसफगोल–औषधविशेष ।
इसरगत–सापक जड़ी क्षुद्रवृक्ष, सं. पुलिक ।
इसारा–इङ्गित ।

ई

ई–प्रत्यक्ष दृश्य ।
ईर्ष्या–सं० चित्तविकारविशेष ।
ईशानकोण–सं० पूर्वोत्तरक मध्यकोण ।
ईश्वर–सं० निखिलसामर्थ्यशाली ।
ईश्वरी–ईश्वरसम्बन्धी (चक्र वा घटना)
ईस्–अपीड़ाव्यञ्जक ।
ईह–अ० असूया १ । क्रोध २ । खेद ३।

उ

उऋण–ऋण सँ उद्धृत, अनृणी ।
उकटन–उद्वर्तन, आँग उङारबाक वस्तु ।
उकटब–क्रि० उकट्+अब-अनौचित्यपूर्वक कथोद्घाटन करब १ । माटि कोड़ब २ ।
उकठ–अन्योद्वेजक क्रीड़ा, उपद्रव ।
उकठाह–उ० उकठ कएनिहार । स्त्री. उकठाहि ।
उकठिआ–उकठ कएनिहार ।
उकरू–उत्क्रम, अयथावत् स्थित ।
उकस पाकस–अस्थैर्य ।
उकहब–क्रि० उकह् + अब-काष्ठक दृढ़ता हटब ।
उकाठी–उकठाह उपद्रवकयनिहार (नेना)।

उकासी–काश रोग ।
उक्खरि–उदूखल ।
उखड़ब–क्रि० उखड़ + अब-उत्खनन ।
उखड़हा–एकोपक्रम कार्यकाल ।
उखड़ा–वृक्षक व्याधिविशेष ।
उखड़ाह–उखड़ि गेनिहार ।
उखरड़–चूड़ा कुटबाकाल उखरिसँ छिरिआएल अन्न ।
उखरि–उदूखल, धान कुटबाक पात्र ।
उखरिमुसरा–शाकविशेष ।
उखाड़ब–क्रि० उखाड् + अब-उत्पाटन ।
उखिआर–इक्षु, कुसिआर, हि. ऊख ।
उखीबिखी लागब–क्रि. अस्थिर रहब ।
उगब–क्रि० उग्+अब-उदित होएब ।
उगरब–क्रि० उगर्+अब-उर्वरित होएब ।
उगरा–उर्वरित ।
उगरास–चन्द्रसूर्यक राहुसँ विमुक्ति ।
उगहनि–नीचसँ पानि भरबाक डोरी ।
उगहब–क्रि० उगह् + अब-उद्वहन, हि. ढोना ।
उगारब–क्रि० उगात्+अब-उर्वरित करब ।
उँगारब–क्रि० उँगात्+अब-उद्वर्तन करब ।
उगिलब–क्रि० उगिल्+अब-उद्गिरण, मुहसँ फेकब ।
उगिला–उद्गीर्ण, उगिलल ।
उघरब–क्रि० उघर्+अब-उद्घटित होएब ।
उघार–उद्घाटित, अनावृत ।
उघारब–क्रि० उघार्+अब-उद्घाटन करब ।
उङरब–क्रि० उङार्+अब-उद्वर्तित करब ।
उचक्क / **उचक्की** }–उचङ्ङा, कनेक आँखि घुमने हठात् वस्तु लए लेनिहार ।
उँचगर–अधिक ऊँच ।
उचङ्ङा–उचक्का ।
उचती–विनय-वचन ।
उचरब–क्रि० उचर्+अब-बूझि पड़ब १ । फुरब २ ।
उचरिङ–उच्चिटिङ्ग, पक्षिकीटविशेष ।
ऊँचाइ–उच्चता ।
उचाट–उच्चाटन ।
उचाँढ़–चार अलगओनिहार कोढ़ो ।
उचाँस–उच्चप्राय, कनेक ऊँच ।
उचित–सं० योग्य ।
उचितवक्ता–सं० यथास्थित बजबामे प्रौढ़।
उचित कल्याण–उचित श्राद्धादि कल्याण विवाहादि एतदुभय ।
उचिला–धोतीमे बिनबाक दोषेँ उच्च देश ।
उच्छन्न–सं० समूल विनष्ट ।
उछटब–क्रि० उछट्+अब-एकमे लागिकेँ वेगेँ दोसरा दिस जाएब ।
उछती–विनय ।
उछन्न–उच्छन्न ।
उछन्नर–उ० उच्छृङ्खल । स्त्री. उछन्नरि ।
उछलब–क्रि० उछल्+अब-उच्छलन, जलादिक उपर छिटकब ।
उछाल–पूर्ण भए बहता पानिबाला ।
उछाह–उत्सव ।
उछाही–उत्सवमे देय ।
उछिलब–क्रि० उछिल्+अब-उच्छलन ।
उजबिजाएब–क्रि० उजबिज्+अब-उद्विग्न होयब ।
उजर–शुक्ल ।
उजर दप-दप–अत्यन्त उजर ।
उजरब–क्रि० उजर्+अब-अवयवशः नष्ट होएब ।

उजरा–श्वेत प्रभेदक ।
उजरी–शुक्लता ।
उजरी धबब–क्रि० धब्+अब-श्वेतता प्रकाश होएब ।
उजहब–क्रि० उजह् + अब - माछक जलवेगाभिमुख गमन ।
उजहिआ–जलवेगाभिमुख चलित (माछ)
उजागर–प्रकाश ।
उजार–भग्नाङ्ग होएब (गृहादिक उजरब)।
उजारब–क्रि० उजार्+अब-भग्नाङ्ग करब (वृक्षगृहादिक) ।
उजाहि–वेगाभिमुख गमन (माछक)
उजिआर–प्रकाश ।
उज्जर–उज्ज्वल, शुक्ल ।
उज्झट–उद्भट ।
उझक / **उझक्क** }–किञ्चित् (दर्शन)
उझकब–क्रि० उझक्+अब-चढ़ल पात्रक झुकब ।
उझकुन–बरतन आदिमे टेकन ।
उझट / **उझट्ट** }–उद्भट १ । उझाँट २ ।
उझट लागब–क्रि. लग्+अब-वेगापन्न बस्त्रादिक किञ्चिन्मात्र सम्बन्ध ।
उझाँट–अलक्ष्यमे लागब ।
उझिलब–क्रि० उझिल् + अब-पात्रक मुह नीच कए भूमि पर धान्यादि खसाएब ।
उझिला–अझिलल पात्रक मुह नीचाँ कय खसाओल ।
उझुक्का–आकस्मिक आघात ।
उञ्चालिस–एकोनचत्वारिंशत् ।
उञ्चालिसम–एकोनचत्वारिंशत्तम ।
उञ्चास–एक कम पचास ।
उञ्चासम–एकोनपञ्चाशत्तम ।
उटङ्ग–उकरू, अयथावत् स्थित ।
उँटनी–स्त्री० उष्ट्रस्त्री, विशाल स्त्री-प्राणिविशेष । पुं० ऊँट ।
उठओना–प्रतिदिन नियत (क्रयण)
उठब–क्रि० उठ्+अब-उत्थित होएब १। खर्च होएब २।
उठल्लू–अगण्य ।
उठाओ–त्याग (पूर्व प्रचलितक) ।
उठाबैसी–वारंवार उठब बैसब ।
उड़कुस्सी–विषाक्त लताविशेष ।
उड़ड़ा–मत्स्यविशेष ।
उड़ता–उड़बाक योग्य ।
उड़नखटोला–एम्हर ओम्हर वृथा घुमनिहार (निन्दामे) ।
उड़न्ती–अमूलक विषय, किंवदन्ती ।
उड़ब–क्रि० उड् + अब-आकाश मार्गें चलब ।
उड़रा–मत्स्यविशेष ।
उड़ाक–उड़निहार ।
उड़ाहब–क्रि० उड़ाह्+अब-नवीन भाँड़केँ काजमे आनब १। इनार पोखरिक पानि उपछिकेँ शुद्ध करब २ ।
उड़ीस–मत्कुण, शोणिताशी कीटविशेष । हि. खटमल ।
उढ़रब–क्रि० उढर्+अब-पुरुषान्तरक सङ्ग स्त्रीक कामवश जाएब ।
उढ़री–स्त्री० पर पुरुषक संग कामवश गेलि (स्त्री) ।
उढ़ारब–क्रि० उढ़ार्+अब-अन्य स्त्रीकेँ अधीन कए पत्नीभावेँ लए जाएब।

उनटन–अन्यथास्थिति ।

उनटब–अन्यथाभाव ।

उनटा–विपरीत ।

उतरंग–उत्तरसँ अबैत बसात ।

उतरब–क्रि० उत्तर्+अब-नीचाँ आएब ।

उतरबरिआ, **उतरबारि** –उत्तर दिशक ।

उतरा–उत्तरफल्गुनी नक्षत्र ।

उतराढाढ़–उत्तरोत्तर नीच, उत्तरप्लव ।

उतराहुत–किञ्चित् उत्तरदिगवस्थित ।

उतरी–श्राद्धमे यज्ञोपवीताकार उत्तरीय वस्त्र ।

उतान–उत्तान, पीठक भरेँ सुतल ।

उतार–क्रमिक पातर (लाठी आदि)

उतारब–क्रि० उतार्+अब-प्रतिलिपि करब १ । उपरसँ नीचाँ करब २ ।

उतारा–पत्रोत्तर ।

उताहुल–उत्सुक ।

उत्कट–सं० तीव्र १ । अप्रिय २ ।

उत्कट कोटि–सं. तीव्र विभाग ।

उत्तम–सं० उत्कृष्ट ।

उत्तमहा–उत्तम प्रभेदक ।

उत्तर–सं० उदीची दिक् १ । प्रति वाक्य २ ।

उत्तर भर–उत्तर दिस ।

उत्तरीय–सं० द्वितीय वस्त्रविशेष ।

उत्थर–अल्प गहींड़, उत्थल ।

उत्पटाँग–असङ्गत ।

उत्पति–उत्पत्ति ।

उत्पात–सं० उपद्रव ।

उत्पाती–सं० उपद्रवकर्ता ।

उत्फाल–उद्धत ।

उत्सव–सं० उछाह ।

उत्साह–सं० तीव्र इच्छा ।

उत्साही–सं० उत्साहसँ युक्त ।

उथर–उत्थर, उचितसँ अल्प गहींड़ ।

उदय–सूर्य चन्द्रमाक उगब ।

उदय-प्रलय–नीक-अधलाह ।

उथल-पाथल–युगपत् नानाक्रिया ।

उदार–सं० दानी ।

उदास–सं० शोकयुक्त, विरक्त ।

उदासी–औदास्य १ । वैराग्यशाली २ ।

उदासी झलकब–क्रि० झलक्+अब–औदास्य देखार होएब ।

उदेस–उद्देश, स्थिति ।

उद्दण्ड–उच्छृङ्खल ।

उद्ध–जलजन्तुविशेष ।

उद्धब–अविषयज्ञ ।

उद्धार–उबारब ।

उद्धृत्त–सं० अधलाह क्रियाबाला ।

उद्वेग–सं० उन्मनस्कता ।

उद्यम–सं० उद्योग ।

उद्यमी–सं० उद्योगी ।

उद्योग–सं० साधनक्रिया ।

उद्योगी–सं० उद्योग कएनिहार ।

उधकब–क्रि० उधक्+अब–वारंवार किञ्चित् उपर नीचाँ होएब ।

उधार–पश्चात् मूल्य देबाक व्यवस्थासँ कीनल १ । उद्धार २ ।

उधारब–क्रि० उधार्+अब–उद्धार करब ।

उधारी–पश्चात् मूल्य देबाक व्यवस्थासँ कीनल ।

उधिआएब–क्रि० उधि+अब–दुग्धादिक तापसँ ऊर्ध्वमुख होएब ।

उधिआन–अधिआएब ।

उधुक्का–जोरसँ उपरदिशकेँ धक्का ।

उधेसब–क्रि० उधेस्+अब-असाधुतया उद्घाटन ।

उनचालिस–ऊनचत्वारिंशत् ।

उनचालिसम–ऊनचत्वारिंशत्तम ।

उनचास–ऊनपञ्चाशत् ।

उनचासम–ऊनपञ्चाशत्तम ।

उनट–परिवर्तन ।

उनट-पनट–हेरी-फेरी ।

उनटन–अन्यथा स्थिति ।

उनटब–क्रि० उनट्+अब-अन्यथाभाव १। अधोमुख होएब २।

उनटल–अन्यथा भेल १। अधोमुख २।

उनटा–विपरीत ।

उनटा खोदहा–खोदहाक प्रभेद ।

उनटा सरिसओ–नीचमुख सरिसब ।

उनतीस–ऊनत्रिंशत् ।

उनतीसम–ऊनत्रिंशत्तम ।

उनमुनाएब–क्रि० उनमुन्+अब-उन्मुख होएब ।

उनरब–क्रि० उनर् + अब-माठा आदि खैँ चलासँ अधिक फानक होएब ।

उनसट्ठि–एकोनषष्टि, एक कम साठि ।

उनसट्ठिम–एकोनषष्टितम, साठिक पूरक।

उनहत्तरि–एकोनसप्तति ।

उनहत्तरिम–एकोनसप्ततितम ।

उनारब–क्रि० उनार् + अब-फान पैघ करबाक हेतु आकर्षण ।

उनासी–एकोनाशीति, एक कम अस्सी ।

उनासीम–एकोनाशीतितम, उनासीक पूरक।

उनाह–भाफ लेब ।

उनाहब–क्रि० उनाह् + अब-भाफ लेब ।

उनैस–एकोनविंशति, एक कम बीस ।

उनैसम–एकोनविंशतितम, उनैसक पूरक।

उन्तीस–एकोनत्रिंशत् ।

उन्तीसम–एकोनत्रिंशत्तम ।

उन्नैस–एकोनविंशति ।

उन्नैसम–एकोनविंशतितम ।

उपकार–सं० आनक इष्टसम्पादन ।

उपकारी–सं० आनक इष्टसम्पादक ।

उपज–उपजा, उत्पाद्य धान्यादि ।

उपजब–क्रि० उपज् + अब-धान्यादि उत्पन्न होएब ।

उपजा–उत्पन्न धान्यादि ।

उपटब–क्रि० उपट्+अब-वास हटाएब १ । गाछक सर्वथा विनाश [राड़ीक उपटब कठिन] २ ।

उपड़ब–क्रि० उपड् + अब-मूल सँ अलग्न होएब ।

उपदेश–सं० इष्टकथन ।

उपनयन–सं० व्रतबन्ध । ब्राह्मणादिक संस्कारविशेष ।

उपनयनिआ–अचिरोपनीत १ । उपनयन-सम्बन्धी २।

उपपुरोहित–पुरोहितक सहायक ।

उपमा–सं० सादृश्य ।

उपर–उपरि सं. । अधिकरणार्थक अव्यय।

उपरका–उपरिस्थित, स्त्री० उपरकी ।

उपरफट्ट, **उपरफट्टी** –उपरिष्टात् प्राप्त ।

उपरबदरा–किछु मात्र वर्षा, क्षणिक मेघकृत वर्षा ।

उपरसहकिआ–भानसमे भनसिआक सहायक ।

उपरसहाक–भानसमे भनसिआक सहायता ।

उपरा–उचितसँ अधिक (अन्नादि) ।

उपराग–दोषकथन ।

उपराड़ि–उच्च चास ।

उपरी–बाइली आएल वस्तु ।

उपरोँझ– एकग्राह्यतया निश्चितक अनका लेबाक आग्रह ।

उपरोटा–उपरका ।

उपहत } **उपहँत** – अनुच्छिष्ट प्रक्षालन योग्य ।

उपाड़–उत्पाटन ।

उपाड़ब–क्रि० उपाड् + अब-उत्पाटन ।

उपाति–अनका देल असिद्ध भोजनसामग्री।

उपाधि–पदवी, मिश्रप्रभृति ।

उपाध्याय–ब्राह्मणक पदवीविशेष ।

उपाम–उत्तम ।

उपाय–सं० साधक ।

उपास–उपवास ।

उपासब–क्रि० उपवास ।

उपासल–उपोषित, उपास कएने ।

उपेखब } **उपेछब** –क्रि० उपेख् + अब-उपेछ् + अब-उपेक्षा करब।

उफाँट–अप्रेषित भूत ।

उफाँटि–पचेसीक खेड़िमे कटबाक योग्य स्थानगत (गोटी) ।

उफाँटि लागब–किञ्चिद्भागमात्रेण अस्त्रादिक लागब ।

उब्बरब–क्रि० उबर् + अब-उर्वरित होएब।

उबानि–उद्वान, अनुचित बान्ह १ । अनुचित बान २ ।

उबार–उद्धार

उब्बारब–क्रि० उबार् + अब-उद्धार करब।

उबेर–गतमेघ काल ।

उभड़-खाभड़–उच्चावच (भूमि)

उमकब–क्रि० उमक् + अब - मदजन्य बालक्रीड़ा ।

उमकी–बालक्रीड़ा, दौड़धूप ।

उमगब–क्रि० उमग्+अब उद्गम ।

उमजब–क्रि० उमज्+अब-कृश मालक किञ्चित् पुष्ट होएब ।

उमठब–क्रि० उमठ्+अब-अतिभोजनसँ तृप्त होएब ।

उमड़ब–क्रि० उमड् +अब-आधार परिपूर्ण होएब ।

उमत–उन्मत्त ।

उमतल–उन्मत्त ।

उमेद–वि० आशा, इच्छा ।

उमेदबार–इच्छुक ।

उरङ्गब–क्रि० उरङ्ग + अब-पुनः संप्राप्ति

उरड़–हर जोतबामे हरमें लागल मृत्तिकातृणादि ।

उरमा–मनक तरङ्ग ।

उरम्हब–क्रि० उरम्ह् + अब - पुनः प्रादुर्भाव ।

उरिण } **उरिन** –ऋण सँ उद्धृत ।

उरीद–माष, अन्नविशेष ।

उरेब–असमीचीन ।

उलटब–क्रि० उलट+अब-विपरीत होएब ।

उलटा–उद्वृत्त, विपरीत ।

उलटा खोधहा–खोधहाक प्रभेद ।

उलटा सरिसओ–अधोमुख सरिसओ ।

उलबुलाएब–क्रि० उलबुल्-अब-परतारल जाएब ।

उलबुलान–प्रतारणा ।

उलहन–उपराग, दोषकथन ।

उलाएब–क्रि० उलब् + अब -किञ्चिन्मात्र भर्जन सहड़ि आदिक ।

उलाओल–किञ्चिन्मात्र ।

उलार–पाछाँ दिस अधिक भारयुक्त (गाड़ी) ।

उलूक–सं० पक्षिविशेष, बादुर ।

उलोँच–उत्तरच्छद ।

उल्कापात–सं० + आकाशसँ ज्वालाक खसब ।

उल्टा–उलटा, विपरीत ।

उल्टा खोधहा–खोधहाविशेष ।

उल्टासरिसओ–अधोमुख सरिसओ ।

उल्लू–पक्षिविशेष ।

उसकब–क्रि० उसक् + अब-उत्सरण, आगाँ जाएब ।

उसट्ठ } **उसठ** –नीरस ।

उसर } **उसड़** –ऊषर । उसबाला भूमि ।

उसरग–उत्सर्ग ।

उसरगा–उत्सृष्ट ।

उसरब–क्रि० उसर + अब-शीघ्र शीघ्र क्रिया होएब १। समाप्त होएब २।

उसराहु–शीघ्र होएबाक योग्य ।

उसार–समटब ।

उसारब–क्रि० उसार् + अब-समटब ।

उसास–उच्छ्वास । आश्वास, विश्राम ।

उसास देब–क्रि० द् + अब- अनका काजकेँ अपनापर लए ओकरा विश्राम देब ।

उसाहब–क्रि० उसाह + अब-उद्यमन ।

उसिनब–क्रि० उसिन् + अब-धान्यादिक जलमे अग्निपाक ।

उसिना–पानि मे सिद्ध (धान्य ओ तदीय तण्डुल) ।

ऊ

ऊक–उल्का, मुखमे प्रज्वलित लम्बा बद्धतृणपुञ्ज ।

ऊकाऊकी–ऊकक क्रीड़ा सुखरात्रिक ।

ऊख–इक्षु, कुसिआर ।

ऊगब–क्रि० उग् + अब-उदय ।

ऊघब–क्रि० उघ् + अब - उद्वहन ।

ऊँच– उच्च ।

ऊँट–उष्ट्र, जन्तुविशेष । स्त्री० उँटनी ।

ऊठब–क्रि० उठ् + अब-उत्थान ।

ऊड़ब–क्रि० उड् + अब-उड्डयन ।

ऊद–माछ मारनिहार जन्तुविशेष ।

ऊधम–उत्सव ।

ऊन–ऊर्णा ।

ऊनी–ऊर्णावस्त्र ।

ऊपर–उपरि ।

ऊभी–तीक्ष्णाग्र बाती ।

ऊमी–काँच मरुआक आँटा ।

ऊरीबीरी–मनक अस्थैर्य ।

ऊस–ऊष ।

ऊसर–ऊषर ।

ऊहि–ऊह, तर्क ।

ए

एँ–अ० प्रश्नार्थक ।

ए–एतद्, प्रत्यक्ष निर्देश्य ।

एक–सं० स्वतुल्यद्वितीयशून्य । प्रथमसंख्यायुक्त

एकघरिआ–स्वतुल्य दोसराक घरसँ रहित गाममें बसनिहार ।
एकचारी–तुल्य दोसर चारसँ शून्य घर ।
एकचोपा–साम्यानाक एक प्रभेद ।
एकछाहा–आन अन्नसँ अमिश्रित (अन्न)।
एकजनिआँ–एक गोटाक योग्य छोट (पाकपात्रादि)।
एकजुतिआ–जाहिमे एक व्यक्तिक जूति हो ।
एकटक
एकटक्की } – दीर्घकाल तन्मात्रमे अक्षिपात ।
एकटक्की लगाएब–क्रि० लगब् + अब -तन्मात्रमे बराबरि अक्षिपात करब।
एकटङ्ग–एकभगाह, एक भाग अवनत ।
एकटङ्गा–एक पाएरेँ स्थिति ।
एकटङ्गा देब–क्रि० दू+अब-एक पाएरसँ ठाढ़ रहब ।
एकटप–एकावरण वस्त्रगृहविशेष ।
एकटार–पृथक् महानसादिक परस्पर सम्बन्ध ।
एकट्ठा–एकत्रित ।
एकठहुरी–एकमुष्टि, एकहि बेरमे ।
एकठा–एक काठक बनाओल (नाओ)।
एकढ़बा–फुटल बानरक दल्लू ।
एकतरफा–एकदिसाह ।
एकतारा–वाद्यविशेष ।
एकतालीस–एकचत्वारिंशत्, एक अधिकचालिस ।
एकतालीसम–एकतालिसक पूरक ।
एकतीस–एकत्रिंशत् । एक अधिक तीस।
एकतीसम–एकतीसक पूरक ।
एकतुरिआ–एकवयस्क ।

एकदम–वि० नितान्त ।
एकदिना–एक दिनमे सम्पन्न भेनिहार ।
एकदिसाह–एकतरफा ।
एकन्नी–एक आनाक राजकीय मुद्रा ।
एकपट्टा–एक पाटक ओढ़नाविशेष ।
एक परतार–कोनो एक समय ।
एकपिठिआ–अव्यवहित कनिष्ठ वा ज्येष्ठ ।
एकपुरुषिआ–एकपुरुषभोग्य (धनादि) ।
एकपेँड़िआ–एक गोटाक चलबाक रास्ता ।
एकफक्का–आधा फाँक कएल (सुपारी)।
एकबग्घा–क्रीड़ाविशेष ।
एकबटिआ–एक व्यक्तिक चलबाक योग्य बाट ओ तादृश नीपल भूमि ।
एकबट्टी–एकक चलबाक योग्य बाट ।
एकबतरिआ–एक बयसबाला ।
एकबरखा
एकबरखू } –एक वर्षक निर्मित १। एक वर्ष रहनिहार २।
एकबार–समाचारपत्र ।
एकबाहि–एकभगाह ।
एकभगत–एकभुक्त ।
एकभगाह
एकभग्गू } – एक भाग झुकल ।
एकमसिआ
एकमस्सू } – एक मासक जनमल (नेंना) ।
एकमहला–एक महलक (कोठी) ।
एकमुहिआ–एकोन्मुख ।
एकम्मा–पृथक् लटकल एक आम ।
एकरङ्गा–वस्त्रविशेष ।
एकलखत–बराबरि ।
एकलयँ
एकलेँ } –एकार मात्राक चिह्न ।

एकलेब–एकबेर लेबल ।
एकसओं–एकसम, बराबरि, अनुच्चावच।
एकसट्ठि–एकषष्टि, एक अधिक साठि।
एकसर
एकसरुआ } – एकाकी ।
एकसट्ठिम–एकषष्टितम, एक सट्ठिक पूरक ।
एकसम–एकरङ्ग समीकृत भूमि ।
एकसंभर–एकाटार ।
एकहत्तरि–एकसप्तति, एक अधिक सत्तरि।
एकहत्तरिम–एकसप्ततितम, एक-हत्तरिक पूरक ।
एकहत्थी–एक हाथक सोटा ।
एकहत्थू–एक गोटाक हाथें लगनिहारि माल १ । एक गोटाक हाथेँ सम्पादित २ ।
एकहारा–एक तहक वस्त्र ।
एकहेड़िआ–एकसंघसम्बन्धी ।
एका–घोड़ागाड़ीक प्रभेद ।
एकाएकी–अ० एकैकशः ।
एकाङ्गी–ओषधिविशेष ।
एकाटार–एकसंभर, परस्पर संबद्ध ।
एकाढ़–जेरफुट्टू मुख्य बानर ।
एकादशी–सं० एगारहम तिथि ।
एकान्त–सं० व्यत्तयन्तरशून्य स्थान ।
एकान्ती–खानगी, जनान्तिक ।
एकान्नब्बे–एकनवति, एक अधिक नब्बे।
एकान्नब्बेम–एकनवतितम, एकान्नब्बेक पूरक ।
एकाबन
एकाबन्न } – एकपञ्चाशत्, एक अधिक पचास ।

एकाबन्नम–एकपञ्चाशत्तम, एकाबनक पूरक ।
एकार–श्रेष्ठक नीच शब्दें सम्बोध १ । ए आखर २।
एकार मारब–क्रि० मार्+अब-श्रेष्ठक नीच शब्देँ सम्बोधन करब ।
एकारि–जकर चारू दिश जजाति कटल हो एहन जजातिबाला खेत ।
एकार्णवा–अतिजलव्याप्त ।
एकासी–एकाशीति, एक अधिक अस्सी
एकासीम–एकाशीतितम, एकाधिक अस्सी ।
एकासीम–एकाशीतितम, एकासीक पूरक।
एकैस–एकविंशति, एक अधिक बीस ।
एकैसम–एकविंशतितम, एकैसक पूरक ।
एकोँछ–एक दिसाह, एक दिस झुकल (खाम्हीप्रभृति) ।
एकोद्दिष्ट–वार्षिक श्राद्ध, वर्षी ।
एकोन–एक दिस टेढ़ ।
एकोर
एकौर } –एक दिस कम (भार आदि)।
एक्का–घोड़ाबाला गाड़ीक प्रभेद ।
एखन–एतत्क्षण ।
एखनुक
एखनुका } –एतत्क्षणिक, एहि कालक।
एगारह–एकादश, एक अधिक दश ।
एगारहम–एगारहक पूरक ।
एटन दोटन–क्रीड़ाविशेष ।
एड़ा–जूताक एडीलगक तरी ।
एड़ी–पाएर तरक गोल भाग ।
एड़ी दोड़ी–गुल्ली डण्टाक एक खेलि।
एतनी–एहि अल्प परिमाणक ।

एतने–एतावदेव सं०, एतबे ।
एतबा–एतावत्, एहि परिमाणक ।
एतय–अ० एहि ठाम ।
एतीकाल–एतेक समय धरि ।
एतीखन–एतेक क्षण धरि ।
एतेक–एतावत्, एहि परिमाणक ।
एत्ता–इयत्ता ।
एनमेन–अ० हूबहू ।
एना–अ० इत्थम् सं०, एहि प्रकारेँ ।
एनाएनी–अ० हस्तदर्शितदिगनुसार ।
एमहर–अ० एहि दिश ।
एमाढ़–तृणविशेष ।
एम्हर–अ० एहि दिश ।
एव–अ० सं० अवधारण । एहि प्रसङ्ग विद्योतन द्रष्टव्य ।
एसकर–एकाकी ।
एसकरुआ–दोसर समाङसँ हीन ।
एह–अ० क्रोधार्थक ।
एहन–एतादृश, एकर सन ।

ऐ

ऐआम–वि० समय ।
ऐँचब–क्रि० ऐँच् + अब-तिर्यक् होएब १। तिर्यक् करब २।
ऐजन–ओएह व्यक्ति ।
ऐँट–उच्छिष्ट, हि० जूठ ।
ऐँठकूठ–उच्छिष्ट तत्सम उभय ।
ऐँठकजार–जलमिश्रित अधिक ऐँठ ।
ऐँठन–घुमाएब ।
ऐँठब–ऐँठ् + अब-घुमाएब ।
ऐँठलाह–कथा नहि माननिहार । स्त्री. ऐँठलाहि ।
ऐँठा–डोरि, केशबन्धक ।
ऐँठार–उच्छिष्ट फेंकबाक स्थान ।
ऐँठी–ऐँठन ।
ऐँढब–क्रि० ऐँढ् + अब-घुमाएब ।
ऐँढ़ी–पाकक हेतु घुमाएब ।
ऐतिस–अभिमान ।
ऐयाम–वि० समय ।
ऐला–रोगविशेष, छोट मांस बढ़ल ।
ऐसतैस–क्रोधसँ भयवचन ।
ऐहब–स्त्री० अविधवा, सधवा ।

ओ

ओ–असौ, परोक्ष निर्देश्य १। अ० आओर २।
ओआक–पक्षिविशेष ।
ओआजिब–वि० उचित ।
ओइरी–धानक प्रभेद, सं० नीवार ।
ओकाएब–क्रि० ओक् + अब-बमनोपस्थितियुक्त होएब ।
ओगरब–क्रि० ओगर् + अब-रक्षार्थ लगमे रहब ।
ओगरबाह–रक्षक, स्त्री० ओगरबाहिनी ।
ओगरबाहि–रक्षकता, रक्षा ।
ओगारब–क्रि० ओगार् + अब-मालकेँ घास देब ।
ओङठन / **ओङठनी** }–जाहिमे सटि पीठक भरेँ बैसी से ।
ओंङठब–क्रि० ओङठ् + अब-पीठक भरेँ बैसब ।
ओछ–छोट १। कृपण, नीच २।
ओछओन–आस्तरण ।
ओछाएब–क्रि० ओछब्+अब-आस्तरण करब ।
ओछाह–नीच प्रकृतिक, स्त्री० ओछाहि ।

ओज–थोड । अल्पमान, शिकस्ती ।
ओजन–वि० परिमाण ।
ओजी–एबज, प्रतिनिधि ।
ओझराएब–क्रि० ओझर् + अब-अनायासेँ उद्धारक अयोग्य होएब ।
ओझरोट–ओझराएब ।
ओझा–ब्राह्मणक उपाधि १। गुनी २।
ओझैगिरी–यन्त्रमन्त्रप्रयोग ।
ओँटी–वस्ति, नाभिक नीचाँभाग (पेटमे)।
ओठ–ओष्ठ ।
ओठग (ङ) न करब–क्रि० कर्+अब-उपबासार्थ रात्र्यन्तमे भोजन करब।
ओठग (ङ) न / **ओठग (ङ) नी** }– जाहिमे सटि पीठक भरेँ बैसी ।
ओठग (ङ) ब –क्रि० ओठग् + अब-पीठक भरेँ बैसब ।
ओठर–अबेर, अन्तिम समय ।
ओड़नी–डोम आदिक वाद्यविशेष ।
ओड़हुल–पुष्पविशेष, सं० जपा ।
ओड़िआ–उत्कल, उड़ीसा ।
ओड़िका–दूध लारबाक ओ परसबाक वस्तुविशेष ।
ओढ़ना–ओढ़बाक वस्त्र ।
ओढ़नाएब–क्रि० ओढ़न्+अब-उनटि पनटि सर्वाङ्ग लगाएब ।
ओढ़नी–ओढ़बाक छोट वस्त्र ।
ओढ़ब–क्रि० ओढ़्+अब-वस्त्रकेँ देहने आच्छादनक हेतु लगाएब ।
ओढुल–सं० जपा, पुष्पविशेष ।
ओतनी–ओहि परिमाणक अल्प ।
ओतने–ओतबे, ओहि अल्प परिमाणक ।
ओतप्रोत–व्याप्त, भरल ।
ओतबस्थित–तदवस्थित, तद्रूप ।
ओतबा–तत्परिमाणक, तावान् सं० ।
ओतय–अ० ओहिठाम, सं० तत्र ।
ओतीकाल–ओतबा काल ।
ओती खन–ओतबा क्षण ।
ओती राति–ओतेक राति ।
ओतेक–ओहि परिमाणक ।
ओदरब–क्रि० ओदर्+अब-विदरण ।
ओदार–विदरण ।
ओदारब–क्रि० ओदार+अब-विदारण ।
ओदावर्त–परिच्छेद ।
ओदासोखा–किछु शुष्क किछु तीतल (वस्त्रादि) ।
ओदि–सं० दोहद, गुर्विणीक स्वाभाविक रोग ।
ओधि–बाँसक जड़ि ।
ओना–ओहि प्रकारेँ ।
ओनाओनी–अ० हस्तनिर्दिष्ट दूर सरल दिगनुसार ।
ओफ–रौदक आगर ।
ओबा–हैजा, सं० महामारी ।
ओमहर / **ओम्हर** } – अ० ओहि दिस ।
ओर–अन्त ।
ओरहा–साक्षात् आगिसँ छिम्मडि सहित पक्व द्विदल ।
ओराहब–क्रि० ओराह+अब-साक्षात् आगिमे शिम्बीसहित द्विदलक पकाएब ।
ओरि–भारक प्रथमभागक समान द्वितीय भाग ।
ओरिआएब–क्रि० ओरिअब्+अब- वस्तु ठीक करब ।

ओरिआओन–प्रबन्ध, सबील ।
ओल–खाद्य कन्दविशेष, सं० सूरण ।
ओलकोबी–हि० गाँठकोबी, कन्दविशेष।
ओलती–ओसारासँ बढल चारक निचला भूमि ।
ओलब–क्रि० ओल् + अब–गर्दा तर करैत हाथ घुमाए अन्नकेँ उपर आनब ।
ओलरब–क्रि० ओलर् + अब–पलरब ।
ओला–अतिसंशोधित वर्तुलाकार चीनी ।
ओलिआ–सिद्ध बाबाजी ।
ओस–बिनु मेघक आकाशपतित अति सूक्ष्म तुषार ।
ओसाएब–क्रि० ओसब् + अब–बसातसँ अन्नकेँ साफ करब ।
ओसाओन–ओसओनिहारक वेतन १। ओसयबासँ पृथक् भेल तृणादि २।
ओसारा–घरक बाह्य अनावृत कोष्ठ ।
ओसूल–आसादित (आदेय धन) ।
ओसूली–आदेय धनक आसादन ।
ओस्ता–वैद्यविशेष ।
ओस्ताद–वि० कारीगर ।
ओह–अ० खेद ।
ओहदा–वि० पद ।
ओहन–तादृश ।
ओहाएब–क्रि० ओह् + अब–बाहब ।
ओहार–आवरण ।
ओहासी–बलिष्ठ भूरससहित जल ।

औ

औआएब–क्रि० औ + अब – व्याकुल होएब ।
औक–वमन ।
औखध–औषध ।
औखधार–औषधविधया उपयोगी ।
औँघी–निद्राक पूर्वरूप ।
औँघाह–औँघीसँ युक्त । स्त्री० औँघाहि।
औँटन–दुग्धादिक पाक ।
औँटक–क्रि० औँट् + अब–दुग्धादिक पाक ।
औँठ–वस्त्रादिक प्रान्त ।
औँठा–अँगुठा १। अँगुठाक भूषण २।
औँठी–आँगुरक भूषण । अङ्गुलीयक ।
औनाएब–क्रि० औन् + अब–औलबौल होएब, अनवस्थिति ।
औनापथारी–आकुलतापूर्वक अन्वेषण ।
औन्हब–क्रि० औन्ह् + अब–सं० न्युब्जीकरण ।
औन्हा–मुरगा विशेष १ । बिना मुहक गुर २ । वासनक मुखबन्दकए उपरसँ आगिमे पकाओल फल ३।
औन्हापथारी–औनापथारी उठब ।
औन्ही–पाएरक भूषणविशेष, सं० मञ्जीर।
औबल–वि० उत्तम ।
औल–गरमी ।
औलबौल–गरमीसँ मनक व्याकुलीभाव ।
औषध–सं० भेषज ।
औषधी–चिकित्सा ।
औँसब–क्रि० औँस् + अब–स्नेहलेपन।

क

कएथा–कन्था ।
कएनिहार–उ० कर्त्ता । स्त्री कएनिहारि।
कएम–कतम, कोन संख्याक पूरक ।
कएल–कृत ।
कओर–कवल, खयबाक प्रमाण–विशेष ।

कँकड़ोहरि–काँकोड़क बिल ।
ककबा–कङ्कतिक, ककही ।
ककरासिंही–ओषधिविशेष ।
ककरेज
ककरेजा } – ओषधिविशेष ।
ककरैल–ओषधिविशेष ।
ककहा
ककही } – कङ्कतिक, ककबा ।
कँकोड़हा बाजू–बाँहिक भूषणविशेष ।
कखन–अ० कोन क्षणमे ।
कखनुक
कखनुका } – कोन क्षणमे भेल ।
कखहरा–कखप्रभृति शषसहान्त वर्णमाला।
कँखौर–काँखक गूर ।
कगजंघ–छोट–पैघ जाँघबाला ।
कँगना–कङ्कण, पहुँचाक स्त्रीभूषणविशेष।
कँगनी–उच्च भूमिक ओर ।
कँगहिआ–ओषधिविशेष, सं० अतिबला।
कङना–कङ्कण ।
कङनी–उच्च भूमिक अन्तभाग ।
कङहिआ–अतिबला ।
कङ्काल–शरीरक अस्थिपञ्जर ।
कच-कच–बालुकायुक्त (भातआदि) ।
कचकचाएब–क्रि० कचकच्+अब – क्रोधाकुल होएब ।
कचकचाह–उ० क्रोधस्वभावक । स्त्री० कचकचाहि ।
कचकब–क्रि० शिरा दुखाएब ।
कँचका–काँच प्रभेदक ।
कँचकुआह–आबासँ उद्धृत किञ्चित् अपक्व (मृद्भाण्ड) ।
कचनार–काञ्चनाल, पुष्पविशेष ।
कचनारी–ओड़हूल फूलक प्रभेद ।
कचब–क्रि० लग-लग छओ देब ।
कचबच करब–क्रि० बहुत बाजब ।
कचबचिआ–पक्षिविशेष ।
कचरब–क्रि० असमग्र भक्षण, आम आदि किछु खाएब किछु छोड़ब ।
कचरमकूट–अनेक वस्तुक पर्य्याप्त भोजन ।
कचरा–हाथमे पहिरबाक काचक गहना १। मोट हथजौड़ २।
कचलोहिआ–परिश्रमसँ देह चोरओनिहार।
कचहरी–वि० न्यायालय ।
कचार–थालपानिसँ युक्त (स्थान) ।
कचारब–क्रि० प्रक्षालन ।
कचाल–अधिक थालसँ युक्त (स्थान)।
कचिआ–खढ़ कटबाक दाँतबाला हाँसू १। कच्ची प्रभेदक (मोति आदि) २।
कँचिआएब–ना० काँची+अब–काँचीसँ युक्त होएब ।
कचुआबध–छिन्न-भिन्न काटब ।
कचुरी–कबै माछक छबरा १। जलज तृणविशेष २।
कचूर–कर्चुर, ओषधिविशेष ।
कचोआबध–छिन्न-भिन्न काटब ।
कचोट
कचोठ } – पश्चात्ताप ।
कचौरी–दालिसँ युक्त पूरी ।
कच्ची–नकली, अवास्तविक (मोति आदि) ।
कच्चू–कार्यमे अयोग्य, कार्य करबामे अपरिपक्व ।

कच्छाछोप–भरि जाँघ (जल़) ।

कछटा–कच्छटिका, नङोटा ।

कछन काछब–क्रि० कछ् + अब–व्याजसँ अवस्थान्तरक चेष्टा करब ।

कछब–क्रि० व्याजचेष्टा करब ।

कछबी–काछुक समान (पिलही) ।

कछमछ करब–क्रि० स्थिर नहि रहब ।

कछमछाएब–क्रि० कछमछ् + अब – कच्छपमत्स्यवत् स्थिर नहि रहब ।

कछमछी–अस्थैर्य ।

कछार–अस्त्रविशेष ।

कछुआडाबर–काछुक उदराकार डाबर ।

कछुआपीठ–कच्छपपृष्ठाकार (भूमि) ।

कछुबी–काछुक समानाकार गोल (पिलही) ।

कछेर–जलक प्रान्त, तट ।

कछोटा–कच्छटिका, कच्छी ।

कछौर–शुष्क पुरैनिक पातक बोझ ।

कजरगौर–धान्यविशेष ।

कजरङ्गी–कारी गाए । कज्जलाङ्गी ।

कजरी–जमल पिच्छड़ जलविकार १। कज्जल २। धान्यविशेष ३।

कजरोट–पैघ कजरौटी १। तत्सदृश भूषणविशेष २।

कजरौटी–काजरक पात्रविशेष ।

कजला–बटेरक प्रभेद ।

कजली–कज्जल, अग्निशिखाविकार ।

कज्जी–वि० अङ्गवैगुण्यसँ अक्षम ।

कञ्चटक–कानमे मारब १। सुखाएल काठमे उत्पन्न ओषधिविशेष २ ।

कञ्चगति–अ० कञ्चाक हिसाबेँ ।

कञ्चा–पैसा, पण ।

कञ्चु–कच्ची सं० कन्दसम्भव शाक विशेष।

कञ्छब–क्रि० पेट किञ्चित् दर्द युक्त होएब ।

कञ्छी काटब–क्रि० कट् + अब- परोक्ष देने (चलब) ।

कट–अवधि ।

कटकटाएब–क्रि० कटकट् + अब–कटकट शब्द करब (दाँत कटकटाएब रोग थीक) ।

कटकी–पातर काठी ।

कटकुट करब–क्रि० अस्थिर विचार करब ।

कटकेना–बन्धकी ।

कटगर–उ० नीक काटबाला, सुन्दर । स्त्री कटगरि ।

कटगैनी–कण्टकारी, ओषधिविशेष ।

कटनिआँ–तटक कटनाइ ।

कटनी–कटनाइ, सं० कर्त्तन, धनकटनी ।

कटनौत–काटल वस्तुक बनाओल (तीमन) ।

कटब–क्रि० छिन्न होएब ।

कटबन्धक–छोड़एबाक कटसँ युक्त बन्धक ।

कटबी बाजू–अलङ्करणविशेष ।

कटमट करब–क्रि० क्षोद-क्षेम करब ।

कटमटी–क्षोद-क्षेम ।

कटरा–कटाह (घोड़ा) ।

कटसरि–कण्ठभूषण, काँट ।

कटहर–कण्टकिफल, पनस, फलविशेष ।

कँटहा–काँटबाला १। कँटाह प्रभेदक २।

कटाउझ–परस्पर दाँतसँ काटब (कुकुर आदिक) ।

कटाओ–कषण, काटब । यथा कौशिकी बहुत कटाओ करैत छथि ।

कटार–अस्त्रविशेष, खोड़ेआ १ । वृक्षविशेष २ ।

कटारि–अधिक कटाओ ।

कटारी–अस्त्रविशेष ।

कटाह–दाँतसँ कटनिहार (कुकुरप्रभृति)।

कँटाह–अधिक काँटबाला ।

कटैआ–काँटबाला क्षुपविशेष ।

कटोँझ–कुकुर आदिक परस्पर दाँतसँ काटब ।

कटोरी–कटोरिका सं०, पूड़ी ।

कट्टर–अत्यन्त दृढ़ (मनुष्य) ।

कट्टू–लड़ाइमे हारि गेल, (बटेर आदि)।

कट्ठा–बिगहाक बीसम अंश ।

कठकेरा–पकलहु पर कठोर रहनिहार वा आँठीबाला केरा ।

कठकोकाँड़ि–अतिदृढ़ (निन्दामे)

कठखोधी–काठ खोधनिहार एक पक्षी ।

कठगर–कठोर (फलादि) ।

कठताल–वाद्यविशेष ।

कठधारा–न्यून बटिखारासँ हेरी-फेरी कए साधित बृहत् परिमाण ।

कठपीरी–पीताम्लानक, पुष्पविशेष ।

कठपुतरी–काठक पुतरी, काष्ठपुत्तलिका ।

कठबाद–बकबाद, वितण्डा ।

कठबादी–कठबाद कएनिहार ।

कठबाप–जन्मदातासँ अन्य माताक स्वामी ।

कठबेङ–बेङक प्रभेद ।

कठबेली–बेली फूलक प्रभेद ।

कठम–गुलगुल नहि भेल, पक्व कठिन फल ।

कठमाम–विमाताक भ्राता ।

कठरा–वाद्यादिक शरीर, ठट्ठर १। इजलास लग वादी-प्रतिवादीक ठाढ़ होएबाक स्थान २।

कठरिआ–रङ्गविशेष १। ताहिसँ रङल वस्त्र २।

कठलाज–कृत्रिम लज्जा ।

कठहर–कण्टकिफल, पनस ।

कठहँसी–कृत्रिम हास, हास्याभास ।

कठाइन–गन्धविशेष १। तद्युक्त वस्तु २ ।

कठार–अस्त्रविशेष ।

कठाल–गाछ कटबाक स्थान, काष्ठालय ।

कठिआरी–दाहक स्थान १। पसारीसँ ग्राह्य वार्षिक कर २।

कठिन–सं० कठोर १। कष्टसाध्य २।

कठिनाएब–ना० कठिन+अब-कठिन होएब ।

कठिनाइ–किञ्चित् कठिन ।

कठुआएब–क्रि० कठु + अब-शैत्यसँ काष्ठप्राय होएब ।

कठुऐनी–काष्ठप्राय होएब ।

कठुली–छोट कोठी ।

कठैत–सर्पविशेष ।

कठोर–सं० सकत ।

कठोह–कठोर ।

कठोहि–काठमे रहनिहार बेँग व साप ।

कठौत–काठक पात्रविशेष ।

कड़कड़ाएब–क्रि० कड़कड् + अब-कड़कड़ शब्द करब ।

कड़कब–क्रि० क्रोधसँ उत्तकटक्रियेच्छा ।

कड़गर–अत्यन्त कड़ा ।

कड़रब–क्रि० बड़दक दाँतकड़कड़ाएब १। ककरो उन्नतिक वारंवार उल्लेख करब २।
कड़रा–क्रकर, पक्षिविशेष ।
कड़रि–कदली, केराक गाछ ।
कड़हर–खाद्य जलीय कन्दविशेष ।
कड़हा–क्वाथ ।
कड़ही–अधिक दही दए बनाओल झोर ।
कड़ा–सक्कत, कठिन ।
कड़ाङ्कुल–बृहदाकार पक्षिविशेष ।
कड़ाम–दाउनिमे पाँती जोरसँ बड़दकेँ बन्हबाक रस्सा ।
कड़ार–व्यवस्था, प्रतिज्ञा ।
कड़ारी–व्यवस्थाबाला ।
कड़ी–शृङ्खला १। कोठाक छतक छोटका चौपहल काठ २।
कडुआइ–कटुता ।
कड़ू–कटु, खएबामे कटुरस ।
कड़ू तेल–सरिसब वा रैँचीक तेल ।
कड़ोरिआ–जातिविशेष ।
कढ़ी–दहीक घोरमे बनाओल तीमन ।
कण्टहा–पुँ० पात्र, श्राद्धमे पाएर पुजओनिहार ब्राह्मण ।
कण्टि–कन्ति, परिमाणविशेष ।
कण्टिरबा–उ० छोट नेना। स्त्री० कण्टिरबी।
कण्ठ–सं० शरीरावयवविशेष ।
कण्ठगत–कण्ठमे आएल ।
कण्ठदाह–सं० कण्ठक जलनि ।
कण्ठपुष्पी–ओषधिविशेष ।
कण्ठमलिआ–कण्ठीधारी, बाबाजी ।
कण्ठा–कण्ठक पैघ दानाक छोट माला।
कण्ठिआ–कण्ठीधारी बाबाजी ।
कण्ठी–कण्ठमे पहिरबाक तुलसीक माला ।
कण्डरिएँ-ताकब–क्रि० तक् + अब-कटाक्ष-वीक्षण ।
कण्डली–वृक्षविशेष, शिशुकन्दली ।
कण्डा–शरकाण्ड, सरकण्डा ।
कतका–कातमे स्थित ।
कतनी, **कतने** – किंपरिमाणक अल्प ।
कतबा–कियत् सं०, किंपरिमाणक ।
कतबाहि–तटसमीपक जलभूमि ।
कतय–अ०, कुत्र सं०, कोन स्थानमे ।
कतरनी–कर्त्तरी, पान कतरबाक वंशरचित अस्त्र ।
कतरब–क्रि० कर्त्तन, कैंचीसँ काटब ।
कतरा–कतरल, यथा सुपारीक कतरा १। मत्स्यविशेष २। उशीर, तृणविशेष ३।
कतरी–मत्स्यविशेष ।
कतहु–अ० कोनो स्थानमे, क्वचित् ।
कतिआ–काती, अस्त्रविशेष ।
कतिकहर–कार्त्तिक तथा तत्समीपक समय ।
कतिका–धान्यविशेष ।
कवितकाबतर–कार्त्तिकावतारसमय ओ तत्समीप पूर्व समय ।
कतिकी–कार्त्तिकमे होएनिहार (आम आदि)
कती काल–कियत् काल ।
कती खन–कियत्क्षण ।
कती राति–कियद्रात्रि ।
कतेक–कियत्, किंपरिमाणक ।

कतोक–कतिपय ।
कत्तल–कृत्त, काटल ।
कत्ता–काता, हाँसूक प्रभेद ।
कथ–कपित्थ, फलविशेष ।
कथक्कड़–बहुत कथा जननिहार ।
कथा–कथन १। दुर्वचन २। इतिहास ३।
कथोपकथन–नाना प्रकारक निन्द्य उत्तर-प्रत्युत्तर ।
कदन्न–सं० अधलाह अन्न ।
कदबा–कर्दम, खेतक कादो ।
कदबापखार–कदबाक अनवशेष ।
कदम–कदम्ब, वृक्षविशेष १। घोड़ाक गतिविशेष २।
कदम्ब–सं० वृक्षविशेष ।
कदराएब–क्रि० कदर+अब-शीतसँ भीत होएब ।
कदरिआएब–ना० कदरी + अब-शीत भीत होयब ।
कदरी–शीतसँ भीत ।
कदीमा–पीतकूष्माण्ड, लताफलविशेष ।
कदूकस–सजमनि प्रभृति केँ मेही बनयबाक सच्छिद्र वस्तुविशेष ।
कदै–थालमिश्रित जल ।
कन–कण १ । फल वा अन्नक आनुमानिक परिमाण २ ।
कनउसास–खेतक किंचित् ऊँच भाग १। भारी उठएबा मे मद्दति २।
कनकजीर–धान्यविशेष ।
कनकट–उ० जकर कान काटल हो । स्त्री० कनकटि ।
कनकट्टा–उ० अनादृियमाण काटल कानबाला । स्त्री० कनकट्टी ।
कनकट्टू–पु० काटल कानबाला आदर-विषय ।
कनकन–शीत ।
कनकन करब–मारबाक उत्साह करब ।
कनकनाएब–क्रि० कनकन्+अब -वेदनाविशेष ।
कनकनी–वेदनाविशेष १। शीतता २।
कनकुत्ती–जे खेत बराबरि कूत कएल जाए ।
कनखरल–कानि कएने स्थित ।
कनखा–फुटल भाँड़क टुकड़ा ।
कनखी–छोट कनखा १। चाउर आदि अन्नक टूटल अग्र-भाग २। आँखिक इसारा ३।
कनखुर–माछक कर्णाकार अङ्ग ।
कनखुराह–उ० खोचाह १। उपद्रव कएनिहार २।
कनगुरिआ–कनिष्ठा, सभसँ छोट आँगुर ।
कनगोज, **कनगोजर** – कीटविशेष १। कानक मूल भाग २।
कनचटक–कानक उपरका घाओ १। ओकर औषधविशेष २। कानमे मारब ३।
कनछी-काटब–क्रि० कट् + अब- परोक्ष बात धरब ।
कनछेदी–कर्णवेध ।
कनझप्पा–कान झपनिहार (टोपी) ।
कनतोप–चुपकी, मौन ।
कननमुह–उ० क्रन्दनक पूर्वरूपापन्न मुहबाला । स्त्री० कननमुहि ।
कनना–उ० अधिक क्रन्दनशील । स्त्री० कननी ।

कनपट्टी–कान ओ नेत्रक मध्यभाग ।
कनफट्टा–संन्यासीक प्रभेद ।
कनफुसकी } – कान लग सुस्तेसँ कहब।
कनफुस्सी } (निन्दा में)
कनबधा–मुख्य बाध सँ अन्यत्र थोड़ खेत ।
कनबह–अप्रधान बाहा ।
कनबहार–गतायात शून्य बहार ।
कनमन करब } –क्रि॰ मारबाक चेष्टा
कनमनाएब } करय ।
कनमा–सेरक षोड़शांश प्रमाण, छँटाक हि॰ ।
कनमाहीँ–एक कनमाक बटिखारा वा पैली ।
कनमुनिआँ–कनमुन्ना कएनिहार ।
कनमुन्ना–खेड़ि मे असत्य व्यवहार ।
कनरी–उपाड़ल गाछक सीर सहित माटि।
कनसार–भूजाक स्थान ।
कनसुन–अन्यमनस्क, कर्णशून्य ।
कनसुपती–बाँसक शूर्पाकार बल्कल ।
कनात–परदाक हेतु आवरणपटविशेष ।
कनाती–परदाक टाट ।
कनारि मारब–क्रि॰ मार+अब–जोर सँ चिकरब ।
कनारोहट } –अतिक्रन्दन ।
कनारोहठ }
कनाह–काण, एक आँखि सँ दर्शन शक्तिशून्य । स्त्री॰ कनाहि ।
कनिआँ–स्त्री॰ कन्या, अविवाहिता वा नवविवाहिता ।
कनिआँ पुतरा–कपड़ाक स्त्री-पुरूष ।
कनिआरि–वृक्षविशेष ।
कनिएँ–किञ्चित् ।
कनियाँ–स्त्री॰ कन्या, अविवाहिता १। वा नवविवाहिता २।
कनियाँ पुतरा–क्रीड़ार्थ वस्त्रनिर्मित स्त्री पुरुष ।
कनियेँ–किञ्चित्, अल्प ।
कनीटा–स्वल्प प्रमाणक ।
कनेआ–स्त्री॰ कन्या ।
कनेआँ पुतरा–कनिआँ पुतरा ।
कनेक–किञ्चित् ।
कनेठब–क्रि॰ ऐँठिकेँ कान्ह घुमाएब ।
कनैठी–कानक ऐँठब ।
कनैल–कर्णिकार, पुष्पविशेष ।
कनैली–कानक भूषणविशेष ।
कनोजरि–ठारिक अङ्कुर ।
कनोजिआ–ब्राह्मणजातिविशेष ।
कनोत–खाम्ह-खाम्हीक उपरका वस्तु मे बन्धन ।
कनोतब–क्रि॰ खाम्ह खाम्ही केँ उपरकासँ बान्हब ।
कनौसी–कर्णाङ्कुश, भूषणविशेष ।
कन्ताकनैल–पुष्पविशेष ।
कन्तोड़–मञ्जूषा, बन्द कए वस्तु रखबाक काष्ठादिरचित पात्रविशेष ।
कन्तोड़ी–छोट कन्तोड़ ।
कन्तोर्पें–चुपकी, मौन ।
कन्था–सं॰ गुदड़ी ।
कन्न कन्न करब–क्रि॰ मारबाक हेतु कसमस करब ।
कन्ना–खेड़िमे अनौचित्य १। शाकविशेष २।
कन्नी–रत्नादिक टुकड़ा १। कण २।

कन्या–सं॰ पुत्री ।
कन्यागत–कन्या दिसक लोक ।
कन्यादान–सं॰ कन्याक दान, विवाह ।
कन्हगर–दृढ़ कान्हसँ युक्त ।
कन्हुआएब–क्रि॰ कन्हु+अब-क्रोधसँ कुटिलवीक्षण ।
कन्हेठब–क्रि॰ कान्हपर लादब ।
कन्हेर–तट ।
कन्हौर–कान्हक वहनप्रयुक्त मांसवृद्धि ।
कपचब–क्रि॰ कैचीसँ केशादिक काटब ।
कपट–सं॰ छल ।
कपटी–सं॰ छली, ठक ।
कपड़ा–हि॰ वस्त्र ।
कपड़िया–पु॰ बाबाजीक प्रभेद ।
कपनी–कम्प ।
कपब–क्रि॰ कम्पन ।
कपहा–कापबाला (तृण) ।
कपार–ललाट ।
कपाह–काप+आह-किंचित् कापसँ युक्त।
कपिली–कपिला गाय, कैल गाय ।
कपुतनेड़हा–पु॰ कुपुत्र, नेढ़हा सन अकार्यक पुत्र (निन्दामें) ।
कपूत–पु॰ हि॰ कुपुत्र ।
कप्पा–वस्त्रक छोट खण्ड ।
कफ–स॰ श्लेष्मा ।
कफनचोर–वि॰ मुरदाक नूआ चोरओ-निहार ।
कफाह–उ॰ कफी । स्त्री कफाहि १। कफकारक (खाद्यवस्तु) २।
कबइ–कवयी, मत्स्यविशेष ।
कबकब–खएलापर मुहमे कुचकुची लगओनिहार (ओल कञ्चु प्रभृति)
कबकबाएब–क्रि॰ कबकब+अब- ओल आदिक भक्षणसँ विकारविशेषयुक्त होएब ।
कबजंघ–उ॰ छोट पैघ पाएरबाला । स्त्री॰ कबजङ्घि ।
कबजा–दू काठक संयोजक लौहादि निर्मित पेँचबाला वस्तुविशेष १। पहुँचा २। स्वाधीनता ३।
कबडील–क्रीड़ाविशेष ।
कबाएब–क्रि॰ कब् + अब-आबाक तावेँ वा आनो प्रकारेँ दरकयुक्त होएब ।
कबाछु–कपिकच्छु, विषबाला लताविशेष।
कबाड़–कपाट ।
कबाला–वि॰ विक्रय पत्रविशेष ।
कबाहटि–कठिनता, असौकर्य ।
कविता–कविकर्म, कवित्व आदि ।
कवितामं–काव्याकार काव्यभिन्न (लेख) ।
कवित्त–छन्दविशेष ।
कबीला–काम्पिल्ल ।
कबुलचोर–उ॰ स्वीकारक अवसरपर नठनिहार । स्त्री॰ कबुलचोरनी ।
कबुला–पूर्व अङ्गीकार ।
कबुलापाती–देवाराधनाक पूर्व अङ्गीकार ओ सम्प्रति आचरण उभय ।
कबूल–वि॰ स्वीकार ।
कबूची } –उपद्रावक ।
कबुच्ची }
कबै–कवयी, मत्स्यविशेष ।
कब्बू–बटेर रखबाक पिजड़ा ।
कम–अल्प ।
कमचा–छुरिकाकार तीक्ष्ण बाती ।

कमचालि–मन्दगामी, कम चलनिहार ।
कमची–छोट कमचा ।
कमठाइनि, **कमठान** –तृणरहित करब ।
कमण्डल–कमण्डलु ।
कमण्डलु–सं० जलपात्रविशेष ।
कमतिआ–पु० खेतक कार्यमे नियुक्त भृत्य ।
कमती–अल्पता ।
कमब–क्रि० अल्प होएब ।
कमरकस–डाँड़क भूषणविशेष, मेखला ।
कमरसारि–कर्मकारशाला, कमारक कार्यालय ।
कमरा–वि० कोठली ।
कमरिआ–पु० एक प्रकारक बाबाजी ।
कमरी–कटहरक कोमे सटल कोसदृश १। घोड़ाक रोगविशेष २।
कमल–सं० पद्म १। कम्बल २। न्यूनीभूत ३।
कमलगट्टा–ढाठमे मसालक हेतु माटिक चिलम सन १। कमलाक्ष २।
कमलपत्री–कमलक पातक समान रङ्ग।
कमला–स्त्री. नदीविशेष १। नेत्ररोगविशेष, कामला २।
कमलाक्ष–सं० कमलक बीआ ।
कमसरही–स्वल्पकरक, जाहि जमीनक मालगुजारी थोड़ हो ।
कमस्सल–वि० नकली, अतात्त्विक ।
कमहिआ–कामहि, कार्यहीन ।
कमाइ–कमएबाक वेतन १। कमाएब २।
कमानी–छाता चसमा आदिमे लागल तार १। अण्डकोष बन्हबाक यन्त्र २।
कमार–उ० कर्मकार, काठक काज कएनिहार । स्त्री० कमैनि ।
कमालि–पसारीक वार्षिक निश्चित देय ।
कमासुत–कर्मासक्त, कमएबामे पूर्ण प्रवृत्त ।
कमी–न्यूनता ।
कमीला–औषधविशेष ।
कमैनि–स्त्री० कमार जातिकस्त्री ।
कमोट–पसारीक वार्षिक नियत कमाई अन्न ।
कम्पास–पक्षी बझएबाक यन्त्र ।
कम्बल–सं० भेँड़ाक रोमक आसन वा ओढ़ना ।
कम्म–अल्प ।
कम्मल–कम्बल ।
कम्मी–अल्पता ।
कयनिहार–उ० कर् +अनिहार कर्त्ता । स्त्री० कयनिहार ।
कयम–कतम, कोन संख्याक पूरक ।
कयल–कर् + अल=कृत ।
कर–कवल, ग्रास, कओर १। खप्पा २।
करकर करब–क्रि० आनक अप्रिय बाजब ।
करकराएब–क्रि० करबक+अब-करकर शब्द करब ।
करकरेज–ओषधिविशेष ।
करँकुटुमैती–विवाहादि सम्बन्ध ।
करगर–उ० पैघ-पैघ कर खएनिहार । स्त्री० करगरि ।
करची–वंशशाखा ।
करछु–धातुरचित दर्वी ।
करछुली, **करछुल्ली** – छोट करछु ।

करजनी–करञ्ज, ओषधिविशेष ।
करजान–कदल्युद्यान, केराक गाछक स्थान ।
करजोड़ी–पानक प्रभेद ।
करनी–क्रिया १। खुरपीसन लेबबाक साधनविशेष २।
करब–क्रि० करण ।
करवीर–सं० पुष्पविशेष ।
करम–कर्म १। अदिष्ट २।
करमसह–अ० क्रमशः ।
करमसाँढ़–भाग्यवान् ।
करमा–धान्यविशेष ।
करमी–कलम्बी, लताविशेष ।
करलत–बन्धनोपयोगी दृढ़ लताविशेष ।
करसी–सुखाएल गोबर ।
करहड़–करहाट, कन्दविशेष ।
कराओं–कलाय, अन्नविशेष ।
करामाति–वि० युक्ति ।
करामाती–वि० युक्ति कएनिहार ।
कराह–कटाह, पैघ कराही ।
कराहब–क्रि० दुःखसँ कहब ।
कराही–माटिक छोट कराह ।
करिअंमा–जे पकलहुपर हरिअर रहए से आम ।
करिआ–कारी प्रभेदक ।
करिआएब–ना० कारी+अब-कारी होएब।
करिआ झाँप–ओषधिविशेष ।
करिआझुमरि–स्त्रीक क्रीड़ाविशेष ।
करिआरी–कलिकारी, ओषधिविशेष ।
करिओँछ–ईषत् कृष्ण ।
करिऔत आबाद, **करिऔती आबाद** –फागुन चैतमे छीटिकें आबाद ।
करिक्का–उ० कारी प्रभेदक । स्त्री० करिछौँहि ।
करिछोँह–किञ्चित् कारी ।
करिनपट, **करिनबह** –करीनसँ पटएबाक बाहा ।
करिनबाह–पु० करीन पटओनिहार ।
करिनबाहि–करीन पटओनाइ ।
करिहारी–ओषधिविशेष ।
करीन–पानि पटएबाक गहींड़ लम्बा पात्र।
करीब–वि० लगभग ।
करुआरि–नाओ खेबबाक साधन ।
करेज, **करेजा** – हृदयाभ्यन्तरक मांसपिण्डविशेष ।
करैत–सर्पविशेष ।
करैल, **करैला** –कारवेल्ल, लत्तीमे फड़निहार फलविशेष ।
करोट–पार्श्व ।
करोना–करमर्द, अम्ल फलविशेष ।
कर्करेज–ओषधिविशेष ।
कर्णफूल–कानक पुष्पाकार अलङ्करण ।
कर्णवेध–स० कनछेदी, कानमे छिद्र करब।
कर्ज, **कर्जा** –वि० ऋण ।
कर्जान–कदलीक उद्यान, केराक गाछी ।
कर्तव्यता–सं० विवाहादि क्रिया ।
कर्त्ता–सं० कएनिहार १। श्राद्धकर्ता २।
कर्नाल–वाद्यविशेष ।
कर्पूर–सं० कपूर हि० ।
कर्म–सं० क्रिया १। अदिष्ट २।
कर्मकाण्डी–सं० शास्त्रोक्त क्रिया कएनिहार ।

कर्मसाँढ़–भाग्यवान् ।

कर्माधर्मा–सं० भाद्र शुक्लक एकादशी।

कर्रा–बनगोइठा ।

कर्रा छाउर–बनगोइठाक छाउर ।

कर्रोआ–वृक्षनाशक कीटविशेष ।

कल–यन्त्र १। निचेनी, शान्ति २।

कलकल करब–क्रि० अतिबुभुक्षा जनाएब ।

कलकलाएब–क्रि० अति बुभुक्षा जनाएब।

कलकलि–पामा, रोगविशेष ।

कलकली–अति बुभुक्षा ।

कलकोसल–अ० करकौशल सँ, सुस्ते सँ ।

कलगी–पागक अङ्गविशेष ।

कलगैआँ–लोटाक प्रभेद ।

कल जोरब–क्रि० दुहू हाथ जोड़ब ।

कलजोड़िआ–शाकविशेष १। अञ्जल्याकारक (पान) २।

कलपनाथ–ओषधिविशेष ।

कलपब–क्रि० कलप् +अब–अति दैन्यक प्रकाश करब ।

कलबल–अ० चेष्टा नहि करैत, चुप्प ।

कलबाड़–जातिविशेष ।

कलम–लेखनी १। वि० गाछ मे गाछक जोड़ २।

कलमकाठी–कलमयोग्य खड़हीसन एक गाछ १। धान्य विशेष २।

कलमदान–वि० मसि लेखनी रखबाक पात्र ।

कलमबाग–वि० वृक्षान्तर मे जोड़ल गाछक समूह ।

कलमी–वि० कलमक (आम), राजाम्र ।

कलर–उ० निःस्व, खाद्याखाद्य-विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री० कलरनी ।

कलस–कलश, घट ।

कलसस्थापन–सविधि घटस्थापन ।

कलसा–देवघट ।

कलसी–छोट देवघट ।

कलह–सं० झगड़ा ।

कलहन्त–कलहान्त, झगड़ा पर्यन्त ।

कलाबत्तू / **कलाबत्तू** }–आभूषण मे लगएबाक सोनाचानीक तार १। तार सँ मढ़ल डोरी २।

कलाल–जातिविशेष ।

कली–कलिका ।

कलेजा–उदरस्थ अङ्गविशेष १ । सामर्थ्य २ ।

कलेस–क्लेश ।

कलोल–घोल, कोलाहल ।

कलौ–मध्याह्नक भोजन ।

कल्लर–उ० निःस्व, खद्याखाद्य विचारशून्य भिखमङ्गा । स्त्री० कलरनी ।

कल्ला–दाँतक आधार ।

कल्ली–कलिका, फूलक अङ्कुर ।

कल्हुका–जे काल्हि भेल वा होएत तकर प्रभेद ।

कष्ट–सं० दुःख ।

कसकसाएब–क्रि० कसकस् + अब–सक्कत होएब ।

कँसकूट–धात्वन्तरमिश्रित कांस्य ।

कसब–क्रि० दृढ़ करब १ । कसौटी मे घषण २ । बोरा आदि मे धान्यादिक भरब ३ । घोड़ा सुसज्जित करब ४ ।

कसमस करब–क्रि० उकसपाकस करब, अस्थैर्य ।

कसमसाएब–क्रि० कसमस्+ अब–अस्थैर्य ।

कसरति–वि० व्यायाम ।

कसरात–वि० हिसाबक शेष ।

कसरि–वि० सिद्धिमे किञ्चित् क्रियाक शेष ।

कँसहेंड़ी–पितड़िक लोहिआ, व्यञ्जनपाक-पात्र ।

कसाइ–वधकर्त्ता, चाण्डाल ।

कसाए–कचूरक चूर्णमिश्रित यवक चूर्ण।

कसामसी / **कसामस्ती** }–अनवकाशता, सिकस्ती।

कसाय–सुगन्धित कचूर आदिक चूर्ण ।

कसीदा–वि० वस्त्र पर सुइ सँ निर्मित चित्र ।

कसीस–रङ्गकसीस, रञ्जक द्रव्यविशेष ।

कसूर–वि० अपराध ।

कसूरी–वि० अपराधी ।

कसेरा–उ० बरतन बेचनिहार जातिविशेष ।

कसेरनी–स्त्री० कसेरा जातिक स्त्री ।

कसैआ–पु० व्याध, बड़दक अण्डकोष कटनिहार ।

कसोन्ह–धान्यविशेष ।

कसौटी–निकष, स्वर्णपरीक्षाक प्रस्तरविशेष ।

कस्तर–अपाकरणीय तृणादि ।

कहब–क्रि० कथन ।

कहबी–लोकोक्ति ।

कहर–अनर्थ ।

कहरब–क्रि० दुःखें 'अहँ अहँ' इत्यादि शब्द करब ।

कहरबा–पुं० कहार+वा–अनादरणीय कहार ।

कहाँ–अ० कुत्र, कोन स्थानमे १। निषेध २।

कहाओत–द्विरागमनक पूर्व दिन कहबाक हेतु भार १। वि० दुर्भिक्ष २।

कहाँदन–अ० अज्ञात स्थानमे ।

कहाँधरि–अ० किमवधि, कहाँ तक हि०।

कहार–उ० शिविकावाहक जाति-विशेष।

कहारनी–स्त्री० कहारक स्त्री ।

कहारी–कहारक कर्म, शिविकावाहन ।

कहाँसँ–अ० कोन स्थानसँ ।

कहासुनी–परस्पर कहब-सुनब ।

कहिआ–अ० कोन कालमे । प्राकृत-कइआ ।

कहुआ–वृक्षविशेष ।

कहुखन–अ० कोनहु क्षणमे ।

काइनि–कानि, अभ्यन्तर स्थापित क्रोध।

काइल–उ० वि० वादमे प्रमाण सँ मिथ्यावादी निश्चित । स्त्री० काइलि ।

काउन / **काउनि** }–कङ्गु, अन्नविशेष ।

काएथ–उ० कायस्थ, जातिविशेष । स्त्री० कैथिनी ।

काकरासिंगी–ओषधिविशेष ।

काँकड़ि–फलविशेष ।

काकमाची–ओषधिविशेष ।

काका–उ० पितृव्य । पितृव्यक स्त्री० काकी ।

काँकोड़–कर्कटी, जन्तुविशेष ।
काँख–कक्ष, बगल हि० ।
काँखी–पातक लगसँ चलल तमाकू आदिक डाँट ।
काग–अयुग्म ।
कागज–वि० पत्र, बनाओल पात ।
कागजी–हिसाब-किताबमे पटु १। नेबोक प्रभेद २। बदामक प्रभेद ३।
कागत–वि० कागज, पत्र ।
कागदोस्त–वि० क्रीड़ाविशेष ।
कागातूआ–पक्षिविशेष ।
काङ्क्षा–सं० इच्छा ।
काच–सं० सीसा ।
काचनोन–काचलवण ।
काँच–अपक्व (फलादि) ।
काँची–नेत्रविकार ।
काछ–कच्छ, अङ्गविशेष ।
काछब–क्रि० कछ + अब-अवस्थान्तरक चेष्टा करब १। हाथक निचला भाग लगाए घृतादिक उद्धार २।
काछु–कच्छप ।
काज–कार्य ।
काजबूत–कार्यादि ।
काजर–कज्जल, अञ्जन ।
काँजी–फलविशेष ।
काजुल–उ० कार्यपटु । स्त्री० काजुलि ।
काजू–फलविशेष ।
काञ्चन–आकारक मात्रा ।
काट–आकार १। विद्वेष २। छेदन ३।
काँट–कण्टक १। गरदनिक भूषण २।
काँटकूस–कण्टकादि ।
काटछाँट–खण्डन-मण्डन ।
काटब–क्रि० कट्+अब-छेदन ।
काँटा–लोहाक कील ।
काटि–तेलक विकार ।
काँटी–छोट लौहशङ्कु ।
काठ–काष्ठ ।
काठी–छोट पातर काष्ठ ।
काँड़–बोझक राशि ।
काड़ा–पाएरक भूषणविशेष ।
काड़ाबीड़ी–पानक एक प्रकारक बीड़ी।
काँड़ि–मालकेँ औषध पिअएबाक चोँगा।
काढ़ब–क्रि० काढ़ + अब–पाकपात्रसँ उद्धार करब ।
काढ़ा–क्वाथ ।
कात–दिश १। पोखरि आदिक समीप देश २। बाह्य ३।
कातकरोट–कात वा ताहूसँ बाह्य ।
कातर–उ० सं० कदरी, कार्यभीरु स्त्री० कातरि ।
काँति–ग्लह, हारिमे देय धन १ । कान्ति २ ।
कातिक–कार्त्तिक ।
कातिब–वि० प्रमाणपत्र लिखनिहार ।
काँती–कर्त्री, छोट खड्ग ।
कादर–कातर ।
कादो–कर्दम, पाँक, कदबा ।
कान–कर्ण, श्रवणेन्द्रिय १। कर्ण-शष्कुली २।
कान कुकुहाएब–क्रि० कुकुह+अब–कान कुड़िआएब ।
कान टनकब–क्रि० कानक व्यथा ।
कान पाथब–क्रि० पथ्+अब–सुनबाक हेतु कान एकाग्र करब ।

कानब–क्रि० कन् + अब-क्रन्दन ।
कानब-खीजब–क्रि० कन्+अब, खिल+अब-रोदन ओ शोकजन्य चेष्टान्तर।
कानर–करीन पटएबाक हेतु कोढ़ल जलाधार ।
काना–शाकविशेष ।
कानाकानी–परस्पर कोप ।
कानारोहट / **कानारोहठ** }–अधिक क्रन्दन ।
कानि–सञ्चित कोप, ईर्ष्या ।
कानी–कानलग विन्यस्त राखल केश ।
कानू–उ० जातिविशेष । स्त्री० कानूनि ।
कानून–वि० नियम, न्याय ।
कानोकान–अ० कान पर्यन्त, कन्हेर धरि।
कान्ति–सं० शोभा ।
कान्ती–माटि मिलाएकेँ बनाओल (लोहक लोहिआ)
कान्ह–स्कन्ध ।
काप–तीक्ष्ण तृणादिसँ त्वचाक भेद ।
कापब–क्रि० कप् + अब–कम्पन ।
कापा–कप्पा, वस्त्रखण्ड ।
कापी–वि० नाथल कागत ।
काफर–कट्फल, ओषधिविशेष ।
काफी–वि० पर्याप्त ।
काबा–देहमे पहिरबाक वस्त्रविशेष १। मुसलमानक एक तीर्थस्थान २।
काबिल–वि० बुद्धिमान, लौकिक व्यवहारपटु ।
काबू–बटेरक पिजड़ा १। वि० अधीनता २ ।
कामत–जिरात, खाप खेत ।
कामति–शूद्रविशेषक उपाधि ।
कामधु–धान्यविशेष ।
कामना–इच्छा ।
कामरु–भार, जाहिमे गङ्गाजल बोझल जाए १। देशविशेष २।
कामला–रोगविशेष ।
कामि–टकुरी आदिमे लगएबाक वंशादिनिर्मित लाम पातर शलाका।
कामिनी–पुष्पविशेष ।
कायथ / **कायस्थ** }–उ० कायस्थ, लेखजीवी जातिविशेष । स्त्री कैथिनी।
कार–कार्य ।
कार कौआ–द्रोणकाक ।
कारखाना–वि० कार्यालय ।
कारण–सं० हेतु ।
कारन–हेतु १। कारण्डव पक्षी २ ।
कारनी–चिकित्स्य, जकरा कारणेँ देवालयगमन हो ।
कारबार–वि० व्यापार ।
कारी–कृष्णवर्ण ।
कारीगर–शिल्पी ।
कारीगरी–वि० शिल्प ।
कार्य–सं० कृत्य ।
काल–सं० समय ।
कालकण्टक–दुष्ट, कण्टकतुल्य कष्टद, बलाय ।
कालदार–दस मासाक असरफी ।
कालि–न्याय कएलासँ मिथ्यावादित्वेन निर्णीत ।
काल्हि–अव्यवहित पूर्व ओ पर दिन ।
काल्हुक–अव्यवहित पूर्व वा पर दिन सम्बन्धी ।
काशीबाल–काशीमे बनल (लोटा आदि)।

काँस–कांस्य, धातुविशेष ।

कासनी–काँटबाला क्षुपविशेष ।

कास्मीरी–काशमीर में भेनिहार ।

काहकूह–कस्तर, अपाकरणीक तृणादि।

काहि काटब–क्रि० कट् + अब-दुर्दशाप्राप्त होएब ।

किआरी–आलवाल ।

किएक–अ० कुतः, कोन कारणें ।

किच्छु, **किछ** – किञ्चित्, कुछ हि०।

किञ्चित्–अ० सं० अल्पपरिमाणक, थोड़, किछु ।

किड़री–अधिक काल जल मे रहनहु नहि फुलल (केराओ आदि) १। भुजलहु उत्तर नहि फुटल (मखान) २।

किनब–क्रि० क्रयण ।

किनहेरि–तट, धारक उभय भाग जलसँ अव्याप्त ।

किनार–कात, जलाशयक तट ।

किनारी–कपड़ामे लगयबाक द्रव्यसूत्ररचित चकचक वस्तु ।

किन्नहु–अ० कथमपि ।

किफाइत–वि० सस्त, अल्प मूल्यग्राह्य ।

किमती–मूल्यवान् ।

किम्मति–वि० मूल्य १। पराक्रम २।

कियारी–आलवाल ।

कियेक–अ० कस्मात् कारणात्, क्यों हि०।

किरची–एक प्रमाणसँ परिमित सूत्र ।

किराया–भारा, मासूल ।

किरिया–शपथ ।

किरीच–ठेँगामे पैसाए रखवा योग्य अस्त्रविशेष ।

किरीट–सं० देवताक वा राजाक शिरोभूषण ।

किलहोरि काटब–क्रि० कट्+अब-दुःखेँ शब्द करब ।

किलोल–अधिक शब्द, चीत्कार ।

किल्ला–पैघ कील ।

किल्ली–छोट कील ।

किसमिस–बिनु आँठीक शुष्क अङ्गूरक प्रभेद ।

किसान–खेती कएनिहार ।

किस्तान–क्रिस्तान, क्रिश्चियन ।

किस्ती–सतरञ्जक एक गोटी ।

की–किम्, जिज्ञासाविषय १। अ० क्या हि० ।

कीआ–सिन्दूरादि रखबाक युग्म पात्र विशेष ।

कीड़ा (रा)–कीट ।

कीदन–अ० अज्ञात, यत्किञ्चित् ।

कीनब–क्रि० किन्+अब-क्रयण ।

कीमति–वि० मूल्य ।

कीर्ति–सं० यश ।

कीर्तिशिला–सं० मन्दिरादिक समयादि सूचक लेखयुक्त शिला ।

कील–सं० पैघ किल्ली ।

कुअन्न–कदन्न ।

कुअवसर–अधलाह अवसर ।

कुइर–कम कारी डिम्हाबाला ।

कुकर्म–सं० अधलाह क्रिया ।

कुकर्मी–सं० अधलाह कर्म कएनिहार ।

कुकुर–कुक्कुर, श्वान ।

कुकुरकटाउझ–कुकुरक परस्पर काटब ।

कुकुरकाँट, **कुकुरटङ्गा** –काँटक प्रभेद ।

कुकुरचालि–अस्थिर प्रकृतिक अविवेकी।

कुकुरभुक्की–गिदरनोच, निन्दय (कपड़ा)

कुकुहाएब–क्रि० कुकुह्+अब-कानक कुड़िआएब ।

कुकूर, **कुक्कुर** –श्वान ।

कुगर–उचित गरेँ नहि बैसल (सिन्धुक आदि) ।

कुङ्कुम–सं० केसरि ।

कुचकुच करब–क्रि० कण्डूजनक होएब।

कुचकुचाएब–क्रि० कुचकुचरु+अब होएब । जाहि में कुड़िअएबाक इच्छा हो तादृश वेदना ।

कुचकुची–कण्डूजनक वेदना विशेष ।

कुचरब–क्रि० अस्पष्ट बाजब ।

कुचराह–कतोक सिद्ध कतोक असिद्ध (भात आदि) ।

कुचालि–अधलाह चालिबाला ।

कुचेष्टा–अधलाह चेष्टा, परनिन्दा ।

कुच्च लागब–क्रि० लग्+अब-घोड़ा आदिक चलबाक काल पाएरमे पाएर लागब ।

कुच्चा–साना, चोखा हि० ।

कुच्ची–रञ्जनादिक साधनविशेष ।

कुञ्जबाह–हाथीक सङ्ग बर्छा लेने चलनिहार ।

कुञ्जी–कुञ्जिका, ताला खोलबाक यन्त्र।

कुटकी–कटुका, ओषधिविशेष ।

कुटना–कुटबाक साधन ।

कुटनी–स्त्री० जारकेँ अननिहारि, कुट्टिनी।

कुटब–क्रि० कुट्टन, मुसलादिसँ आघात देब ।

कुटाओन–कुटबाक बोनि ।

कुटिआ–कुट्टी १ । खण्ड २ ।

कुटुम–उ० कुटुम्ब, स्त्री० कुटुमिनी ।

कुटुमारए–कुटुम्बालय, कुटुम्बक व्यवहार।

कुटुमैता, **कुटुमैती** –कुटुम्बक व्यवहार ।

कुटुम्ब–सं० सम्बन्धिक ।

कुट्टी–धान्यादिक कुटब ।

कुठट्ठ, **कुठाठ** –कुत्सित रीति ।

कुठाठ मचाएब–क्रि० मचब् + अब –कुत्सित रीति करब ।

कुठाम–कुत्सित स्थान ।

कुड़कुड़ाएब–क्रि० कुड़कुड् + अब-किञ्चित् क्रोधयुक्त होएब ।

कुड़नी–छोट सोझ कानक घैल ।

कुड़बार–पैघ कूड़ा ।

कुड़रा–गण्डूष ।

कुड़री–पक्षिविशेष ।

कुड़हरि–कुठार ।

कुड़िआएब–क्रि० कुड़ि+अब-कण्डूयुक्त होएब ।

कुड़िऐनी, **कुड़िहठि** –कण्डू ।

कुड़ुर–गण्डूष ।

कुड़ेर–पक्षिविशेष ।

कुडोरि–मार्गक वक्रता ।

कुढ़ब–क्रि० मनहि मन क्रोध करब ।

कुढब–बेडोल, कुत्सिताकारक ।
कुण्ड–सं० होमाद्यर्थ खाधि ।
कुण्डल–सं० कर्णभूषणविशेष ।
कुण्डली–फलविशेष, लताविशेष ।
कुण्डा–भाँग वा नोसि घोँटबाक पात्र ।
कुण्डाबोर–पूरा रङ्ग ।
कुण्डी–नोसि घोँटबाक गँहीड़ पात्र ।
कुतकुताओन–सतरञ्ज मे ताराउपरी दू प्यादा सँ मातु ।
कुतब–क्रि० अन्दाजसँ परिमाण करब ।
कुतरुम–क्षुपविशेष ।
कुतर्क–सं० अनुचित तर्क १ । कुताक २ ।
कुतहगरदनि–छोट गरदनि बाला ।
कुताक–सम्पन्नताक कारणक विघटन ।
कुताही–कार्पण्य ।
कुत्ता–कुक्कुर ।
कुथनी–पक्षिविशेष ।
कुथब–क्रि० सक्लेश अपान वायुकेँ गुदामार्ग दिस प्रेरित करब ।
कुदब–क्रि० कूर्दन, हि० फाँदना ।
कुदिन–अधलाह दिन ।
कुदेश–अधलाह देश ।
कुन्द–सं० पुष्पविशेष ।
कुन्नह–कानि ।
कुपच–अपक्वता, विपाक ।
कुपथ–पथ्यविरूद्ध ।
कुपीठ–कुडोरि ।
कुप्पा–घृतादिभाण्ड ।
कुप्पी–छोट घृतादिभाण्ड ।
कुप्फर / **कुफर** } –वि० कलह ।
कुफर मचब–क्रि० अधिक झगड़ा होएब ।
कुबाट–अधलाह मार्ग ।
कुबेर / **कुबेरि** } –अधलाह वेला ।
कुब्योँत–कुप्रबन्ध ।
कुभाँजि–असरल मार्ग ।
कुमरम–कुमारकर्म, उपनयन ओ विवाहसँ पूर्व दिन कुमार ओ कुमारिक कर्मविशेष १ । कुमर्म २ ।
कुमर्म–सं० मर्मक नहि बचाओ ।
कुमार–उ० सं० अनुपनीत १ । अकृतविवाह २ ।
कुमारि–स्त्री० कुमारी, अकृतविवाह ।
कुमुदिनि / **कुमुदिनी** } – कुमुद्वती, राति केँ जलमे फुलएनिहार उजर फूल ।
कुम्भी–जलाशयक आच्छादक तृणविशेष।
कुम्हड़–श्वेत कूष्माण्ड ।
कुम्हड़ा–कीटविशेष ।
कुम्हरौड़ी–कुम्हड़सँ बनाओल वटी ।
कुम्हरौट–कुम्हारक उपयोगी माटि ।
कुम्हलाएब–क्रि० कुम्हल्+अब-पात फूलक मूर्छित होएब ।
कुम्हार–उ० कुम्भकार, जाति-विशेष । स्त्री कुम्हैनि ।
कुम्हिलाएब–क्रि० कुम्हिल्+अब-पात फूलक मूर्छित होएब ।
कुम्ही–कुम्भिका, कुम्भी ।
कुम्हैनि–स्त्री० कुम्हारक स्त्री ।
कुयोग–अधलाह योग ।
कुरकुट–कस्तर, अपाकरणीय तृणादिपुञ्ज ।
कुरकुटाह–कुरकुटसँ युक्त ।

कुरङ्ग–कुलक्षण ।
कुरथी–कुलत्थ, अन्नविशेष ।
कुरमी–शूद्रजातिविशेष ।
कुल–सं० वंश ।
कुलच्छन–अधलाह लक्षण ।
कुलच्छनि–स्त्री० कुलटा ।
कुलदेवता–सं० कुलपूज्यदेवता, गोसाउनि।
कुलपुरुष–कुलक विशिष्ट पुरुष ।
कुलवृक्ष–सं० वृक्षसदृश कुलपुरुषक नामावली ।
कुलामय–सं० कुलागत रोग ।
कुलीन–सं० नीक कुलमे जनमल ।
कुल्ली–वि० जन, दैनिक नियोगवाला भृत्य ।
कुल्हा–जाँघक ओ बाँहिक जोड़ ।
कुश–सं० दर्भ ।
कुष्ठ–सं० चर्मरोगविशेष ।
कुष्ठी–सं० कुष्ठरोगी, कोँढ़ि ।
कुसमय–सं० अधलाह समय ।
कुसंयम–सं० संयम विरुद्ध ।
कुसिआर–इक्षु, ऊख हि० ।
कुसुम–कुसुम्भ, वस्त्ररञ्जक पुष्पविशेष ।
कुसुमलता–लतापुष्पविशेष ।
कुसुमी–कुसुमसम्बन्धी (रङ्ग) ।
कुसोथरि–धरना देब, कुश बिछाए देवागारमे कामना विशेष सँ पड़ब।
कुसोन्ह–नीक जकाँ नहि सोन्हाओल ।
कुस्तमकुस्ता–परस्पर अधिक कुस्ती ।
कुस्ती–वि० मल्लयुद्ध ।
कुहकब–क्रि० कोकिलादिक बाजब ।
कुहक मचब–क्रि० कठिन समस्या उपस्थित होएब ।
कुहकी–पक्षिविशेष ।
कुहठ–सं० दुराग्रह ।
कुहब–क्रि० कष्ट देब, क्लेशयुक्त करब ।
कुहुकब–क्रि० कुहकब ।
कुहुक-मचब–क्रि० कोकिलादिक अधिक बाजब ।
कुहेस–कुज्झटिका, नीहार, धओन ।
कुहेसफाटब–क्रि० फट्+अब-नीहारक नाश होएब ।
कूआ–कुब्जक, पुष्पक प्रभेद ।
कूआँ–कूप ।
कूचब–क्रि० कुच+अब-दबाब ।
कूच लागब–क्रि० लग् + अब-घोड़ाक चलबाक काल पाएर में पाएर लागब ।
कूटब–क्रि० कुट + अब - कुट्टन, मुसलादिसँ आघात देब ।
कूटब-पीसब–क्रि० कुट+अब, पिस्+अब -कुट्टनादि क्रिया ।
कूड़–छोट ढेरी, राशि ।
कूँड़ा–पैघ घैल ।
कूड़ि–पटएबाक पात्रविशेष ।
कूड़ी–ढेरी ।
कूढ़–कुष्ठ, ओषधिविशेष ।
कूढ़ब–क्रि० कुढ़+अब-मनहि मन क्रोध करब ।
कूतब–क्रि० कुत+अब–अन्दाज सँ परिमाण करब ।
कूथब–क्रि० कुथ+अब-सक्लेश अपान वायुकेँ गुदमार्ग दिस प्रेरित करब।
कूदफान–कूदब प्रभृति क्रीड़ा ।
कूदब–क्रि० कुद्+अब–कूर्दन, फाँदना हि०।

कूप–सं० कूआँ ।
कूबड़–उ० कुब्ज । स्त्री कुबड़ी ।
कूर } –राशि, ढेर ।
कूरी
कूहब–क्रि० कुहू-अब-कष्ट देब, क्लेशयुक्त करब ।
कृपण–सं० मितम्पच ।
कृपा–सं० दया ।
कृष्णकेतसी–पुष्पविशेष ।
कृष्णजीर–सं० काला जीरा हि० ।
कृष्णहरिन–कृष्णमृग ।
कृष्णौत–गोआर जातिक एक प्रभेद ।
केँ–अ० उत्तर काल ।
केआरी–आलवाल ।
केआल–तौलनिहार ।
केआली–केआलक कार्य ओ वेतन ।
केउऑ–शाकयोग्य क्षुपविशेष ।
केओट–उ० शूद्र जातिविशेष । स्त्री० केओटनी ।
केँघुनिआएब–क्रि० केँ घनी + अब-टेढ़ भए बढ़ब ।
केँघुनी–हाथ ओ बाँहिक बिचला जोड़।
केचुआ–कञ्चुकी, सापक परित्यक्त त्वचा १। स्त्रीक पहिरबाक वस्त्रविशेष २ ।
केचुआएब–ना० केचुआ सँ युक्त होएब (सापक) ।
केतकी–पुष्पविशेष ।
केथरा–गदेला ।
केदन–अ० अपरिचित केओ ।
केवली केराओ–मट्टर ।
केबलौट–कुम्हारक हाथक पोछल माँटि।
केबाड़–कवाट ।
केबाड़ी–छोट कवाट ।
केरबा–पानिमे रहनिहार पक्षिविशेष १। केरा सन लाम (आम) २।
केरा–कदली ।
केराओ–कलाय, द्विदल अन्नविशेष ।
केलिकदम्ब–कदम्बफूलक प्रभेद ।
केस–केश, बाल हि० ।
केसरि–काश्मीर, मृगमद; सुगन्धि द्रव्यविशेष ।
केसौर–कसेरुक, कन्दविशेष ।
केहन–कीदृश ।
केहनदन–अधलाह ।
केहुनी–कफोणि, हाथ ओ बाँहिक सन्धिक उच्च भाग ।
कैएक } –अनेक ।
कैक
कैँच–कैँची जेकाँ बाँसमे बान्हल बाँस ।
कैँची–कर्तरी ।
कैँता–लताफलविशेष ।
कैथिनि–स्त्री० कायस्थक स्त्री ।
कैथी–रङ्गविशेष १ । नागरी अक्षर २ ।
कैल–कपिल, रङ्गविशेषयुत (बड़द प्रभृति) ।
को–कटहरक बीजाधार ।
कोइली–कोकिल १ । अजोह आम्रबीज २ । चाउरमे रोगवश कारी भाग ३ ।
कोकटी–रङ्गविशेष ।
कोकटी बाङ–कोकटी रङ्गक बाङ ।
कोकनब–क्रि० निःसार होएब ।
कोँकिआएब–क्रि० कोँकि+अब-कोँकोँ शब्द करब ।
कोख } –कुक्षि, पेट ।
कोखि

कोच–वि० पर्यङ्कविशेष ।
कोँचब–क्रि० बलपूर्वक मध्यमे ठूसब ।
कोचबन्द–डाँड़क भूषणविशेष ।
कोचबान–वि० बग्गी हँकनिहार ।
कोँचा–स्त्रीक पहिरल नूआमे बान्हल कोचिआओल भाग ।
कोचिला–कपीलु, उपविष फलविशेष ।
कोजागरा–सं० आश्विनक पूर्णिमा ।
कोटि–सं० करोड़ हि० ।
कोठबार–राब रखबाक स्थान ।
कोठली–कोष्ठ, कोठाक वा घरक एकदेश ।
कोठा–प्रासाद ।
कोठि–कोष्ठ, पेट ।
कोठिघरा–कोठी रखबाक घर ।
कोठिला–साज, भाँड़ रखबाक उच्च आधारविशेष ।
कोठिसारि–कोठी रखबाक घर ।
कोठी–कुसूल, मृत्तिकानिर्मित अन्न रखबाक पात्र ।
कोठुला } –छोट कोठी ।
कोठुली
कोड़ब–क्रि० खनन ।
कोड़रा–कशा ।
कोड़हा–सामक चाउर १ । यन्त्रादि भूषणमे ताग पैसएबाक हेतु सच्छिद्र अवयव २ । मधुमाछीक छाता ३ ।
कोँड़हिआएब–ना० कोँड़ही + अब-कोँड़हीसँ युक्त होएब ।
कोँड़ही–कली १। फूल-पातक अङ्कुर २ ।
कोड़ो–ठाठक उपयोगी कृतच्छिद्र बाँस ।
कोँढ़–अन्तःकरण ।
कोँढ़फट्टू–जकर कनिएँमे अन्तःकरण विदीर्णा हो ।
कोँढ़ फाटब–क्रि० फट् + अब-अन्तःकरण विदीर्ण होएब ।
कोँढि–कुष्ठी १ । आलसी २ ।
कोँढ़िआ–कोँढ़ि + आ = अनादरणीय कुष्ठी वा आलसी ।
कोढ़िला–कोमलतम तृणविशेष ।
कोढ़ी–कलिका ।
कोत–अम्लसम्बन्धेँ तत्काल सकत वस्तु खएबामे अक्षम (दाँत) ।
कोतबाल–रातिकेँ गामक रक्षा कएनिहार।
कोतबाली–कोतबालक क्रिया १ । कोतबालक हेतु देय २ ।
कोतर–कोली, खेतक अंश ।
कोतरा } –मत्स्यविशेष ।
कोतरी
कोतहगरदनि–छोट गरदनि बाला ।
कोताही–कृपणता ।
कोथ } –बरछी आदि अस्त्रक अग्रभाग ।
कोथी
कोदबा–देहमे भेनिहार रोगविशेष ।
कोदरिकट्टा–कोदारि सँ काटल-काटल सन (मेघ) ।
कोदारि–कुद्दाल, माटि कटबाक अस्त्र विशेष ।
कोदैआ–कोयष्टिक, पक्षिविशेष ।
कोदो–कोद्रव, कदन्नविशेष ।
कोन–कोण १ । कतर वा कतम २ ।
कोनटबेध–आँगनक दोषविशेष, एक घरक कोणाभ्यन्तर दोसर घरक कोण ।

कोनटा–घरक बहार कोन लगक भूमि।
कोनही–क्षेत्रक कोन ।
कोना–अ० कोन प्रकारेँ, किस भाँति हि० ।
कोनाकोनी–कोण सँ कोण दिश समुख १ । कोमहर सँ कोमहर २ ।
कोनिआँ–घरक दुहू पार्श्वक ठाठ १ । घरक दुहू पार्श्वक ओसारा २ ।
कोनी–नेत्रकोण ।
कोनेकानी–कोणसहित सकल स्थान ।
कोनैला–गाछी आदिक कोन में स्थित (वृक्षादि) ।
कोपड़ (र)–बाँसक अंकुर ।
कोपड़ा–पात्रविशेष ।
कोप हारि–बिना गोटी बहार भेने पचीसीक हारि ।
कोबर–वर-कन्याक सम्मेलन ।
कोबरा घर–कौतुकागार, वर-कन्याक सम्मेलनागार ।
कोबी–रान्हि कए खएबाक एक फूल।
कोमल–सं० मृदु ।
कोमहर / **कोम्हर** }–अ० कोन दिस ।
कोर–क्रोढ़ १। धोती आदिक स्थूलतन्तुकृत दुहूं कातक प्रान्त २ ।
कोरदार–वि० कोर वाला ।
कोरबाह–स० नेनाकेँ कोरमे लेनिहार। स्त्री० कोरबाहिली ।
कोरबाहि–नेनाकेँ कोरमे लेब ।
कोरा–विनु धोयल (नवीन-वस्त्र) १ । काजमे नहि लागल तहदर्ज (वस्तु) २ । सतुष अन्न ३ ।
कोराएब–क्रि० कोर+अब-पानि किनार होएब ।
कोराँटी–चर्म मध्यस्थ शङ्कु ।
कोरान–मुसलमानक धर्म-शास्त्र ।
कोरि–उ० शूद्र जातिविशेष । स्त्री० कोरिनि ।
कोरिआनी–कोरिक टोल ।
कोरैआ–कुटज ।
कोरैला–उ० कोरमें लेबा योग्य नेना, स्त्री० कोरैली ।
कोला–खेतसमूहक एक खण्ड ।
कोलाकोली–खेतक प्रत्येक खंड ।
कोलिऐती–नगदी बिना सबूतक खाप ।
कोलिसद्द–रोगाह आम ।
कोली–छोट कोला ।
कोल्हु–सरिसओ कुसिआर प्रभृति पेरबाक कल ।
कोल्हुआ–कोल्हुमे बहनिहार (बड़द)।
कोल्हुआपेरन–सतरञ्जक मातुविशेष ।
कोल्हुआड़ (र)–कोल्हु पेरबाक स्थान।
कोस–क्रोश, भूमिमानविशेष ।
कोसब–क्रि० गञ्जन करब ।
कोसल करब–गुप्त धनसंग्रह ।
कोसलिआ–गुप्त धन १ । गुप्तधन संग्रही २ ।
कोसा–केराक फूल ।
कोसिआ–माटिक पात्रविशेष ।
कोसिका झल्ला–शाकविशेष ।
कोहबर–कोबर ।
कोहा–छोट तौला, मृद्भाण्डविशेष ।
कोही–छोट कोहा ।
कौअलि–पक्षिविशेष ।

कौआ–काक ।
कौआठारि–कोनो-कोनो ठारिमे फड़ल (आम) ।
कौआ ठुठ्ठी–क्रीड़ाविशेष ।
कौचालि–कौआक सदृश वक्र चालि ।
कौजङ्घ–उ० छोट-पैघ पाएर वाला, स्त्री० कौजङ्घि ।
कौटङ्ग–उ० छोट पैघ पाएर वाला । स्त्री कौटङ्गि ।
कौड़िआ–पीलुविशेष ।
कौड़िआकातर–उ० जे एक कौड़ीक हेतु कातर हो, अति कृपण ।
कौड़ी–कपर्दक ।
कौड़ीटीप–कौड़ीक एक खेल ।
कौषी–कौपीन ।
कौपीन–सं० भगबा ।
कौशल–सं० नैपुण्य ।
क्योला–केओला, केतकी, पुष्पविशेष।
क्रम–सं० प्रथमत्व-द्वितीयत्वादि ।
क्रमशः–सं० अ० क्रमपूर्वक, यथाक्रम।
क्रिया–व्यापार ।
क्रोध–सं० कोप ।
क्लेश–सं०-कष्ट ।
क्वताही–कृपणता ।

ख

खड़–छोट आड़ा देल खेत ।
खएरा–रङ्गविशेष १ । बकक प्रभेद २ ।
खँओत–अन्तर्दाह ।
खखड़हर–बरतनविशेष ।
खखड़ी–बुस, चाउरसँ रहित धान ।
खखाएब–क्रि० खख्+अब-धान्यक तुच्छ फड़ीसँ युक्त होयब ।
खखार–खाट्कार, कण्ठागत कफादिक निःसारण ।
खखारब–क्रि० कण्ठागत कफादिकें निःसारित करब ।
खखाह–खखड़ीसँ युक्त (धान) ।
खगता–खगब, कार्यक अनुपपत्ति ।
खगब–क्रि० कार्यक अनुपपति ।
खगरा–ओ तारक गाछ जे ने फुलाए ने फड़ए ।
खग्गी–खगता, कार्यक अनुपपत्ति ।
खँघरब–क्रि० प्रवाहसँ कटब ।
खँघारब–क्रि० प्रवाहसँ काटब ।
खच्खच् काटब–क्रि० कट् + अब-अतितीक्ष्णतया छेदन ।
खच्चर–गदहीमे घोड़ासँ जनमल जातिविशेष ।
खजबा–कड़ा कोबाला (कटहर) ।
खजाञ्ची–वि० खजाना रखबामे नियुक्त।
खजाना–वि० सुवर्ण रजत रत्नादि ।
खजुड़ी–वाद्यविशेष ।
खजुरिआएब–क्रि० खजुरि+अब-संकुचित पत्रादिक होयब ।
खजुली–छोट खाजा ।
खजूर–खर्जूर, फलविशेष ।
खञ्जखोहर–अगण्य जनसमूह (निन्दामे)।
खञ्जन–सं० पक्षिविशेष ।
खञ्झा–मालक रोगविशेष ।
खटकब–क्रि० अनिष्टचिन्ताविषयीभवन।
खटकर्मी–शास्त्रोक्तक्रियानिरत ।
खटका–सन्देह १ । अशौच २ ।
खटकार–वैनट्य ।
खटकाह–उ० सन्देही । स्त्री खटकाहि ।

खटखट करब–क्रि० खटखट शब्द करब १ । अमङ्गल बाजब २ ।
खटखटाह–उ० कनिओँ टोकने क्रोध कएनिहार । स्त्री० खटखटाहि ।
खटछप्पर–खाटक उपरका छप्पर ।
खटनटाह–उ० नियम-निष्ठा कएनिहार ।
खटपट–वैमनस्य ।
खटपटाएब–क्रि० खटपट् + अब-अमेल, विरोध होएब ।
खटपारब–क्रि० शोकेँ पड़ब ।
खटबताह–उ० ईषत् विक्षिप्त ।
खटबानर–वानर-सदृश खटखटाह ।
खटबारब–क्रि० शोकेँ पड़ब ।
खटमिट्ठी–हि० चटनीक प्रभेद ।
खटरस–छबो रससँ युक्त भोज्य ।
खटरास–वैनट्य ।
खटाक दए–अ० झट दए, अति शीघ्र।
खटाखटि–अ० झटझट ।
खटाँस–रात्रिचर जन्तुविशेष ।
खटिआएब–क्रि० खटि+अब-न्यून होयब।
खटुली–स्कन्धबाह्य एक सबारी ।
खट्कर्मी– कर्मठ, ब्राह्मणविहित दानादि छबो कर्म कएनिहार ।
खट्टी–फलव्यापारी जातिविशेष ।
खँड़–खण्ड ।
खड़कब–क्रि० अचेतन वस्तुक किञ्चित् आगाँ वा पाछाँ चल जाएब ।
खड़खड़ाएब–क्रि० खड़खड़ + अब-खड़खड़ शब्द करब ।
खड़खड़िआ–मनुष्यवाह्य यानविशेष ।
खड़गर–उच्च ।
खड़ना–स्त्रीकर्तृक एकभुक्त ।

खड़बड़–वैमनस्य ।
खड़बड़ाएब–क्रि० खाड़बड़+अब-वैमनस्य होएब ।
खड़बड़ी–वैमनस्य, झगड़ा ।
खँड़मण्डल–खण्डमण्डल, कतहु उपजा कतहु नहि ।
खड़रब–क्रि० तृणक अपाकरणार्थ खड़रासँ बढ़ारब ।
खड़रा–व्रणविशेष १ । करची आदिसँ रचित खड़रबाक साधन २ ।
खँड़हर–प्रवाहेँ माटि कटलासँ नीच भूमि ।
खँड़हरब–क्रि० प्रवाहेँ माटि कटब ।
खँड़हरा–खँड़हर ।
खड़ही–लम्बा आँगुरसन मोट टाटमे उपकारक तृणविशेष ।
खड़ा–हि० उत्थित, ठाढ़ ।
खड़ाइ–उच्चता ।
खड़ाओँ / **खड़ाम** – पादुका ।
खड़िका–पान लगाएब इत्यादि कार्यमे उपकारक मेही बाँसक कामि ।
खड़ी–खटी, कठिनी, भूमिलेखादि-साधन ।
खड़ुकी–भगबासँ पैघ नूआ ।
खढ़–तृण ।
खढ़कट्टा–गृहाच्छादक तृण कटनिहार।
खढ़गर–अधिक खढ़सँ युक्त ।
खढ़होरि–खढ़ उपजबाक स्थान ।
खढ़ी–खड़ही ।
खणाओ / **खणाम** –पादुका ।

खणोत / **खणओत** –कागतक खण्ड ।
खण्ड–सं० अर्द्धभाग ।
खण्डमण्डल–चित्रवृष्टि ।
खण्डहर–प्रवाहेँ माटि कटलासँ नीच भूमि।
खण्डन–सं० निराकरण ।
खण्डित–सं० खण्ड कएल ।
खत–वि० लिखा १। काटबसँ चिह्न २।
खतब–क्रि० काष्ठादिकेँ छेदनसँ चिह्नयुक्त करब ।
खतबय–शिविकावाहक जातिविशेष ।
खतम–वि० समाप्ति, अवसान ।
खतरा–वि० जान जएबाक शङ्का १ । अङ्कक छेदनभेदन २ ।
खतरी–जातिवशेष ।
खत्ता–खात, गर्त्त ।
खत्री–जातिविशेष ।
खदकब–क्रि० अग्नितापसँ खलबल करब।
खदका / **खदकी** –पीसिकेँ बरकाओल, खदकाओल ।
खदुका–रीन लेनिहार, अधमर्ण ।
खद्दर–चरखाक सूतसँ बीनल वस्त्र ।
खद्धी–अत्यन्त अधलाह (वस्त्र)
खन–क्षण ।
खनखन करब–क्रि० अतिबुभुक्षायुक्त होएब १ । लेशतः ज्वरादिपीड़ित होएब ।
खनखनाएब–क्रि० खनखन + अब -खनखन करब ।
खनिज–सं० खानिमे होएनिहार ।

खन्ता–खत्ता, पल्वल ।
खन्ती–खनित्र ।
खन्धक–गर्त्त ।
खपकी–नाराजगिरीसँ भृत्यक सावधि कार्यवहिष्कार ।
खपखप-काटब–क्रि० कट्+अब-निर्बाध छेदन ।
खपटा–खर्पट, फुटल भाँड़क खण्ड ।
खपड़िआ–बाबाजीक प्रभेद ।
खपब–क्रि० एक भागसँ कम होयब ।
खपरा–माटिक बनल पकाओल धार छारबाक साधन ।
खप्पर–कपाल, माथक उपरका गोल हाड़ ।
खप्पा / **खप्पी** –कीआ प्रभृति पात्रक उपरका भाग ।
खबरि–वि० वार्ता १ । सूचना २ ।
खबरिगिरी–वि० सावधानता ।
खबास–उ० टहल कएनिहार शूद्र । स्त्री खबासिनी ।
खबासी–खबासक क्रिया ।
खम्हारु–खाद्य कन्दविशेष ।
खम्हेली–बिना गाड़ल खाम्ह ।
खयरा–रङ्गविशेष १ । बकक प्रभेद २ ।
खर–तीव्र ।
खरकटब–क्रि० जोरसँ सटब ।
खरखर–अश्लक्ष्ण ।
खरखराएब–क्रि० खरखर+अब–आघातसँ तृणादिक खरखर शब्द होएब १ । खरखरब + अब-खरखर शब्द कराएब २ ।
खरखराएन–सतरञ्जमे तराउपरी दू प्यादाक सहसँ मातु ।

खरखराह–किंचित् खरखर १ । नहि पचनिहार (साग आदि) २ ।
खरखोँच–खोंचाह ।
खरखोँचब–क्रि० बाँसक अगाड़ीसँ खोँचारब ।
खरखोँच-लागब–क्रि०लग+अब–अनेक खोँच लग्न होएव ।
खरच–खर्च, व्यय ।
खरना–स्त्रीकर्तृक एकभुक्त ।
खरभुज, **खरभुजा**–लताक फल विशेष खर्बूज।
खरभुसिआ–साधारण ।
खरमास–तीव्र मास, बैसाखज्येष्ठ ।
खरलुच्ची–अत्यन्त उकठ कयनिहार ।
खराइन–दुर्गन्धविशेष ।
खराज–शाण ।
खराजब–क्रि० शाणसँ छीलब ।
खराप–वि० अधलाह ।
खरि–गोट रैँचीक सिट्ठी ।
खरिआ नोन–लवणविशेष ।
खरिहान–अन्न तैआर करबाक स्थान, सं० खल ।
खरिहारी–खरिहान बनएबाक हेतु आदेय अन्न ।
खरुआन, **खरुहान**–अगण्य नेनाक समूह (निन्दामे) ।
खरेहा–शशक ।
खरोसा–अन्वेषण ।
खर्च–व्यय ।
खर्चदारी–अधिक खर्च ।
खर्चोटा–नित्य खर्च लिखबाक (बही)।
खल–खल्व, पाथरक गहीड़, पिसबाक पात्र ।
खलखल हँसब–क्रि० स्पष्ट हँसब ।
खलखलाएब–क्रि० खलखल्–अब–सशब्द हँसब ।
खलपट, **खलपट्ट**–खल्वाट ।
खलब–क्रि० श्वासक तेजीसँ नेनाक पेट दबब १। औषधकें खलमे पीसब २।
खलबल-करब–क्रि० तापसँ जलादिक खलबल शब्द करब ।
खलबलाएब–क्रि० खलबल–अब–तापजन्य जलादिक सशब्द सञ्चर ।
खलबली मचब–क्रि० चिन्ता सँ अधिक अशान्ति होयब ।
खलरी–देहक अशुष्क चाम ।
खल्ला–नेनाक पेट खलब रोग ।
खस–उशीर, कतराक सीर ।
खसता–परता (खेत) ।
खसब–क्रि० पतन, स्खलन ।
खसल–परता (खेत) १ । निपतित २ ।
खस्ता–खसल, बिनु आबाद कएल (खेत)।
खाउक–खाधुर, अधिक खएनहार ।
खाएब–क्रि० ख+अब–खादन भक्षण ।
खाएर–खदिरसार १ । खदिरवृक्ष २ ।
खाँओ–मुसलमान ओ कतोक ब्रह्माणक उपाधि ।
खाक–वि० भस्म ।
खाँखड़, **खाँखर**–पोखरि वा धारक निचला जलक उपरका चारू दिसक भाग ।
खीच–खिचार १ । काठमे काठ पैसबाक छिद्र २ ।

खाजा–मिष्टान्नविशेष ।
खाँझमाझ–तारतम्य ।
खाट–खट्वा ।
खाँड़–छोट खड्ग १ । मिसरीक पैघ खण्ड २ ।
खाढ़ी–परम्परा, श्रेणी ।
खातिर–वि० कृपा ।
खाधि–गर्त ।
खाधुर–अधिक खएनिहार ।
खानगी–वि० रहस्य ।
खानि–खनि, आकर, हीरा प्रभृतिक स्थान ।
खाप–जकर पोत लागए से (खेत) ।
खापट–खर्पर, फूटल माटिक बासनक खण्ड ।
खापडि, **खापरि**–भुजबाक, अर्द्धभग्न माटिक बासन ।
खाम–लिफाफ ।
खामखाह–अ० वि० अवश्यमेव ।
खामिन्द–वि० प्रभु ।
खामिन्दी–वि० प्रभुक कृपा ।
खाम्ह–स्तम्भ, बरीक आधार ।
खाम्ही–पाढ़िक आधार स्तम्भ ।
खायब–क्रि० ख+अब–खादन, भक्षण ।
खायर–खदिरसार १ । खदिरवृक्ष २ ।
खार–क्षार ।
खारु–रोपल धानक बीआ ।
खाल–खली ।
खाली–केवल १ । रिक्त २ ।
खास–वि० स्वमात्रसम्बन्धी ।
खासा–अत्यन्त मेही (मलमल)
खाँहिस–वि० इच्छा ।
खिआएब–क्रि० खि+अब–घर्षणसँ क्षीण होएब ।
खिखिर–खिङ्खर, जन्तुविशेष ।
खिचाड़, **खिचार**–पादाघातसँ उत्पन्न थाल ।
खिचारब–क्रि० थाल उकटब ।
खिच्चड़ि–कृसर, चाउर ओ दालि सहपक्व।
खिजमती–वि० कार्यमे आनल (वस्त्रादि) ।
खिड़की–वातायन, छोट कपाट ।
खिड़हरि–चटाइ ।
खिनखिनायब–क्रि० खिनखिन+अब–खिन्न होएब । किछु किछु दुःखसँ युक्त रहब ।
खिनहरि, **खिन्हरि**–चटाइ ।
खिन्हारा–पैघ चटाइ ।
खिरकिट्टी–अत्यन्त कृश ।
खिरसा–फाटल दूधक सारभाग ।
खिरोधनी–कुम्हारक बासन विशेष ।
खिलखिलाएब–क्रि० खिलखिल+अब–प्रच्छन्न भए हँसब ।
खिलतोड़–नव तोड़ल (जमीन) ।
खिलबट्टी–खिल्ली रखबाक पनबट्टी।
खिलाल–गजीफा खेलक हारि ।
खिल्लति–वि० पदवी ।
खिल्ली–खएबाक योग्य लगाओल पान १ । बड़दक पहिल दाँत २ । अङ्कक जोड़ ३ ।
खिल्ली तोड़ब–क्रि० बड़दक पहिल दाँत तोड़ब ।
खिसिआएब–क्रि० खिसि+अब–क्रोध करब ।

खिसिआह–उ० कोपन, क्रोधशील । स्त्री० खिसिआहि ।

खिस्सा–कथा, इतिहास, छोट चरित्र ।

खीँचब–क्रि० खिँच+अब-कर्षण ।

खीर–क्षीरोदन, दूधमे सिद्ध तण्डुल ।

खीरमोहन–मिष्टान्नविशेष ।

खीरा–सोहाँस, त्रपुस ।

खीरी–फलविशेष ।

खील–कील ।

खीलनि–व्रणक कील ।

खीसा–कथा, इतिहास, छोट चरित्र ।

खुखना–अतिस्थूल (व्यक्ति) ।

खुटका–अशौच १ । सन्देह २ ।

खुटकी–सन्देह ।

खुटब–क्रि० खुट+अब-घरक भूमि खुट्टा गाड़ि सोझ करब ।

खुटरी–देबालमे लागल वस्तु लटकएबाक खुट्टी, नागदन्तिका ।

खुटिआ–एक प्रकारक अङ्गा ।

खुट्टा–टाट फड़क गाए आदि बन्हबाक स्तम्भ ।

खुट्टी–छोट खुट्टा १। भूषणविशेष २।

खुड़लुच्ची–एमहर-ओमहर लुचलुच कएनिहार ।

खुड़र
खुड़रबट्टी } –एक गोटाक चलबाक योग्य बाट ।

खुदरा–रुपैआसँ कम अठन्नी आदि १। पचेसी खेड़िमे दूओ सँ छ धरि चित्त कौड़ी २ ।

खुदरिआ–कम द्रव्यसँ दोकान कएनिहार ।

खुदिआह–खुद्दीसँ मिश्रित ।

खुद्दी–तण्डुलकण ।

खुभरी–जारनक छोट-छोट टुकड़ी ।

खुरखराएब–क्रि० खुरखुर+अब-खुरखुर शब्द करब ।

खुरचन–शुक्तिक खप्पा, सितुआ ।

खुरचब–क्रि० छोलब ।

खुरछारी काटब
खुरछाही काटब } –क्रि० कट+अब–ओढ़ना-बिछाओनकेँ नोचब आदि ।

खुरदक–वाद्यविशेष ।

खुरदकिआ–खुरदक बजओनिहार ।

खुरपा–पैघ खुरपी ।

खुरपी–घास छिलबाक छोट अस्त्रविशेष ।

खुरमा–मिष्टान्नविशेष ।

खुरलुच्ची–एमहर ओमहर कए उपद्रव कएनिहार ।

खुरेठब–क्रि० खूरसँ धाँगब ।

खुलता–अनावृत ।

खुलब–क्रि० खुल-अब–प्रकाश करब १ । शोभा देब २ ।

खुलासा–वि० स्पष्ट ।

खुष्टमख्याल–अत्याग्रह ।

खुसकी–स्वतन्त्र सबारी ।

खुसखुस टुटब–क्रि० बिना बलेँ टुटब ।

खुसनामा–वि० खुसीक बात ।

खुसामद–वि० अनुव्रजन ।

खुसी–वि० आनन्द, प्रसन्नता ।

खूट
खूँट } –वस्त्रादिक कोण ।

खूटब–क्रि० खुट्+अब-घरक भूमि खुट्टा गाड़ि ठीक करब ।

खूब–वि० अत्यन्त ।

खूभी–दण्डक तीक्ष्ण अग्रभाग ।

खूर–खुर १ । क्षुर २ ।

खूलब–क्रि० खुल्+अब–प्रकाश करब १ । शोभा देब २ ।

खूलि–गजीफा खेलिमे सभ हुकुम खसब।

खेआल–हास्यास्पद चेष्टा ।

खेआली–हास्यास्पद चेष्टाकारी ।

खेँख–अधिक हँसनिहार (निन्दामे) ।

खेँखिआएब–क्रि०खेंखि+अब- अधिक हँसब (निन्दामे) ।

खेँखी–अधिक हास्य ।

खेड़ही–मूँग, द्विदल अन्नविशेष, मुद्ग सं०।

खेड़ा–क्रीड़ाविज्ञ ।

खेड़ि–क्रीड़ा ।

खेड़िआ–खेल कएनिहार ।

खेत–क्षेत्र, धान्यादि उपजावक भूमि ।

खेतउतार–रोपनिक समाप्ति ।

खेतकोना–आबाद नहि भेल खेतक एक कोन ।

खेतमास–उरीद, घठिहन द्विदल अन्नविशेष ।

खेतिआहा
खेतिहर
खेतिहार } – खेत कएनिहार गृहस्थ ।

खेती–कृषि, खेतक क्रिया ।

खेप–आवृत्ति १ । खेपब २ ।

खेपब–क्रि० काल काटब ।

खेपी–आवृत्ति ।

खेबब–क्रि० नाओ चलएबाक हेतु पानि टारब, नाओ चलाएब ।

खेबा–आतर, तरणपण्य ।

खेल–क्रीड़ा !

खेलओना–बालक्रीड़ाक वस्तु ।

खेलओनिआ–हास्यप्रिय, चेतन कैं खेलओनिहार, पैघ लोकक हास्यविनोद मे नियुक्त धूर्त ।

खेलधूप–क्रीड़ा आदि ।

खेलबाड़
खेलबाड़ी } –खेलएनिहार, क्रीड़ानिपुण ।

खेलाएब–क्रि० खेल् + अब–क्रीड़ा करब।

खेलाएब-धुपाएब–क्रीड़ादि करब, खेलिधूप ।

खेलाड़ी–खेड़ि में पटु ।

खेलि–क्रीड़ा ।

खेलौड़ि–बालकक क्रीड़ा ।

खेलौड़िआ–क्रीड़ासक्त ।

खेलौना–बालक्रीड़ाक सामान्य ।

खेसरा–माछक प्रभेद १। खेतक नम्बर २ ।

खेसारी–खञ्झारि, द्विदल अन्नविशेष !

खेहब–क्रि० खेह+अब–तागक घोंटब ।

खेहार–पएबाक हेतु पाछाँ सँ दौड़ब ।

खेहारब–क्रि० पकड़बाक हेतु पाछाँसँ ने गाड़ब ।

खै–छोट आड़ा देल क्षेत्र ।

खैँक–सूक्ष्म शल्य ।

खैँचब–क्रि० आकर्षण ।

खैँठी–शुष्क जमल विकार ।

खोँइचा–फलक त्वक् ।

खोइँछ–स्त्रीक बान्हल आँचर जाहिमे अन्नादि लए जाए ।

खोखड़न–अस्त्राग्रघर्षण सँ वियोजित डाढ़ी आदि ।

खोखड़ब–क्रि० अस्त्राग्रघर्षण सँ वियुक्त करब ।

खोखड़ना
खोखड़नी } –खोखड़बाक साधन ।
खोँखी–काश, उकासी, खाँसी हि० ।
खोँखीमरखा–ओषधिविशेष ।
खोँची
खोङची } –वस्तु रखबाक बाँसक पात्र ।
खोँच–त्वचाछेदनयोग्य तीक्ष्णाग्र अवयव।
खोँचड़ि–मध्यमे वस्तु रखबाक हेतु दूनू दिसिसँ बान्हल तृणसमूह ।
खोँचारब–क्रि० दण्डाग्रसँ आघात करब।
खोँचाह–खोँचसँ युक्त ।
खोड़–खञ्ज, नाँगड़ ।
खोड़
खोँड़ } –असम्पूर्ण, खण्डित ।
खोड़बन्ह–टुटल बान्हक खाधि ।
खोड़संग–उचित चलवामे असमर्थ लोकक सङ्ग ।
खोड़हा–पचेसी आदि खेड़िक हेतु वस्त्रादि रचित घर ।
खोड़ेआ–अस्त्रविशेष, काती ।
खोढ़ा–खोड़हा, पचेसी आदिक घर ।
खोता
खोँता } –नीड़, पक्षीक गृह ।
खोदहा–सूचीद्वारा काजरक प्रवेश कराए देहमे बनाओल चित्र ।
खोधब–क्रि० किञ्चित् खनन।
खोधा–खोदहा ।
खोधामा–खोधिकेँ बनाओल नकसा ।
खोन–जकर ठोर कटल हो ।
खोनही–आवृत स्थान, घरक कोन लगक स्थान ।
खोना–अनादरणीय खोन ।

खोनाठ
खोनाठी } –प्रज्वलित चेरा आदि ।
खोनू–आदरणीय खोन ।
खोप–परबा रहबाक मनुष्यनिर्मित खोता।
खोपड़–माथक उपरका भाग ।
खोपड़ि–धान्यादि ओ परबाक अति छोट घर ।
खोपबन्ह–खोपा बन्हबाक डोरि ।
खोपा–धम्मिल, केशपाश ।
खोपी–छोट खोपा ।
खोभ–मोट लकड़ीक तीक्ष्ण भाग ।
खोभब–क्रि० खेतक विपन्न देशमे रोपब।
खोभाड़–सूगरक घर ।
खोभी–माटि कोड़बामे उपयुक्त वंशादि-निर्मित सूक्ष्माग्र यष्टि ।
खोम–मनमे अमंगलक आशंका ।
खोमाह–उ० खोम माननिहार ।
खोरनाठी–दग्धाग्र जारन ।
खोल–गेड़ुआ आदिक उपरका वस्त्र ।
खोलब–क्रि० मोचन ।
खोलसा–बड़द आदिक दृष्टि प्रतिबन्धक झपना ।
खोली–कन्तोड़ प्रभृतिक छोट कोष्ठ १ । चसमा आदि रखबाक पात्र २ ।
खोँसब–क्रि० अन्तःप्रवेशनपूर्वक अवलम्बित करब ।
खोह–गुहा १ । दाउनिक हेतु छीटल धान्यादि २ ।
खोहब–क्रि० कोड़ब, भीतर शुद्ध करब ।
खौआ–खाधुर, अधिक खएनिहार ।
ख्याल–वि० स्मरण १ । नाना चेष्टा २ ।
ख्याली–नाना चेष्टा कएनिहार ।

ग

गए–अ० अनादरणीय स्त्रीक सम्बोधन ।
गएब–वि० अदृश्य ।
गएब बाजी–परोक्षस्थितिपूर्वक खेड़ि सतरञ्जक ।
गएर–मेघक घटा ।
गएरह–वि० प्रभृति ।
गओँ–उपकार, इष्टसिद्धि ।
गंगा–सं० जाह्नवी, नदीविशेष ।
गंगाजल–गङ्गानदीक जल ।
गंगाजली–गंगाजल रखबाक पात्र ।
गंगौट–गङ्गाक मृत्तिका ।
गच–रोड़ा-सुरखोसँ दृढ़ कएल मकानक सहन ।
गच्छ–सजातीयक झुण्ड ।
गछगर–गच्छ+गर-अधिक समांगबाला १। गाछ + गर-अधिक गाछसँ युक्त 2 ।
गछपक्कू–गाछमे पाकल फल ।
गछब–क्रि० स्वीकार करब ।
गछार–दूक एकत्र बन्धन ।
गछारब–क्रि० दू बोझ आदिक एकत्र कए बान्हब ।
गछिअन–अधिक गाछी ।
गछौन्ही–गाछक अधिक छाह ।
गज–दू हाथक प्रमाण वस्त्रादिक नपना १ । तत्परिमित (वस्त्रादि) २ ।
गजगज करब–क्रि० पानिसँ अधिक भिजने स्थलक अति कोमलीभाव।
गजपटाएब–क्रि० गजपट+अब-विजातीयसँ मिश्रित होयब ।
गजपटी–विजातीय सँ साङ्कार्य्य ।

गजपीपरि–गजपिप्पली, औषधि विशेष (महाबृक्ष) ।
गजब–क्रि० मनमे आनन्द होयब ।
गँजबाह–गाँजसँ माछ मारनिहार ।
गँजबाहि–गाँजसँ माछ मारनाइ ।
गजमुक्ता–सं० हाथीक मस्तकमणि ।
गजरथ–सं० हाथी-लागल रथ ।
गजरा–मोट माला १ । कन्दविशेष २ ।
गजिआ–तोड़ा, खजाना रखबाक झोरा ।
गजीफा–क्रीड़ाविशेष ।
गजुरा–अङ्कुरक पात ।
गंजन–सं० भर्त्सन ।
गंजित–सं० भर्त्सित ।
गटगट गीड़ब–क्रि० गीड़+अब-बिना चिबओनहिं खाएब (निन्दामे) ।
गट्टा–पहुँचा मणिबन्धक जोड़ ।
गड़कब–क्रि० घुमैत चलब ।
गड़खइ–परिखा, घरक वेष्टन-गर्त्त ।
गड़गड़ाएब–क्रि० गड़गड़+अब-गड़गड़ शब्द करब ।
गँड़गोआरि–इन्द्रवधूटी, सहस्त्रपाद पीलु ।
गड़ब–क्रि० निखात होयब, कण्टकादिक प्रवेश ।
गड़बड़–सन्दिग्ध १। अयथावत् प्रवृत्त २ ।
गड़बड़ाएब–क्रि० गढ़बड़+अब-सम्पन्न नहि होयब १। अयथावद् होयब २।
गड़बड़ी–सन्देह १। यथावत् असम्पत्ति २ ।
गड़र–वृक्षविशेष १ । पटिया आदि बनएवाक प्रथम क्रिया २ ।
गड़रब–क्रि० देह-हाथक टटैनी १ । गाछसँ सड़िकेँ खसब २ ।
गड़हा–गहींड़ गर्त ।

गड़ही–आवृत राजाऽऽवास-भूमि ।
गड़ार–गाछक पीलु ।
गँड़ास–अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र ।
गड़िआएब–क्रि० गड़ि+अब आँखिक दुखाएब ।
गँड़िआह–पुरुष्क सङ्ग मैथुनप्रवृत्त पुरुष।
गड़िऐनी–गड़िआयब, अक्षिवेदना ।
गँड़िखुल्ला–निर्वस्त्र बेहाया ।
गँड़िथोभ–थोड़ पसरल जल ।
गँड़िमोथी–मोथी तुल्य तृणविशेष ।
गड़ुआ–उपधान ।
गरु–कठिन ।
गड़ेगड़े–क्रीड़ाविशेष ।
गढ़–किला, दुर्ग ।
गढ़ब–क्रि० भूषणादिक निर्गाण ।
गढ़ा–गहींड़ खाधि ।
गढ़ाइ–गढ़ब १ । गढ़बाक वेतन २ ।
गढ़ी–दुर्ग, राजाक देबालसँ घैरल आवास।
गढुआरि–स्त्री गुर्विणी ।
गणगोआरि–इन्द्रबधू, गँड़गोआरि ।
गणास–अर्द्धचन्द्राकार अस्त्र ।
गणिआह–पुरुषक सङ्ग मैथुन कएनिहार।
गणिखुल्ला–निर्वस्त्र नग्न (निन्दामे) ।
गणिथोभ–थोड़ पसरल जल ।
गणिमोथी–मोथी तुल्य तृणविशेष ।
गण्डा–चारि संख्याक १ । जीवशून्य (अण्डा) २ । बद्धी विशेष ३ ।
गतात–गतागत, गमनागमन ।
गतानब–क्रि० घोर सक्कत कए खाट आदिकेँ सक्कत करब ।
गतायात–गमनागमन ।
गत्तर–गात्र, अङ्ग ।
गत्ता–पुस्तकक रक्षा हेतु मोट आवरण ।
गदह–कलह ।
गदहपुराने–पुनर्नवशाकविशेष ।
गदह मचब–क्रि० घोलपूर्वक बहुत झगड़ा करब ।
गदहा–गर्दभ ।
गदहिआ–जातिविशेष ।
गदही–स्त्री० गदहाक स्त्री ।
गदा–सं० अस्त्रविशेष ।
गदिआएब–क्रि० गदिअब् + अब– बातीकेँ गादिसँ रहित करब ।
गदिगर–अधिक गादिबाला (बाँस आदि)।
गदेला–छोट गद्दी, कन्था ।
गदौस–त्याज्य तृणादि, कस्तर ।
गद्गद–सं० आनन्दादिसँ अस्पष्ट कण्ठ।
गद्दर–आसिन मे भेनिहार धान, तादृश अन्नविशेष, आँसु ।
गद्दह–कलह उच्चैः शब्दपूर्वक झगड़ा ।
गद्दह मचब–क्रि० बहुकर्तृक उच्चैः शब्दसँ कलह होयब ।
गद्दी–सतूल आस्तरण ।
गनगनाएब–क्रि० गनगन+अब–गनगन शब्द करब १। उद्धुष्ट होयब २ ।
गनगनी–गनगनाएब, गनगन शब्द ।
गनगोआरि–इन्द्रवधूटी, सहस्रपाद पीलु ।
गनब–क्रि० गणना ।
गनिआरि–गणिकारिका, वृक्षविशेष ।
गन्ती–गणना ।
गन्धक–सं० धातुविशेष ।
गन्धकी–गन्हकी । हि० कुकरोधा ।
गन्धपलासी–ओषधिविशेष ।
गन्धपसारनि–गन्धप्रसारिणी, ओषधिविशेष ।

गन्हकी–गन्धकी, हि. कुकरौँधा ।
गन्हकौआ–दुर्गन्धोपेत ।
गप, **गप्प** –वार्तालाप ।
गप्पसप्प–बातचीत ।
गप्पी–मिथ्या गप्प कएनिहार १ । अधिक गप्प कएनिहार २ ।
गप्फा–अङ्गुरीमूलक मध्यदेश ।
गफलति–वि० भूलचूक ।
गब–रोपबाक हेतु आँटी सँ फुटाओल धान्यादिक बीआ ।
गब लेब–क्रि० ल+अब–प्रथमतः धान्य रोपण ।
गबसूआ–पीलुविशेष ।
गबहा संक्रान्ति–गर्भहा संक्रान्ति, कार्तिक मासक (संक्रमण) ।
गबाह–वि० साक्षी ।
गबाही–साक्षिता ।
गबैया–गायक ।
गब्बर–मना कयलहु पर चुप्पे रहि ओहि काजकेँ नहि छोड़निहार ।
गभ–धान्यादिक गर्भ ।
गभछभ–क्रि० मालक गर्भधारण करब ।
गभहा संक्रान्ति–कार्तिकक संक्रान्ति ।
गभिनाएब–ना० गाभिन+अब–गाभिन होएब ।
गमइ–छोट गाम ।
गमक–सौगन्ध्य ।
गमकब–क्रि० अपन सुगन्धि पसारब ।
गमकी–सुगन्धि ।
गम खाएब–वि० क्रि० ख+अब–तत्काल निवृत्त होएब ।
गमगम–किञ्चित् उष्णता पाएब १ । गमकब २ ।
गमगमाएब–क्रि० गनगम्+अब–किञ्चित् उष्णता पाएब १ गमकब २ ।
गमब–क्रि० परीक्षा करब ।
गमरपन, **गमरपना**, **गमरपनी** –ग्राम्यता, अनभिज्ञता ।
गमाएब–क्रि० गमब्+अब–काल व्यतीत करब १ । विनष्ट करब २ ।
गमागम–अत्यन्त सौगन्ध्य ।
गमार–ग्राम्य, अनभिज्ञ ।
गमै–छोट गाम ।
गमैआ–गामक (विषय) ।
गमैती–ग्रामान्तर गमन ।
गमैया–गामक विषय ।
गम्भीर–स्थिरान्तःकरणक, अचञ्चल-प्रकृत्तिक ।
गम्हड़ा–धान्यादिक गर्भ ।
गम्हड़ी–व्रीहि, षष्ठिका ।
गम्हारि–गम्भारी ।
गर–गल, गरदनि १ । ठीकसँ बैसबाक योग्य भाग २ । चारक उतार ३। अवसर ४ ।
गरगट–गलगत, गलेपतित, बलाय ।
गरगोटा, **गरगोटिआ** –गलहस्त, गरदनिक आगाँ पकड़ि ठेलब ।
गरचुन्नी–माछक प्रभेद ।
गरदनि–ग्रीवा ।
गरदनिआँ–गलहस्त, ग्रीवाक पछिला भाग पकड़ि ठेलब ।
गरदा–धूलि ।

गरदाम, गरदामी –गलदास, मालक गरदनिक डोरी ।
गरय–चारक क्रमिक उतार १ । घरक उच्चता २ ।
गरयगर–उच्च गरय बाला (घर) ।
गरलग्गू–जे खयलासँ गरमे लागिजाय ।
गर लागब–क्रि० गरक यथोचित उच्चारणमे असामर्थ्य ।
गरसँ, गरसओं –गलसम, भरि गरदनि (जल)
गरसब–क्रि० ग्रसन, राहूपराग ।
गरहत्था–गलहस्त ।
गरागरौबलि–परस्पर गारि ।
गरा लागब–क्रि० लग+अब-गलविवरमे अँटकब ।
गरीब–वि० दरिद्र ।
गरुड़–सं० पक्षिविशेष ।
गरुहन–गुरु धान्य, मालभोग आदि, जे अधिक दिनें गाछमे पाकए ।
गरू–कठिन, असमसाध्य ।
गरै–माछक प्रभेद ।
गर्जा–वि० आवश्यकता १। मेघक शब्द २ ।
गर्जू–वि० गर्जबाला ।
गर्द–घोल, कोलाहल ।
गर्दमघोल–अधिक घोल ।
गर्दा–वि० धूलि, धूरा ।
गर्व–सं० अभिमान ।
गर्म–वि० उष्ण, गरम १ । परिणाम मे उष्णगुणक २ ।
गलकट–गरदनि कटनिहार, दुष्ट ।
गलगलाएब–क्रि० गलगल् + अब-शिशु शुकादिक अत्यन्त अस्पष्ट बाजब, प्रथम बजबाक आरम्भ करब ।
गलझर–घोल १ । किंवदन्ती २ ।
गलब–क्रि० द्रवीभूत होएब विलय ।
गलमोचनी–छोट गेडुआ ।
गलमोछ–गाल पर्यन्त अवस्थित मोछ ।
गलिआरी–गल्ली, सिकस्त रास्ता ।
गलौधी–गलब-धनी, माथ गालमे लपटएबाक वस्त्र ।
गल्ली–रथ्या, सिकस्त बाट ।
गल्लीकुच्ची–गल्ली प्रभृति सिकस्त जगह ।
गस–वि० अचैतन्य, मूर्च्छा ।
गसब–क्रि० दृढ़ सम्बद्ध करब ।
गह–दोग ।
गहकरन–ओषधिविशेष ।
गहड़ि–लूरि, अवगति ।
गहदाएब–क्रि० गहद्+अब-अनास्था, उपेक्षा करब, गौरव करब ।
गहन–ग्रहण, राहूपराग ।
गहनमरू–गहनक कारण अङ्गभङ्गबाला ।
गहना–भूषण ।
गहना-गुरिआ–गहना आदि ।
गहब–क्रि० गह्+अब-जोरसँ पकड़ब १ । छिद्रक पूर्ति करब २ ।
गहबर–ग्रामदेवताक गह्वर, आगमन गृह।
गहाकि–ग्राहक ।
गँहिड़क्का–गहींड़ प्रभेदक ।
गहिंड़ाह–गंभीरता ।
गहुआ–पकड़बाक यन्त्रविशेष ।
गहुमन–कृष्णपादाङ्कि सर्प ।
गहुमा–धानक प्रभेद १ । रङ्गविशेष २ ।
गहुमी–रंगविशेष ।
गहूम–गोधूम, अन्नविशेष ।
गाइनि–स्त्री, गायनी, गीत गओनिहारि ।

गाँउज, गाउजि –फेनाकार मुखादिक विकार।
गाए–गौ हि० ।
गाएब–क्रि० गब्+अब-गान करब १ । वि० अदृश्य २ ।
गाँओ–गाम ।
गाओल–उपगीत ।
गागर–माछक प्रभेद ।
गाङ–गङ्गा नदी ।
गाछ–वृक्ष ।
गाछी–बहुत गाछसँ युक्त स्थान ।
गाँज–माछ मारबाक यन्त्रविशेष ।
गाँजर–कन्दविशेष ।
गाजर-बीजर–साफ नहि कयल १ । मिझर २ ।
गाँजा–गञ्जा, भाँग सन ओषधि विशेष, जकर धूआँ पीअल जाइत अछि।
गाँझी–फलविशेष ।
गाड़–निखनन १ । पटएबाक हेतु करीनक पड़ाब २ ।
गाड़ब–क्रि० निखनन ।
गाड़ा–माटिमे गाड़ल मुरदा ।
गाड़ी–पहिआयुक्त वाहन ।
गाढ़–गील सँ आन मोट (दुग्धादि)
गाँती–वस्त्रविशेष ।
गाद, गादि –जलमे बैसल मल १ । बाँसक त्वचासँ भीतर भाग २।
गाँथनि–ग्रन्थन ।
गाँथब–क्रि० गँथ्+अब-ग्रन्थन ।
गान–संगीत गाएब ।
गाबिस–बालुका सँ अमिश्रित माटि, कुलालकरमृत्तिका ।
गाभ–राखल दूधक उपर जमल भाग ० धान्यादिक गर्भ २ ।
गाभिनि–स्त्री० गर्भिणी, गर्भ-युक्त (गाए महीसि आदि) ।
गाम–ग्राम ।
गाय–गौ हि० ।
गारब–क्रि० निगालन ।
गारा–गारल आम्रादिक रस ।
गारागरौबलि–परस्पर गारि देब ।
गारि–गाली, दुर्वाक्यविशेष ।
गारि देव–क्रि० द् + अब-गाली प्रदान।
गारि पढ़ब–क्रि० पढ़+अब-गारिक शब्द बाजब ।
गाल–गल्ल, कपोल ।
गाल करब–क्रि० कर्+अब-अधिक बाजब ।
गाहकि–ग्राहक ।
गाही–पञ्चप्रमाणक ।
गिजटाइ–संकीर्ण, परस्पर सम्बद्ध गाजर बीजर ।
गिजब–क्रि० उनटाए-पनटाए अत्यन्त छुबब ।
गिड़ब–क्रि० निगिलन, भक्षण ।
गिदरनोच–आधा-छीधा फाटल नोचल कपड़ा आदि ।
गिद्ध–गृद्ध ।
गिधनी–अत्यन्त छोट (माछ) ।
गिन्नी–सुवर्णामुद्राविशेष ।
गिरगिट–पल्ली, गृहगोधा ।
गिरथाइनि–स्त्री० गृहस्थायिनी, घरक मुख्य स्त्री ।
गिरहकट–बान्हल गीरह कटनिहार ।

गिरहबाज–परबाविशेष ।
गिरहबात–वातरोगविशेष ।
गिरि–ब्राह्मणविशेष ।
गिरिआइनि–गिरि जातिक स्त्री ।
गिलगर–अधिक गील ।
गिलट–धातुविशेष ।
गिलटी–छट्छट् कएनिहार शरीरस्थ मांसपिण्ड ।
गिलास–जलपानपात्रविशेष ।
गिलेबा–पजेबापर पजेबा बैसएबाक हेतु बनाओल गील माटि ।
गीजब–क्रि० गिज्+अब-उनटाए-पनटाए अत्यन्त छुबब । आलोड़न ।
गीड़ब–क्रि० गिड् + अब-निगिलन, भक्षण ।
गीत / **गीति** } –सं०-गानयोग्य रागबद्ध पद्यविशेष ।
गीदर–शृगाल ।
गीरह–ग्रन्थि १ चारि आँगुर प्रमाण २ ।
गील–अधिक पानिक सम्बन्धें परस्पर सम्बद्ध भात आदि ।
गुग्गुल–गुग्गुलु, धूपविशेष ।
गुच्छा–गुच्छ, एकमे सम्बद्ध अनेक ।
गुजर–वि० निर्वाह ।
गुज्जी–कानक मल ।
गुठरी–गोलाकार सटल सक्कत ।
गुड़कैल–मालक रङ्गविशेष ।
गुड़खीर–गुड़क्षीर, गुड़क सङ्ग रान्हल भात ।
गुड़चल्ला / **गुड़चाला** } –गूड़ा चालबाक भूरबाला सूप ।
गुड़रब–क्रि० आँखिक आस्फालन ।
गुड़ारब–क्रि० आँखि आस्फालित करब।
गुड़ाह–गूड़ासँ युक्त ।
गुड़िआ–गुटिका, छोट गोलाकार बनाओल।
गुड़ुम बाजा–वाद्यविशेष ।
गुड्डी–क्रीड़ार्थ आकाशमे उड़यबाक कागज ।
गुण–सं० सौन्दर्य्यादि प्रशंसा प्रयोजक धर्म १ । द्रव्यगुण २ ।
गुणमन्त–गुणवान्, स्त्री० गुणमन्ति ।
गुणी–सं० गुणोपेत, पण्डित ।
गुथनी लागब–क्रि० लग् + अब-एकमे वा एक ठाम सटल सटल बहुतक सम्बन्ध ।
गुदगर–अधिक गुद्दासँ युक्त ।
गुद्दा / **गुद्दी** } – फलादिक त्वचासँ आवृत भाग ।
गुन–गुण १ । डोरीमे भत्ता २ ।
गुनखराह–असम्यक् भत्ताबाला (डोरी)।
गुनबाह–नाओल गून (डोरी) धएनिहार।
गुनमन्त–गुणवान । स्त्री० गुनमन्ति ।
गुनी–गुणी ।
गुपचुप–अप्रकाश ।
गुप्ती–गुप्तास्त्रविशेष ।
गुफा–गुहा ।
गुम–अ० मौन, चुप ।
गुमनामा–विना नामक (चीठी) ।
गुमसड़ब–क्रि० गुमसड् + अब-ढेरीक तापसँ निःसार होएब ।
गुमान–वि० अभिमान ।
गुमार–गरमी ।
गुमास्ता–वि० राजाधिकृत पुरुषविशेष ।

गुम्म–अ०, मौन ।
गुम्मा–पुछलासँ उत्तर नहि देनिहार ।
गुरछा–गुच्छ ।
गुरदी–श्रमापनोदक मुक्काक आघात ।
गुरदी पारब–क्रि० श्रमापनयनार्थ मुक्काक आघात करब ।
गुरमही–गोडुम्बा, फलविशेष ।
गुरमुठि–एकमुहडा ।
गुरमुठि-लागब–क्रि० गुर्+अब-चारू दिससँ एकत्र समाविष्ट होएब ।
गुरम्ही–गोडुम्बा, फलविशेष ।
गुरीच–गुडूची लता, ओषधिविशेष ।
गुरू–गुरु, अध्यापक १ । उपनयनमे आचार्य २ ।
गुलगुल–पलपल, कोमल ।
गुलगुलाएब–क्रि०, गुलगुल + अब-आम्रादिक कोमलीभाव १ गुलगुल शब्द होएब ।
गुलगुलाहटि / **गुलगुलाहठि** } –गुलगुल शब्द होएब ।
गुलजाफरी–गेना फूलक प्रभेद ।
गुलजामु–जामुक प्रभेद १ । तदाकार मिष्ठान्न वेशेष २ ।
गुलदाबरी–फूलक प्रभेद ।
गुलफा / **गुलफी** } –नारिकेरक फलगत अङ्कुर ।
गुलबिआ–गुलाबी प्रकारक रङ्ग १ । ओहिसँ रँगल २ ।
गुलभण्टा–भाँटाक समान ओषधिविशेष ।
गुलमेख–काँटी जकरा उपर थोपी हो ।
गुलाब–शतपत्री, गन्धाढ्या, पुष्पविशेष १ । गुलाबसँ बासित जल २ ।
गुलाबखाजा–मिष्टान्नविशेष ।
गुलाबजामु–मिष्टान्नविशेष ।
गुलाबपास–वि०, गुलाबसँ बासित जलक पात्रविशेष ।
गुलाबी–रङ्गविशेष ।
गुलेँच–एक प्रकारक फूल ।
गुलेती–गुल्ली फेँकबाक अनुप ।
गुलेबा–वि०, गरज्जर ।
गुल्लरि–उदुम्बर, फलविशेष ।
गुल्ली–गुलिका, छोट वर्तुलीकृत मृत्तिकादि १ । गुल्ली डंटा खेलिक छोटका खण्ड दण्ड २ ।
गुल्ली डंटा–क्रीड़ाविशेष ।
गुहकीरा–विष्ठाक कीड़ा ।
गुहचोरा–गुह्यचोर, खढ़पात चारओनिहार सिंहा चोरसँ आन चोर ।
गूआ–गुवाक, पूगीफल ।
गूआमाला–लाक्षारचित माल्यविशेष ।
गूड़–गुड, इक्षुक विकारविशेष ।
गूड़ब–क्रि० गुड्+अब–हाथसँ-बुकब ।
गूड़ा–कुटने तण्डुलादिसँ बहराएल चूर्ण १ । चूर्ण, २ ।
गूड़ी–चूर्ण ।
गूथब–क्रि० गुथ् + अब - चुटकीसँ खीचि-खीचि दृढ़ करब ।
गून–गुण ।
गूनब–क्रि० गुन्+अब-गुणना ।
गूना–सारङ्गी, वाद्यविशेष ।
गूमब–क्रि० गूम्+अब-ढेरीक तापसँ शिथिल होएब ।
गूर–विस्फोट, व्रणाविशेष ।
गूह–विष्ठा ।

गृहब–क्रि० गृह+अब-तागमे ससारि ससारि फूल आदिक सटाएब ।

गृमहार–ग्रीवाभूषण ।

गृह–सं० घर ।

गृहबाज–परबाक प्रभेद ।

गृहस्थ–घरमे रहनिहार खेतीसँ निर्वाह कएनिहार ।

गृहस्थाइ
गृहस्थी } –खेतीपथारी कृषिकर्म ।

गृही–गृहस्थ ।

गेआँति–ज्ञाति, सात पुरुषसँ उपर दशम पर्यन्त ।

गेआन–ज्ञान ।

गेआन पचेसी–क्रीड़ाविशेष ।

गेँग–बकबाद ।

गेँग जोतब–क्रि० जोत् + अब–बकबाद करब ।

गेँट–तराउपरी कए लगाओल काष्ठादिक ढेरी ।

गेँटिआएब–क्रि० गेँटिअब्+अब-गेँट लगाएब ।

गेँठजोड़बा–दम्पतिक वस्त्रद्वय मिलाए ग्रन्थि ।

गेँठरी–हि० मोटरी ।

गेँठिआएब–ना० गेँठ+अब=गेँठिअब् + अब-ग्रन्थिसँ युक्त करब ।

गेठिआबात–वातरोगविशेष ।

गेँठिकट
गेँठिकट्ट } –गेँठ कटनिहार ।

गेँठिबन–ओषधिविशेष, ग्रन्थिपर्णी ।

गेँड़ा–खड़ी, जन्तुविशेष ।

गेँड़ी–काष्ठक खण्ड ।

गेडुआ–उपधान ।

गेडुली–वीड आदिमे सटयवाक हेतु सूत्रादिनिर्मित गोलाकार वस्तु ।

गेन–कन्दुक ।

गेना–पुष्पविशेष ।

गेनिआरि–गणिकारी, वृक्षविशेष

गेन्हारी–तण्डुलीयक, गान्धारी, शाकविशेष।

गेरु–गैरिक ।

गेरुआ–गेरुक रङ्ग ।

गेलही
गेल्ही } –फलविशेष ।

गैघरा–गोगृह, गोशाला ।

गैँच–वक्रताविशेष ।

गैँचब–क्रि० गैंच् + अब-वक्रीभाव ।

गैँचाह–किञ्चित् वक्र ।

गैँची–मत्स्यविशेष ।

गैबार–गोवारक, गोरक्षार्थ का

गैबारि–गोरक्षकक क्रिया गाइक चराएबआदि ।

गैसिंही–मुद्राविशेष, बटेर पकड़बाक हेतु गोशृङ्गाकारग्रहण ।

गो–गोबरक ढेरी ।

गोअरटोली–गोआरक टोल ।

गोअरनट–वस्त्रविशेष ।

गोअरनटुआ–नर्त्तकविशेष ।

गोआर–गोप जातिविशेष । स्त्री० गोआरि ।

गोआह–गबाह, साक्षी ।

गोआही–साक्षीक क्रिया ।

गोइठा–शुष्क गोमय (गोविष्ठा) ।

गोखुला–गोक्षुर, ओषधिविशेष ।

गोँग–अवक्ता १ । दुराग्रह २ ।

गोँग जोतब–क्रि जोत् + अब-दुराग्रहक अत्याग ।

गोँगिआएब–क्रि गोँगि + अब-अस्पष्ट बाजब ।

गोँगिआह–अस्पष्ट वक्ता ।

गोङ–अवक्ता १ । दुराग्रह २ ।

गोङ जोतब–क्रि० जोत् × अब-दुराग्रहक अत्याग ।

गोजर–कनगोजर, बीछ आकारक सूक्ष्म कीट ।

गोझनट–स्त्रीक पहिरल साड़ीक निम्न-प्रान्त ।

गोट–सर्षप १ । बिनु दड़रल (द्विदल) २ । व्यक्ति ३ ।

गोटगर–अधिक व्यक्तिसँ युक्त ।

गोटपगरा
गोटपडगरा } –क्वचित् क्वचित् स्थित ।

गोटरस–क्रीड़ाविशेष ।

गोटा–नूआमे लगएबाक सुवर्णादिक तारसँ निर्मित आध आङुर चाकर वस्तु।

गोटागोटी–अ० एकाएकी, प्रत्येक ।

गोटिना–काष्टखण्ड ।

गोटी–आपरूपी, देहक फोंका १। सतरञ्ज प्रभृति खेड़िक पात्र २। गुलिका ३ ।

गोटेक–एक गोट ।

गोठ–गोष्ठी, एकत्र उपस्थित जनसमूह १। बैसलक नूआसँ वेष्टित धरसहित दुहू ठेहुन २ ।

गोठदार–बान्हल पागक प्रभेद ।

गोठ मारब
गोठ लगाएब } –बैसलमे नूआसँ ठेहुन सहितक वेष्टन करब ।

गोठाल–गोस्थल

गोठिआएब–क्रि० गोष्ठीमे बैसब, एकत्र अनेकक उपस्थिति

गोठुला–चिपरीगोइठाक घर ।

गोड़कट–पाएर पसारि सुतबाक अयोग्यता।

गोड़थरि
गोड़थारी } –पाएर रखबाक स्थान ।

गोड़ना–नेनाक पाएरक काड़ा ।

गोड़पैँच–गतायातव्यवहार ।

गोड़रा–टाङबाला माछ ।

गोड़लग्गी–प्रणाम ।

गोड़हन–सुतनिहारक पाएर दिसक भूमि १ । छोट बालकक काड़ा २ ।

गोड़हन्नी–नामनाम पाथल सुखाएल गोबर।

गोड़ाइत–कचहरीमे असामी बजएबाक हेतु नियुक्त पुरुष ।

गोड़ा
गोड़ानि } –पालक आधार काष्ठादि ।

गोड़ी–पालक अवयव छोट आधार ।

गोड़ैती–गोड़ाइतक काज ।

गोँढ़लत्ती–गोँढ़िकेँ गाँज टापि बनएबामे उपकारक लताविशेष ।

गोँढ़ि–मत्स्योपजीवी जातिविशेष । स्त्री० गोढ़िनी ।

गोँढ़िआरी–गोँढ़ि जातिक टोल ।

गोँत–मालक मूत्र ।

गोँतब–क्रि० गोँत + अब - मालक मूत्रत्याग ।

गोत्र–सं० बीजी मुनि ।

गोधन–गोबरक बनाओल पुरुषाकार गोवर्द्धन पर्वत ।

गोधिआँ–पचेसी प्रभृति खेड़िमे एक सङ्ग हारि जीतक भागी ।

गोन–निम्बनिर्यास, नीमक लस्सा ।

गोनरि (ड़ि)–एकडोरिआ बीनल पटिआ।

गोप–सं० गोआर जातिविशेष ।
गोपलाएब–क्रि० गोपल् + अब – अदृश्य होएब ।
गोपालखत्ता–वस्तुविनाशगर्त्त ।
गोपीचन्दन–गोपीतड़ागक मृत्तिका ।
गोबर–गोमय ।
गोबरकढ़नी–स्त्री० गोबर कढ़बामे नियुक्त स्त्री ।
गोबरगनेस–गोबरक गणेश, अकर्मण्य ।
गोबरछत्ता–शिलीन्ध्र, छत्राकार भूमिमे उत्पन्न ।
गोबराइन–गोबरक गन्ध सदृश गन्ध ।
गोबराड़–गोबर एकट्ठा करबाक भूमि ।
गोबराह–किञ्चित् गोबरसँ युक्त ।
गोबरौड़–गोबर माटि नूड़ रखबाक पात्र।
गोब्राह्मणी–यथा गाए ब्राह्मण केँ मारब वा गाय ब्राह्मणसँ मरब दुहू अधलाह तथा क्रियान्तर ।
गोर–उ० गौरवर्ण । स्त्री० गोरि ।
गोरका–उ० गौरप्रभेदक, स्त्री० गोरकी ।
गोरब–क्रि० फलादिकेँ पकबाक हेतु माटिक तर वा निमुन्न बासनमे राखब ।
गोरहन्नी–नाम पाथल गोबर १ । डोमक वाद्यविशेष २ ।
गोराइ–गौरवर्णत्व ।
गोरि–स्त्री० गौराङ्गी ।
गोरिआ–गोपजातिविशेष ।
गोरु–बिनु बाहल गाय ।
गोरुआ–गोरलासँ पाकल (फल) ।
गोरस–दही-दूध ।
गोरैया–गोआरक देवता ।
गोरोचन–गोरोचना, गाइक कपारक पीअर रङ्ग ।
गोल–वर्तुल १। वर्तुलकाष्ठ २। वर्णविशेष ३। तादृश कपिशवर्णक माल ४। मण्डल ५। एकमतिआक समूह ६।
गोलका–गोलप्रकारक ।
गोलट–परस्परक बालककेँ परस्पर अपन कन्यादान ।
गोलमाल–अज्ञात प्रकारेँ नष्ट ।
गोलरी–गहूम आदिक सीस थकुचला पर अवशिष्ट गुठरी ।
गोलहत्थी–हरदि दय अधिक पाकसँ रान्हल गोलाकार भात ।
गोला–पैघ ढेप १। अन्नक पैघ दोकान २ ।
गोलाइ–वर्तुलता ।
गोलागोली–अनेक गोल, अनेक विभिन्न मतक मण्डल ।
गोलालाठी–बन्धनविशेष ।
गोलालाठी भरब–क्रि० एक विशेष प्रकारक बन्धन करब यथा-हस्तद्वय-बन्धन, पादद्वय-बन्धन, बलयाकार हाथकेँ जानुक उपर देने प्रवेशन, हाथक उपर देने दुहू जानुक मध्यमे यष्टिक प्रवेशन ।
गोलिआएब–ना० गोलअब् + गोलिअब + अब-धान्यादिक-गोलाकार करब ।
गोली–गुलिका ।
गोलीताग–गोल भिंडिआओल सूत ।
गोलेस–जनसमूहक प्रधान ।
गोलैसी–एकवाक्यतापन्न जनसमूहक प्रधान व्यक्तिक क्रिया ।

गोशाला–सं० गायक आवास प्रभेद ।
गोसबारा–अविभक्त, साझी (धन) ।
गोसाइँ–पु० गोस्वामी, देवता १। बाबाजीक उपाधि २ ।
गोसाउनि–स्त्री० कुलदेवी ।
गोह–गोबरक ढेरी ।
गोहारि–देवकृत रक्षा ।
गोहि–ग्राह ।
गौआँ–एकग्रामवासी ।
गौँआरय–एकग्रामवासीक व्यवहार ।
गौँछब–क्रि० दू बोझकेँ एकत्र बान्हब ।
गौँज–मुहक लेरपोटा १। अतिवृद्धिसँ वा कालातिक्रमसँ निष्फलीभूत (धान्यादिवृक्ष) २ ।
गौँजाएब–ना० गौँज होएब, धान्य-वृक्षादिक अतिवृद्धि वा कालातिक्रमसँ निष्फलीभाव ।
गौर–गौरी, पार्वती ।
गौरनेजा–गौरीपूजासामग्री ।
गौरव–सं० अहंकार १ । गुरुता २ ।
गौरिआ मालभोग–केराक प्रभेद १ । मालभोग धानक प्रभेद २ ।
ग्रामित–ग्राममित्र, एकग्रामवासी ।
ग्रिमहार–ग्रीवाक हार, कण्ठभूषणविशेष।

घ

घओना–क्रन्दनविशेष ।
घघरा–नटुआक पहिरबाक वस्त्रविशेष ।
घघापाल–सभ अंगकेँ लम्बा वस्त्रसँ आच्छादित कएने पुरुष ।
घघरी–कुमारि नेनाक पहिरबाक वस्त्र-विशेष ।
घछफछाएब–क्रि० घछफछ + अब-तारतम्य करब ।
घटक–विवाहक घटनाकर्त्ता ।
घटकैती–घटकक क्रिया ।
घटघट पिअब–क्रि० पिब् + अब-सशब्द पान ।
घटना–सं० योजना, यत्न ।
घटब–क्रि० अल्प होयब ।
घटबार–सं० घाटपर अधिकृत (पुरुष) स्त्री० घटबारनी ।
घटबारि–घाटक अधिकारीक क्रिया ।
घटही–नित्य पार कएनिहार घाटपर स्थित (नौका) ।
घटाओ–घटा, मेघाडम्बर १। अल्पीभाव २।
घटाटोप–आडम्बर, महत्त्वक प्रकाश ।
घटावर्जन–सर्वथा गतायातक निरोध ।
घटिआ–पुं० घाटमे नियुक्त (पुरुष) ।
घटिआएब–ना० घट्टी + अब-घट्टी होएब ।
घटुआर–मनघुटाह, अप्रसन्न ।
घटोसब–क्रि० घटोस् + अब-घटघट शब्दपूर्वक अधिक पिअब ।
घट्टी–न्यून ।
घठिहन–घाठिक योग्य अन्न (उरीद़ आदि)
घड़कब–क्रि० स्थूल वस्तुक किञ्चित् विचलित होयब ।
घड़खसाओन–घाड़ खसओने बजबामे उदासीन ।
घड़बड़ाएब–क्रि० घड़बड् + अब-कर्तव्यविमूढ़ होयब ।
घड़मोमड़ा / **घड़मोमरा** } –मालक रोगविशेष ।

घड़र–अति सम्बन्ध ।
घड़र पारब–क्रि० पार+अब–जोरसँ निद्रामे शब्दविशेष करब ।
घड़रा–नौकाक अनुकल्प घटादि–निर्मित तरणसाधन ।
घँड़सूर–गरदनिक पछिला भाग ।
घड़ारी–घरक स्थान ।
घड़ी–पाबनि पर्वविशेष १ । घटी, एक दण्ड काल २ । घटीयन्त्र ३ ।
घड़ीसाज–घड़ीक मरम्मति कएनिहार ।
घड़ेर करब–क्रि० कर+अब–कोनो उद्देशेँ वारंवार आगमन ।
घण्टा–पैघ घण्टी १ । अढाए दण्ड काल २ ।
घण्टी–देवपूजाद्यर्थ वाद्यविशेष ।
घताह–उ० कृत्रिम बताह । स्त्री० घातहि।
घन–सं० लग–लग, निविड़ ।
घनगीरह–लगलग गीरहबाला ।
घनघोर–तुमुल, सङ्कुल ।
घनपोर–जग–लग गीरहबाला ।
घपचब–क्रि० आगाँ बढ़ाए हठात् खैंचब।
घपोल–सङ्कुचिताग्र (पात्र) ।
घबहा–उ० अनादरणीय घाओबाला । स्त्री० घबही ।
घबाह–उ० घाओबाला । स्त्री० घबाहि ।
घमण्ड–गर्व ।
घमर्थन–आम्रेड़न, अति विचार ।
घमला–फूल आदि रोपबाक पात्रविशेष ।
घमलौड़–अनेक वस्तुक वा शब्दक मिश्रण ।
घमसान–बहुत व्यक्तिक बजबाक घोल १ । तुमुल २ ।

घमाएब–क्रि० घम्+अब–घामसँ युक्त होयब १ । घमब्+अब–पघिलाएब २।
घमाघट्ट } **घमासान** –तुमुल, सङ्कुल ।
घमौरी–घर्मजन्य देहक फोँसरी ।
घम्हौरी–फलविशेष ।
घम्हौरी दाना–घम्हौरी फल सदृश अलङ्करण ।
घर–गृह ।
घरखसाओन–उत्साहशून्य ।
घरघराएब–क्रि० घरघर+अब–कफक आक्रमणादिसँ घरघर शब्द कहब ।
घरघुमना–उ० घर मात्रमे घुमनिहार बहार नहि गेनिहार । स्त्री० घरघुमनी ।
घरघुसना } **घरघोसरा** –उ० अधिक काल घरमे रहनिहार । स्त्री० घरघुसनी, घरघोसरी।
घरछरा–घर छारबाक (बाती बा जन) ।
घरछरी–घरक छारनाइ, गृहच्छादन ।
घरजना–प्रत्येक आश्रममे एक–एक व्यक्तिसम्बन्धी (निमन्त्रणादि) ।
घरजमैआ–सासुरमे बसल जमाए ।
घरदेखी–विवाहसम्बन्धार्थ घर देखनाइ ।
घरपैसा–घर पैसनिहार (चोर) ।
घरपैसी–घरमे चौरवृत्त्या पैसब ।
घरबान्हि–बन्धनविशेष ।
घरबैआ–घरक लोक ।
घरमुहाँ–घरक सम्मुख (गमनादि) ।
घरहञ्ञ–आश्रममे सभ व्यक्तिक मृत्यु ।
घरहट } **घरहठ** –गृहनिर्माण, घरक छारब आदि ।
घरहटिया–गृहनिर्माणकार्य–कुशल ।

घराड़ी–आवासभूमि ।
घरान–वि० परिवार ।
घरि–घौर, केराक गाछसँ बहराएल फलगुच्छ ।
घरिआएब–क्रि० घरि+अब–दु:खसँ घर लेब ।
घरिआर–ग्राहविशेष ।
घरिआरी–कीटकृत मृत्तिकागृह ।
घरिपक–घरिमे पाकल (केरा) ।
घरेड़–अति सम्बन्ध (निन्दामे) ।
घरैआ–घरमे व्यवहार्य (कार्य आदि) ।
घरैत–उ० घरबासी, घरबाला ।
घरैतनी–स्त्री० घरबाली ।
घसकटनी–स्त्री० घास कटनिहारि ।
घसकट्टा–घास कटनिहार (लोक, हांसू आदि) ।
घसकब–क्रि० बिनु कहने चल जाएब (निन्दामें) ।
घसब } **घँसब** –क्रि० घस+अब–घर्षण ।
घसबार–उ० घास कटनिहार । स्त्री० घसबारनी ।
घसबाह–उ० घास अननिहार । स्त्री० घसबाहिनी ।
घसबाहि–घास कटनिहारक क्रिया = घास काटब ।
घसमोड़ब–क्रि० घसमोड़+अब=घाड़ ठेहुन मिलाए रहब ।
घसिआरा–हाथी प्रभृतिक घास कटनिहार।
घसेट–घर्षण, रगड़ा ।
घसेटब–क्रि० घर्षण ।
घाँइ–तत्त्व बुझबा में निविष्ट (निन्दामें)।

घाइल–वि० अस्त्रसँ छिन्न ।
घाओ–व्रण ।
घाघड़ा–निबिष्ट, परिपूर्ण, पटु ।
घाघस–बदरी, दुर्दिन ।
घाट–घट्ट, पोखरि प्रभृतिमे स्नानादिक स्थल ।
घाटि–घटती, अल्पीभाव ।
घाँटी–घण्टी ।
घाठि–बेसन, द्विदलक श्लक्ष्ण चूर्ण ।
घाड़–घाटा, अवयवविशेष, ग्रीवा ।
घाड़ी लगाएब–क्रि० लगब+अब–उद्ग्रीब होयब, श्रवणादिक हेतु अवधान।
घानि–खानि १ । आधिक्य २ ।
घानी–समूहसँ पृथक् कएल भुजबाक वा कुटबाक योग्य (अन्न) ।
घाम–घर्म, स्वेद ।
घालब–क्रि० अस्त्रसँ छिन्न करब ।
घास–सं० पशुक खएबाक छिन्न तृण–पुञ्ज।
घिआरी–कीटनिर्मित माटिक घर ।
घिकुमारि–घृतकुमारी, ओषधिविशेष ।
घिनही–व्रणविशेष ।
घिनाएब–क्रि० घिन्+अब=घृणास्पद होयब १ । घिनब+अब–घृणास्पद कार्य करब २ ।
घिनाह–उ० घृणास्पद । स्त्री० घिनाहि ।
घिरनी–नचनिहार यन्त्र ।
घिसिआएब–क्रि० घिसिअब+अब घृष्ट करब, माटिक सम्बन्ध करबैत घैंचब ।
घिसिओड़-काटब–क्रि० कट्+अब–चलबा–फिरब सँ अशक्त होएब ।
घिसोट–घर्षण ।

घीउ–घृत ।
घुघना–रोषसूचक मुखाकारविशेष ।
घुघना-लटकब–क्रि० दैन्यमुद्रायुक्त मुह नमरब ।
घुघनी–हि० बदामसँ बनाओल खाद्यविशेष।
घुघरू–डाँड़क भूषणविशेष ।
घुटकब–क्रि० परबाक बाजब ।
घुटमुटार–छोट गोलाकार ।
घुट्ठी–एँड़ीक उपर पार्श्वक उच्च अवयव।
घुट्ठीसोहार–घुट्ठी पर्यन्त (धोती) १। अत्यन्त हेलमेल २ ।
घुनखौकू–जकरा घून खएने हो ।
घुनघुनाएब–क्रि० घुनघुन् + अब अस्पष्ट मन्दमन्द बाजब ।
घुनलग्गू–जाहिमे घून लागल हो ।
घुनसी–अतसूचम जलकण, सीकर ।
घुनाह–घुनलग्गू ।
घुनेस–विवाहमे पागपर लटकएबाक भूषणविशेष ।
घुमती–मार्गक वक्रता ।
घुमब–क्रि० भ्रमण १ । परावृत्ति २ ।
घुमान–वक्रठा (मार्गक) ।
घुरघुरा–कीटविशेष ।
घुरछा / **घुरछी** }–गुच्छ ।
घुरछी लागब–क्रि० लग् + अब–एकमे अनेकक लागब ।
घुरती–अ० घुरबाक कालमे ।
घुरपेन–घूर कोड़बाक काठी ।
घुरब–क्रि० परावृत्त होएब ।
घुरमा / **घुरमी** }–भ्रमिरोगविशेष, माथक घुमनाइ जेकाँ लागब ।
घुरमुड़िआ–बहुतक एकमुखीभाव १। घूमब २ ।
घुरिआएब–क्रि० घुरि+अब–पुन: पुन: ओही स्थान वा अवस्थामे आएब।
घुरिओठ–घुरिआएब ।
घुरेठ–पैघ घूर ।
घुलब–क्रि० फलक परिणामवश कोमलीभाव ।
घुसकब–क्रि० बैसले कनेक हँटब ।
घुसकुनिआ–चौकीमाली बैसि आगाँ चलब।
घुसहा–घूस लेनिहार ।
घुस्सा–हि० मूकाक अग्र ।
घून–घुण, कीटविशेष ।
घूमब–क्रि० घुम् + अब - भ्रमण १। परावृत्ति २ ।
घूर–धूमाद्यर्थ आगि ।
घूरब–क्रि० घुर्+अब–परावृत्त होएब ।
घूर बहोर करब–क्रि० कर्+अब बारबार आएब–जाएब ।
घूरी–मालक छाबा ।
घूलब–क्रि० घुल् + अब - फलक परिणामवश कोमलीभाव ।
घूस–हि० उत्कोच, स्वकार्यार्थ प्रच्छन्न दान ।
घृत–सं० घीउ ।
घेघ–गलगण्ड ।
घेघहा–पु० गलगण्डयुक्त आदरणीय पुरुष ।
घेघाह–उ० गलगण्डयुक्त । स्त्री घेघाहि ।
घेँच–पक्षीक नाम गरदनि १ । काछुक मुँह २ ।
घेँचुल–कन्दविशेष ।

घेँट–घाड़, ग्रीवा ।
घेँटकट–कण्ठ कटनिहार, आततायी ।
घेथार–अनेकधा एकविषयक प्रश्न ।
घेयारब–क्रि० अनेकधा एक विषयक प्रश्न करब ।
घेबर–मिष्टान्नविशेष ।
घेर–वेष्टन ।
घेरब–क्रि० वेष्टित करब ।
घेरा–कोशातकी, व्यञ्जनफल विशेष ।
घैंचब–क्रि० घैँच् + अब–आकर्षण ।
घैर–आगाँ वा चारू दिसिसँ रोक ।
घैरब–क्रि० आगाँसँ वा चारू दिसिसँ अवरोध करब ।
घैल–घट ।
घैलची–घैल रखबाक उच्च स्थान ।
घैलाढार–स्त्रीक त्याग (शूद्रादिमे) ।
घोकच / **घोँकच** }–सँकुचब ।
घोकचब / **घोंकचब** }–क्रि० सँकुचब सङ्कुचित होएब ।
घोकड़िआ–ठेहुन ओ मुहक संयोग ।
घोकड़िआएब–क्रि० घोकड़ि+अब–घोकड़ी लगाएब, ठेहुन मुँह दुनू मिलाएब ।
घोकड़ी–ठेहुनमे मुहक संयोग ।
घोकब / **घोँकब** }–क्रि० सञ्चालनसँ उद्घाटितमलयुक्त करब ।
घोँखब–क्रि० अवधारणार्थ वारंवार पढ़ब।
घोघ–अवगुण्ठन १। गालक निचला भाग २ ।
घोघ काढ़ब–क्रि० कढ़+अब–अवगुण्ठन करब ।
घोघट–मुखाच्छादन ।
घोघ फुलब–क्रि० घोघक व्याधिविशेष ।
घोघर–बुझ्या, क्रित्रिम विभीषा ।
घोँघारी / **घोङारी** }–क्षुद्रशङ्ख ।
घोँट–कण्ठविवरगत जलादि । हि० घूँट।
घोँटब–क्रि० जलादिक कण्ठविवरमे प्रापण १ । घर्षण २ ।
घोड़–घोड़ा (निन्दामे) ।
घोड़करैत–सर्पविशेष ।
घोड़कलस–ग्रामदेवतार्थ माटिक घोड़ा ।
घोड़घोड़ान–सतरञ्जमे दू घोड़ाक सहेँ मातु ।
घोड़छान–बन्धनविशेष ।
घोड़न–गाछमे रहनिहार चुट्टी सन पीअर कीट, रक्तपिपीलिका ।
घोड़मुहा–सर्पविशेष ।
घोंड़सह–सतरञ्जमे घोड़ाक सह ।
घोड़साम–तृणविशेष ।
घोड़सार–घोटकशाला, घोड़ा रखबाक घर ।
घोड़ा–उ० घोटक । स्त्री घोड़ी ।
घोदमोद–गुच्छीभूत ।
घोर–दहीक पानि १ । व्याकुल २ ।
घोरजाउर–दहीक सङ्ग रान्हल भात ।
घोरब–क्रि० द्रव पदार्थक मिलाएब १ । खाट आदिकेँ नेबार आदिसँ संयुक्त करब २ ।
घोल–कोलाहल ।
घोसरब / **घोँसरब** }–क्रि० विस्मरण (निन्दामे) ।
घोसारब / **घोँसारब** }–क्रि० विस्मरण कराएल (निन्दामे) ।

घोसिआएब } –क्रि० घोँसि + अब
घोँसिआएब } पैसब ।

घौका–शाकविशेष ।

घौर–कदलीफलक गुच्छ ।

च

चएन–हि० निचेन, झंझटरहित ।

चओड़ा–हि० चाकर, नामानामीक विपरीत, दीर्घ ।

चओड़ाइ–हि० चकराइ, नामानामीक विपरीत, दैर्घ्य ।

चओर–चामर ।

चकचक–चाकचक्ययुक्त, तेजक किरणसँ युक्त (स्फटिकादि)

चकचकाएब–क्रि० चकचक् + अब - चाकचक्य, प्रकाश करब ।

चकचकी–चाकचक्य, तेजःकिरणयोग ।

चकचोँधी } –स्पष्ट दृष्टि प्रतिबन्धक
चकचोनही } तेजः सम्बन्ध ।

चकता–पिड़िका, कीटदंशादिजन्य फूलल वर्तुल मांस ।

चकती–सोहारी बेलबाक आधारविशेष ।

चकबा–उ० चक्रबाक । स्त्री० चकबी ।

चकबिदोर–अत्याश्चर्य ।

चकबिदोर लागब–क्रि० लग् + अब-अत्याश्चर्यक उद्भव ।

चकमा–गजीफाक एक प्रकारक खेलि ।

चकरका–उ० चाकर प्रभेदक । स्त्री० चकरकी ।

चकरगर–अधिक चाकर ।

चकराइ–नामानामीक विपरीत, दैर्घ्य ।

चकरी–दालि दरड़बाक पाथरक चक्र ।

चकाचक } –अधिक चाकचक्य
चकाचक्क } युक्त ।

चकुआएल–क्रि० चकु + अब-चारू दिसि ताकब ।

चकुठा–बाँहिक चौखूट अलङ्करण ।

चकुठी–छोट चकुठा १ । तासक एक रङ्ग २ ।

चकेबा–उ० चक्रवाक । स्त्री० चकेबी ।

चकै–सूत धए खेलएबाक काठक चक्र ।

चकोढ़–चक्रमर्द, क्षुपविशेष ।

चकोर–स० अग्निभक्षक पक्षिविशेष ।

चक्का–चाक, ताख, देबालमे वस्तु रखबक स्थान १ । गुड़ादिक चक्राकार खण्ड २ ।

चक्की मारब–क्रि० मार् + अब-साँपक चक्राकार भए बैसब ।

चक्कू–चाकू, कटबाक छोट अस्त्रविशेष ।

चक्र–सं० चाक ।

चक्रवर्ती–सं० समस्तपृथिवी-शाशक ।

चँगला–पु० चरफर, शीघ्र काज कएनिहार ।

चँगुरा–मड़िआओल एक प्रमाणक सूत ।

चँगुला–चाँगुर, पक्षीक डारि पकड़बाक पाएरक अन्तिम अङ्ग ।

चँगेरा–वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चँगेरी–छोट चँगेरा ।

चङला–पु० चरफर, शीघ्र काज कएनिहार ।

चङुरा–मड़िआओल एक प्रमाणक सूत ।

चङुला–चाँगुर, पक्षीक पाएरक अन्तिमावयव ।

चङेरा–वंशनिर्मित पात्रविशेष ।

चङेरी–छोट चँगेरा ।

चचरा–मत्स्यविशेष ।

चचरी–मत्स्यविशेष ।

चञ्चल–सं० चपल ।

चञ्चु–चञ्चुसदृश लोहक कलम, नीब ।

चट–माटिक बासन सँ अधिक तापक कारण ओदरल चापट भाग १। अ० शीघ्र २ ।

चटक–उड़ता पक्षीक खसल विष्ठा ।

चटकब–क्रि० माटिक बासनक अवयवभङ्गपूर्वक चट शब्द करब।

चटकार–अम्ल वस्तुसम्बन्धसँ मुखक शब्द ।

चटकनी–बहुत छोट चटाइ ।

चटक्की–शीघ्रता ।

चट दए } –अ० शीघ्र ।
चटपट }

चटपट करब–क्रि० कर् + अब-शीघ्र कार्य करब १। मुहक शुष्कीभाव २।

चटपटाएब–क्रि० चटपट् + अब-द्रवरहित होएब ।

चटपटी–शीघ्रता १ । शुष्कता २ ।

चटाइ–कट, खिड़हरि ।

चटाचटि–अ० शीघ्र-शीघ्र ।

चटाचटी-उठब–क्रि० उठ् + अब - चट्चट् शब्द होएब ।

चटान–चत्वर ।

चटिआ–चटाइ १ । प्रारम्भिक शिक्षाक छात्र २ ।

चटिसार–विद्यार्थीक पढ़बाक घर ।

चटुआ–डंटी लागल पिड़ही ।

चट्ट–सरदीसँ ओदरल माटि ।

चट्ट दए–अ० शीघ्र ।

चट्टान–चत्वर ।

चट्टापट्टा–शिशुक क्रीड़ाविशेष ।

चट्टी पड़ब–क्रि० पड् + अब-कूप इनारमे जलक अभाव होएब ।

चठैल–व्यञ्जनार्थ लताफलविशेष ।

चड़िआएब–ना० चाड़ि (यत्न) सँ युक्त कर ।

चड़ै (रै)–पक्षी ।

चड़ै (रै) आ कन्द–औषधार कन्दविशेष।

चढ़नदार–बएलगाड़ीक पाछाँ गेनिहार ।

चढ़न्त–अधिक होइत, वर्द्धमान ।

चढ़ब–क्रि० चढ्+अब-आरोहण ।

चढ़ाइ–मर्गादिक उत्तरोत्तर उच्चता १। चढ़ब २ ।

चण्ठ–निर्दय ।

चण्डाल–डोम १ । क्रूरकर्मा (अति निन्दामे) २ ।

चण्डाली–अतिक्रूर कर्म ।

चण्डुल–कृष्णा ।

चण्डोल–सर्वोच्च भूमि ।

चतकार–दम्भ (स्त्रीक उक्तिमे) ।

चतकारी–दम्भकर्त्ती (स्त्रीक उक्तिमे)।

चतरब–क्रि० लतादिक प्रसार ।

चतरी कटगैनी–बृहती, ओषधार क्षुप ।

चतरी कन्ना–शाकविशेष ।

चतरी गेन्हारी–शाकविशेष ।

चतुर–सं० उ० पटु । स्त्री० चतुरा ।

चतुरइ–चातुर्य ।

चतुरा–स्त्री० चातुर्यवती ।

चतुराइ–चातुर्य ।

चतुर्दशी–सं० चौदहम तिथि ।

चदरा–वस्तु निर्माणार्थ लोहादिपट्ट ।
चद्दरि–उत्तरीय वस्त्र ।
चनक–पक्षिविशेष ।
चनकब–क्रि० अँड़री आदिक कोषक प्रस्फोट ।
चनकलोनी–चनकाम्ल ।
चनकी–एरण्डविशेष ।
चनचनाएब–क्रि० चनचन् + अब–छोट नेनाक अधिक बाजब ।
चननकाठी–चानन देबाक पात्र ।
चननसितुआ–चानन रखबाक शुक्तिकाकार पात्र ।
चनबा–वितान ।
चनबार–घरक दुहु कातक टाट ।
चनसूर–चन्द्रशूर, मत्स्यविशेष ।
चनोटा–चन्दनघर्षणशिला ।
चन्दा–चन्द्रमा १ । हि० बेहरी २ ।
चन्द्रकला–पुष्पविशेष ।
चन्द्रहार–भूषणविशेष, चन्द्राकारयुक्त हार।
चन्द्रोटा–चन्दनघर्षणशिला ।
चन्ना–चन्द्रमा १ । मत्स्यविशेष २ ।
चपइ–दूध दुहबाक पात्रविशेष ।
चपकन–पहिरबाक स्यूतवस्त्रविशेष ।
चपरा–सटबाक लाक्षापिण्ड ।
चपेट, **चपेटा** }–करतल ।
चपै–चपइ, दोहनपात्र ।
चप्फर, **चफरा** }–चालाक ।
चबुतरा–कुट्टिम, उच्च बद्धभूमि ।
चमक–चाकचक्य ।
चमकब–क्रि० चाकचक्य प्रकाश करब १ । अङ्गक स्फुरण २ ।
चमकी–गोल चापट भूषणविशेष १। स्फुरण २ ।
चमगुदरी–घरैआ बादुर पक्षी ।
चमचम–चिरस्थितिसँ विकृत (तैलादि)।
चमचमी–चिरस्थितिसँ विकार (तैलादिक)।
चमड़ा, **चमड़ी** }–हि० प्राणीक त्वचा ।
चमत्कार–आह्लाद १ । कौशल २ ।
चमरउ–तिरहुतिआ चमारक बनाओल (जूता) ।
चमरख–चरखामे टाकु रखबाक चामक आधार ।
चमरदिनाय–दद्रुविशेष, सर्वदा रहनिहार दिनाय ।
चमरनक्क–अभ्यासवश दुर्गन्धक अग्राहक नासिकासँ युक्त ।
चमरबथुआ–बथुआसागक प्रभेद ।
चमरमाछ–मत्स्यविशेष ।
चमरी गाए–चमरी, जकरा नाङड़िक चामर हो ।
चमार–उ० चर्मकार, जातिविशेष । स्त्री. चमैनि ।
चमेली–मालती, पुष्पविशेष ।
चमैनि–स्त्री० चर्मकारजाति स्त्री ।
चमोकूनि–ओषधिविशेष १। कीटविशेष २।
चमौटी–बन्हबाक चाम ।
चम्पइ–चम्पा फूल सन रङ्ग ।
चम्पा–चम्पक, पुष्पविशेष ।
चम्पापुरी–गहुमक प्रभेद ।
चम्पाबीड़ी–पानक खिल्लीक प्रभेद ।
चम्मा–जातिविशेष ।

चर–धान उपजबाक विस्तीर्ण नीच भूमि १ । चोरकेँ वस्तुक ठेकान कहनिहार २ । चामर ३ ।
चरक–श्वेतकुष्ठ १। श्वेतवर्ण (बड़द) २।
चरकट्टा–हाथीक चारा कट निहार ।
चरक फुटब–क्रि० फुट+अब–कुष्ठस्राव ।
चरखकट्टी–चरखा काटब (चलाएब)।
चरखा–सूत कटबाक यन्त्र ।
चरखा काटब–क्रि० कट्+अब–सूत्र बनएबाक हेतु चरखा चलाएब ।
चरखी–चर चर बजनिहार खेलओना १। बाँगसँ बँगौर बहार करबाक यन्त्र २ ।
चरचराएब–क्रि० चरचर+अब–वृथा अधिक बाजब १ । चरचर शब्द करब २ ।
चरचा–चर्चा ।
चर चाँचर–बाधप्रभृति ।
चरनमा–अधिक चरनिहार (माल) ।
चरफर–उ० चलाक, शीघ्रकारी । स्त्री चरफरि ।
चरफरी–शीघ्रक्रियता ।
चरब–क्रि० मालक बूलि–बूलि तृणभक्षण।
चरबाह–उ० मालक चरओनिहार ओ रक्षक । स्त्री० चरबाहिनी ।
चरबाहि–चरबाहक क्रिया=माल चराएब।
चरल–मालसँ भक्षित तृण १ । तृण खाए चुकल माल २ ।
चरहन–चरमे उत्पाद्य (धान्य) ।
चरही–मोट हथजौड़ ।
चराइ–मालक तृणभक्षण ।
चराँत–मालक चरबाक भूमि ।
चरी–पशुपक्षीक भक्षण ।
चरुभर–वाउरसँ पूर्ण (सीसक धान) ।
चरै (ड़ै)–पक्षी ।
चरै (ड़) आकन्द–औषधार कन्दविशेष।
चर्चा–सं० कथन ।
चर्या–सं० क्रिया ।
चलचलाओ–चलबा कालक संघटन चाञ्चल्य ।
चलता–प्रचलित ।
चलती–प्रचार ।
चलनसार–चलबायोग्य, सम्भूत ।
चलप्रचल–सं० चलबाक हलचल ।
चलब–क्रि० चल् + अब–गमन ।
चलाक–उ० चतुर, स्फूर्तिशाली । स्त्री. चलाकि ।
चलाचलती–अधिक प्रचार ।
चलान–सञ्चालन, प्रेषण ।
चल्हबा–मत्स्यविशेष ।
चसक–लोलुपता ।
चसकय–क्रि० लोलुप होएब ।
चसकी–लोलुपता ।
चसमा–वि० उपनेत्र ।
चह–वृक्षविशेष ।
चहक–फाट ।
चहकब–क्रि० किञ्चित् फाटब ।
चहटगर–कट्वम्लमेलसँ सुस्वादु ।
चहुपाला–शिविका ।
चाँइ–आगाँसँ वस्तु लए पड़एनिहार ।
चाउर–तण्डुल ।
चाउँस–उरीदक चीकस ।
चाक–चक्र (कुलालक) १ । ताख २ ।
चाकर–चओड़ा १ । भृत्य २ ।

चाकरी–नोकरी, दासता ।
चाँकि–सावधानता ।
चाखब–क्रि० चख् + अब–स्वादपरीक्षार्थ भक्षण ।
चाँगला–हि० चलाक ।
चाँगुर–पक्षीक पाएर ।
चाङला–हि चलाक ।
चाङ्गुर–पक्षीक पाएर ।
चाँच चलब–क्रि० चल् + अब जलाशयसँ चलब ।
चाँचर–चरक प्रभेद ।
चाँचरि–गोआरक गीतविशेष ।
चाँछ–घर्षणसँ त्वचाक छेदन ।
चाँछब–क्रि० चँछ + अब–घर्षणसँ त्वचाक उच्छेद ।
चाट–चपेटा ।
चाटब–क्रि० चट् + अब–अवलेहन ।
चाटी–चपेटा ।
चाटी चलब–क्रि० चल् + अब–सर्पविषक उद्देशेँ चपेटा चलब ।
चाढ़–चोरक सरदार ।
चाण्डित्य–अयोग्य कौशल, वैनट्य ।
चान–चन्द्रमा १। चन्द्राकृति बाहुभूषण २ ।
चानन–चन्दन ।
चानि–माथक उपर भाग ।
चानी–रूप्यधातु ।
चान्हर–जलाघातजन्य खाधिबाला क्षेत्र १। क्वचित् क्वचित् उपटल जजातिबाला क्षेत्र २ ।
चापकली–अलङ्कारविशेष ।
चापट–चिपिट ।
चाबुक–कशा ।
चाभ–बाँसक प्रभेद १। चव्य २ ।
चाम–चर्म ।
चार–गृहाच्छादन छदि ।
चारा–हाथी प्रभृतिक भक्ष्य डारिपात ।
चारि–चतुःसंख्यक ।
चारिचारि–कौड़ीक क्रीड़ाविशेष ।
चारिम–चतुर्थ ।
चाल–सञ्चाल १। देवसिंहासनविशेष २ ।
चालक–रेचक ।
चालता–फलविशेष ।
चालनि–चालनी ।
चालब–क्रि० चाल्+अब–सञ्चालन १। चालनिसँ सूक्ष्मक निःसारण २ ।
चालाक–चतुर, शीघ्रता सँ कार्यकर्त्ता ।
चालि–गति १। स्वभाव २। प्रचार ३ ।
चालि-चलन–स्वभाव ओ क्रिया ।
चालिसा–चालीस धारा (अन्नक समूह)
चाली–कृमि ।
चालीस–४०, चत्वारिंशत् ।
चालीसम–चालीसक पूरक, चत्वारिंशत्तम।
चालीसा–चालीस धारासँ परिमित (अन्नक पुञ्ज) ।
चास–आबादी भूमि ।
चासब / **चाँसब** }–क्रि० चस् + अब–प्रथम बेर हरेसँ जोतब ।
चाह–इच्छा १। ओपधिविशेष २ ।
चाहब–क्रि० इच्छा करब १। टभकी सँ माछ झाड़ब २ ।
चाहा–चाष, पक्षिविशेष ।
चिकनइ–तेल ।
चिकनकर–उ० नीके वस्तुक भक्षणशील । स्त्री० चिकनकरि ।

चिकनका–श्लक्ष्णप्रभेदक ।
चिकनौइ–श्लक्ष्णता ।
चिकनाएब–ना० चिकनब्+अब–चिक्कन करब ।
चिकनाहा–चिक्कनप्रभेदक ।
चिकनी–तृणविशेष ।
चिकनै–तेल ।
चिकरब–क्रि० चिकर् + अब–चीत्कार, जोर सँ बाजब हि० चिल्लाना ।
चिकस–रोटीक हेतु चाउर आदिक चूर्ण ।
चिकसा–वृक्षविशेष ।
चिक्कन–चिक्कण, श्लक्ष्ण ।
चिक्कन चुनमुन–श्लक्ष्ण-सुन्दर ।
चिक्कनि–बालसँ शून्य श्लक्ष्ण (माटि)।
चिक्का दरबरि–क्रिड़ाविशेष ।
चिखब–क्रि० चिख्+अब–आस्वादन ।
चिचाँढ़ि–निरर्थक चिन्ह ।
चिचाँढि काटब–क्रि० बेकार चाँच लीखब।
चिचाँढि पारब–क्रि० वृथा रेखा खीचब ।
चिचोढ़–चिञ्चाटक, क्षुपविशेष ।
चिचोढ़ब–क्रि० चिचाँढ़ि लिखब ।
चिट्ट–छोट पत्रखण्ड ।
चिट्ठा–वस्तुनामावली ।
चिट्ठी–व्यावहारिक वृत्तान्तपत्र ।
चितकबरा–चित्रवर्णप्रभेदक ।
चितकाबर–चित्रवर्ण ।
चितङ्ग–उत्तान ।
चितरा–चित्रा (नक्षत्र) ।
चिता–सं० मृतकाग्नि ।
चितिरबितिर–चित्र विचित्र, नाना वर्णक।
चितौर–चित्रक, औषधिविशेष ।
चित्त–उत्तान १ । हृदय २ ।
चित्ता–व्याघ्रविशेष ।
चित्ती–कपर्दकक प्रभेद ।
चित्तीमार–सर्पविशेष ।
चित्र–सं० तसबीर ।
चित्रनष्टा–तारतम्य ।
चित्रविचित्र–नाना रङ्गक ।
चिनगी–अग्निकण ।
चिनगारी–उड़ल चिनगीक समूह ।
चिनिआ–गुलाब फूल आदिक प्रभेद ।
चिनुआर–गोसाउनिक उच्च भूमि ।
चिन्तब–क्रि० चिन्त् + अब–गुरुसँ अधीतक सतीर्थ्यसँ चिन्तना करब ।
चिन्ता–स० साधनोपायचिन्तन १। विषाद २ ।
चिन्तित–स० विषण्ण ।
चिन्हब–क्रि० चिन्ह+अब–परिचित करब, जानब ।
चिन्हार–उ० परिचित । स्त्री० चिन्हारि ।
चिपरी–पाथल शुष्क गोबर ।
चिप्पी–चाउरक नपना ।
चिबाएब–क्रि० चिबब्+अब–चर्वण ।
चिमाटि–अति दृढ़ ।
चिरक्का–विदरण ।
चिरचिरी–अपामार्ग, ओषधिविशेष ।
चिरब–क्रि० चिर् + अब–विदलन ।
चिराक–क्रि० दीप ।
चिराकदान / **चिराकदानी** }–वि० द्रव्यरचित दीपाधारपात्र ।
चिराकी–दीपक हेतु नित्य नियत तेल ।
चिरिआइनि–केशमांसादि जरबाक गन्ध।
चिरुआ–चीरल, विदलित ।
चिरैँत–किरात, ओषधिविशेष ।

चिरोंट–मालक रोगविशेष ।
चिरौजी–प्रियाल ।
चिरौड़ी–विवाद ।
चिलका–स्तनन्धय छोट नेना ।
चिलकाउर, **चिलकारु** }–स्त्री० चिलकाबाली ।
चिलतह–अस्त्रविशेष ।
चिलम–धूमपानपात्र ।
चिलमची–हस्तप्रक्षालनपात्रविशेष ।
चिलमिल–तृणविशेष ।
चिलहोड़ि, **चिलहोरि** }–पक्षिविशेष । हिं० चील्ह ।
चिल्लड़, **चिल्लर** }–कीटविशेष ।
चिल्होड़ि, **चिल्होरि** }–पक्षिविशेष । हिं० चील्ह ।
चिहुँकब–क्रि० चिहुँक् + अब–चौँकब।
चिहुट–बाँसक ओदार ।
चीक–मेही सरकी, वंशरचित जनिका विशेष ।
चीकस–रोटी हेतु चाउर आदिक चूर्ण ।
चीखब–क्रि० चिख् + अब–आस्वादन ।
चीच–डाँड़ि, रेखा ।
चीचकाटब–क्रि० रेखा चीखब ।
चीच खैँचब–क्रि० रेखा लिखब ।
चीच फाड़ब–क्रि० फाड़ + अब– चीच लीखब
चीठा–वस्तुक नामावली, फिहरिस्त ।
चीठी–लिखा, पत्र, चिट्ठी ।
चीन–चीनाक, अन्नविशेष ।
चीनी–सिता ।
चीन्हब–क्रि० चिन्ह + अब–परिचित करब, जानब ।

चीर–चीरब ।
चीरब–क्रि० चिर् + अब–विदलन ।
चीरा–पचेसीक ओ घर जतए गोटी नहि कटए ।
चीरीचोत–अनेक ठाम फाटल ।
चील्ह–वृक्षविशेष ।
चुइब–क्रि० चुब + अब–छिद्र सँ जलादिक निःसरण ।
चुइल–च्युत, छिद्रा दिसँ निःसृत ।
चुकब–क्रि० चुक् + अब–प्रमाद सँ अकरण ।
चुकरी–छोट मृत्पात्रविशेष ।
चुक्क–चुक्र ।
चुक्की–चुकरी, छोट माटिक बासन ।
चुक्कीमाली–प्रौढ़पाद ।
चुगिलपन, **चुगिलपना**, **चुगिलपनी** }–पिशुनता ।
चुगिला–पिशुन ।
चुगिलाह–उ० पिशुन । स्त्री० चुगिलाहि।
चुगिली–पैशुन्य ।
चुटकी, **चुटकुर** }–अङ्गुष्ठाङ्गुल्यग्रसंयोग ।
चुट्टा–पकड़बाक यन्त्रविशेष १। बड़का चुट्टी २ ।
चुट्टी–कीटविशेष ।
चुड़लड्–ऐक्षवयुक्त चूड़ाक लड्डू ।
चुड़िला–काचनिर्मित बाहुभूषणविशेष ।
चुड़िहर, **चुड़िहरा** }–चुड़िला बेचनिहार जातिविशेष ।
चुड़िन, **चुड़िल** }–भूतयोनिविशेष ।

चुनचुनाएब–क्रि० चुनचुन् + अब–कण्डूजनक वेदनाविशेष ।
चुनचुनी–कण्डूजनक वेदनाविशेष ।
चुनाएब–ना० चून + अब–चुनब् + अब–चूनसँ मिलाएब ।
चुनिआएब–क्रि० चुनिअब् + अब–वस्त्रक अतिपरिधानसँ तानीभरगीक विचलन ।
चुनेटब–क्रि० चुनेट् + अब – चूनसँ ढौरब।
चुनौटी–चून रखबाक छोट पात्र ।
चुन्नी–रत्नविशेष ।
चुप–अ० मौन ।
चुपकी–अ० तूष्णीम्भाव ।
चुपकी लाधब–क्रि० लघ् + अब – तूष्णीम्भावावलम्बन ।
चुपचाप–अ० पादाघातादि शब्द शून्य, मौन ।
चुप्प–अ० मौन ।
चुप्पा–मौनस्थायी ।
चुभकब–क्रि० डूबि डूबि मुहुः स्नान ।
चुमाओन–माङ्गलिक क्रिया विशेष ।
चुम्बक–अयस्कान्त, आकर्षक लोह ।
चुम्बा, **चुम्मा** }–चुम्बन ।
चुरकी–माथमे दुहू कातक विन्यस्त केश।
चुलहा, **चुल्हा** }–चुह्लो ।
चुहार–क्षुद्र चोर ।
चू–माथक राखल केश ।
चू उतारब–क्रि० उतार + अब–चू कटाएब ।

चूक–चुक्र ।
चूकब–क्रि० चुक् + अब–अनवधानसँ अकरण ।
चूकि–भूलि, भ्रम ।
चूड़ा–चपिटान्न ।
चूड़ि–लाक्षालङ्करणविशेष ।
चून–शुक्तिभस्म ।
चूल्हि–चुह्ली ।
चेखान–लसिगर वस्तुक पैघ खण्ड ।
चेँगा–मत्स्यविशेष ।
चेँगौल–धान्यविशेष ।
चेङा–मत्स्यविशेष ।
चेतन–जातबोध (मनुष्य) ।
चेतब–क्रि० चेत् + अब–सावधान होएब।
चेथरा–रद्दी पुरान वस्त्रखण्ड ।
चेन–स्वस्थ ।
चेन्ह–चिह्न ।
चेप–कोदारिसँ काटल माटि ।
चेरा–चीरल जारन ।
चेरु–बलिच्छिन्न छागरक जाँघ ।
चेला–शिष्य ।
चेल्हबा–मत्स्यविशेष ।
चेष्टगर–क्रियामे समर्थ ।
चेष्टा–क्रिया १। हस्तादिव्यापार २ ।
चेहरा–वि० आकार ।
चेहाएब–क्रि० चेह + अब–सभ्रमयुक्त होयब ।
चैत–चैत्र मास ।
चैताबरि, **चैतार**, **चैतारि** }–चैत्रसहित तत्समीप समय ।
चैती–चैत्रभव ।

चोआ–धुमनक तेल ।

चोकटब–क्रि०
चोकड़ब–क्रि० } –फलादिक सङ्कुचितावयवक होएब ।

चोकड़ा भोस–कदलीफल विशेष ।

चोकड़ि–सङ्कुचितावयवक (आम्रादि) ।

चोकर–आँटा चालला पर चालनिमे जे रहि जाय ।

चोख–तीक्ष्णाग्र ।

चोखगर–अति तीक्ष्णाग्र ।

चोखा–श्राणा, साना ।

चोँगा–बाँसक पात्रविशेष ।

चोँगी–ताटङ्कादिधारक भूषण ।

चोङा–बाँसक पात्रविशेष ।

चोङी–ताटङ्कादिधारक भूषण ।

चोँच–चञ्चु, पक्षिमुखाग्र ।

चोँचा–पक्षिविशेष ।

चोट–आघात ।

चोटगर–साघात ।

चोट लागब–क्रि० लग् + अब-आघात-सम्बन्ध ।

चोटाह–साघात (फलादि) ।

चोत–गोबर आदिक ढेरी ।

चोन्हराएब–क्रि० चोन्हर + अब-आँखिक गरमी सँ चकचोँधा लागब ।

चोप–उपर मोट मढ़ल लाठी ।

चोपदार–वि० चोप रखबामे राजनियुक्त ।

चोभव–क्रि० मुहमे लगाए आकृष्टरसक करब ।

चोभा–मुहमे लगाए रसाकर्षण ।

चोभा-लगाएब–क्रि० लगब् + अब-रसाकर्षणार्थ मुहमे लगाएब ।

चोर–सं० उ० स्तेन । स्त्री० चोरनी ।

चोरकाँटी–छिमड़ा, तृणविशेष ।

चोरकोड़बा–बान्हल चार मे पश्चात् देल कोड़ो ।

चोर चहार–चोरप्रभृति ।

चोरनी–स्त्री० चोरओनिहारि ।

चोरबत्ती–बातीमे तराउपरी पैसाओल बाती।

चोरहो–चौर्य ।

चोरा–शिराक कड़ापन रोग १। अनादरणीय चोर २ ।

चोरानुक्की–बालक्रीड़ाविशेष ।

चोरामुट्ठी–बालक्रीड़ाविशेष ।

चोरि
चोरी } –चौर्य ।

चोली–आँगीक प्रभेद ।

चोहारि–प्रसवानन्तर मालक पेय औषध-विशेष ।

चौ–दुहू कातक दाँत

चौअन्नी–चतुराणकी, चारि, आनाक राजमुद्रा ।

चौआलीस–४४, चतुश्चत्वारिशत् ।

चौआलीसम – चतुश्चत्वारिंशत्तम, चौआलीसक पूरक ।

चौक–परस्पर सम्बद्ध चारि घरक १। मध्यवर्ती अवकाशस्थान २ ।

चौकठा–चौखूट बाँहिक भूषण ।

चौकठि–द्वारशाखा ।

चौकठी–छोट चौखूट बाहुभूषण १। तासक एक रङ्ग २ ।

चौकनी–चौखूट स्थान ।

चौकन्ना–चारू दिस सावधान ।

चौकब
चौँकब } –क्रि० आकस्मात् भयसँ डोलब ।

चौकस–तेज (बड़द्प्रभृति) ।

चौकिआएब–ना० चौकिअब् + अब-चौकीसँ कृष्टक समीकरण ।

चौकी–हलि, हेँगा, कृष्टसमीकरण काष्ठ १ । पहरा २ ।

चौकीदार–कोतवाल, ग्रामरक्षक ।

चौकीमाली–प्रौढ़पाद, काकासन ।

चौकोर–चतुष्कोण, चौपहल ।

चौखड़ी–चारि गोटाक हेड़ १। एकट्ठा होएबाक स्थानविशेष २ ।

चौखूट–चतुष्कोण ।

चौगाना–चारू दिशसँ सावकाश स्थान ।

चौगामा–चारि गाम ।

चौगिर्द
चौगेन } –चतुर्दिश ।

चौगोला–चारि गोल ।

चौघरा–चारि घर १। चारि घरबाला गाम २।

चौचक्क–चारू दिस दृष्टि रखनिहार ।

चौचङ्ग–चारू दिससँ चङ्ग ।

चौचारा–चारि चारबाला (घर) ।

चौठाइ–चतुर्थांश ।

चौठि–चतुर्थी तिथि ।

चौठिचन्द्र
चौठिचान } –भाद्रशुल्क चतुर्थीचन्द्र ।

चौठी–कनमाक चतुर्थांश प्रमाण

चौठैआ–चातुर्थिक (ज्वर) ।

चौँतीस–३४ चतुस्त्रिंशत् ।

चौँतीसम–चतुस्त्रिंशत्तम, चौँतीसक पूरक ।

चौदह–१४, चतुर्दश ।

चौदहम–चौदहक पूरक ।

चौदिस–चतुर्दिश ।

चौधरि
चौधरी } –चातुर्धरिक, ब्राह्मणक उपाधि ।

चौपट
चौपट्ट } –विनष्ट ।

चौपड़ि–चतुष्पटी, क्रीड़ाविशेष ।

चौपतब–क्रि० तह लगाएब, वस्त्रक मोड़बाक प्रभेद ।

चौपति–पैघ चौपहल काठ ।

चौपहल–चतुष्कोण काठ ।

चौपहला–शिविका ।

चौपाइ–सोलहमात्राक छन्दविशेष ।

चौपाड़ि
चैपाढ़ि } –चतुष्पाटी, पाठालय ।

चौपाला–शिविका ।

चौपेत–मोड़ल (कपड़ा) ।

चौपेतब–क्रि० मोड़ि मोड़ि छोट बनाएब ।

चौबट्टी–चारुदिस जएबाक बाट

चौबन्न–५४, चतुष्पञ्चाशत् ।

चौबन्नम–चतुष्पञ्चाशत्तम ।

चौबन्हा–बन्धनविशेष ।

चौबारि–चारू दिसक बसात ।

चौबीस–२४, चतुर्विंशति ।

चौबीसम–चतुर्विंशतितम, चौबीसक पूरक।

चौबुतरा–छोट कुट्टिम ।

चौमास–चातुर्मास्य १। चारि मासक जोतल खेत २ ।

चौमासब–क्रि० लगातार चारि मास खेतक जोतब ।

चौमासा–चारि मासक वर्णनात्मक गीत।

चौमुख–चारि दिस मुहबाला (दीप) ।

चौमुहा–चारि मुखबाला (गृहादि)
चौमुहान–हि० चौबट्ठी ।
चौमोहरा–सतरञ्जमे दुहू दिस दुइ दुइ पात्रक शेष ।
चौरङ्ग–क्रीड़ाविशेष १। अक्षक्रीड़ामे पराजयविशेष २ ।
चौरचन–चौरचन्द्र, चौरवलत अट्टश्य चन्द्रमा, भाद्रशुक्ल चतुर्थीक चन्द्र ।
चौरस–समतल (भूमि) ।
चौरासी–८४, चतुरशीति ।
चौरासीम–चतुरशीतितम, चौरासीक पूरक।
चौरी–लाक्षाविकार १। छोट चर २ ।
चौसञ्झा–चारि व्यक्तिक साझी, चतु:स्वामिक (धन) ।
चौँसट्ठि–६४, चतु:षष्टि ।
चौँसट्ठिम–चतु:षष्टितम, चौँसट्ठिक पूरक
चौसारि–क्रीड़ाविशेष । [चय ।
चौहदी–क्षेत्रक चारू भागक परि ।

छ

छओ–षटसंख्यापरिमित १। अस्त्रसँ छेद २।
छँओड़ा–उ० अनादरणीय, बालक । स्त्री छँओड़ी ।
छओमासा–छओ मासक वर्णनात्मक गीत।
छक–नासिकाभूषण विशेष ।
छकछक–किञ्चित् उष्ण (गात्र)
छकछकाएब–क्रि० छकछक्+अब-गात्र किञ्चित् उष्ण होएब ।
छकछकी–अङ्गक किञ्चित् उष्णता ।
छकतोड़–छाकक अपूर्ति ।
छक-दए-लागब–क्रि० लग्+अब-क्षणिक तेज:सम्बन्ध ।
छकब–क्रि० अविरोधपूर्वक आनक क्रियासँ दबब ।
छकड़बाजी / **छकोड़बाजी** } –नर्तकविशेष ।
छक्कड़ि / **छक्करि** } –छओ दाँत माल ।
छक्का–तास ओ गजीफाक छठम फर्द।
छक्का-छूटब–क्रि० छुट्+अब-दोष पाबि अभ्यास छूटब ।
छक्का-बित्ता–क्रीड़ाविशेष ।
छगुनता–चिन्ता ।
छछलब–क्रि० छहलब, पिच्छलता-प्रयुक्त अनायास गमन ।
छछारब–क्रि० टाट वा देबालक गोबर माटिसँ लेपन
छछारी-काटब–क्रि० कट्+अब-भूमिमे निर्वस्त्र पोन रगड़ब ।
छजनी–गाछक उपरका अग्रभाग ।
छजब–क्रि० अनुरूप होएब, वेष ओ क्रिया स्वसदृश होएब ।
छज्जा–तार नारिकेर प्रभृतिक शाखा ।
छटछट-करब / **छटछटाएब** } –क्रि० चर्मक अन्त: स्थित अलग्न पिण्डक छुइलासँ इतस्तत: घुसकब ।
छटपट-करब / **छटपटाएब** } –क्रि० अङ्गसभ सञ्चालित करब, देहक भूय: संचालन
छटपटाह–उ० अङ्ग स्थिर नहि रखनिहार। स्त्री० छटपटाहि ।
छटपटी–अङ्गक अस्थैर्य ।
छट्टा / **छँट्टा** } –छाँटल, कुट्टनसँ साफकयल (चाउर) ।

छट्ठम / **छठम** } –षष्ठ ।
छठमी–षष्ठ अंश (हिस्सा) ।
छठि–कार्तिकशुक्लषष्ठी सप्तमीक पाबनि।
छठिआर–जन्मसँ छठम रातिक कृत्य ।
छठिआरी–छटिआरक वस्तुजात ।
छड़ी–पातर हस्तधार्य यष्टिका ।
छड़ीदार–राजद्वारपाल ।
छड़ीममरखा–ओषधिविशेष ।
छण्ठा–छानल चरनिहार घोड़ा ।
छत–कोठाक उपर भाग ।
छतदुलारा–ओषधिविशेष ।
छति–क्षति, हानि ।
छतिबन–सप्तपर्ण, वृक्षविशेष ।
छत्ता–छत्र १। मधुमक्षिका प्रभृतिक घर २।
छत्तीस–३६, षट्त्रिंशत् ।
छत्तीसम–षट्त्रिंशत्तम, छत्तीसक पूरक ।
छत्र–सं० आतपत्र ।
छत्रपुरी–असरफीक प्रभेद ।
छत्री–क्षत्रियविशेष ।
छदाम–पाइक चतुर्थांश ।
छन–क्षण १। पहँचाक भूषणविशेष २ ।
छनकट–विश्वासक अपात्र ।
छनकब–क्र० शूर्पव्यापारविशेष १। तृप्तिमे अल्पता २ ।
छनका–वृष्टिसँ अल्प हाल १। कनेक गरम पेय औषध २ ।
छनछनाएब–क्र० छनछन् + अब व्रणादिमे लवणादिसम्बन्धजन्य वेदना विशेष १। छनछन शब्द करब २।
छनछनी–छनछनाएब ।
छनुआ–घृतादिपक (सोहारीप्रभृति) ।
छनोटा–छण्ठा, छानल चरनिहार (घोड़ा)।
छन्द–दोहाप्रभृति ।
छन्ना–दूधक फटोन ।
छन्नाबाड़ा–मिष्ठान्नविशेष ।
छन्नी–मृत्पात्रविशेष ।
छपकब–क्रि० धर नम्र करब ।
छपकाह–कम ऊँच (घर) ।
छपकुनिआ–घर नम्र करब ।
छपकुनिआँ देब–क्रि० दू+अब-घर नम्र करब ।
छपब–क्रि० जलसँ किञ्चित् व्याप्त होयब
छप्पन्नम–षट्पञ्चाशत्तम, छप्पन्नक पूरक।
छप्पय–छन्दविशेष ।
छप्पर–हि० चार, छदि ।
छप्परछप्पर–जलमे चलबाक ध्वनि ।
छबरा–सौराप्रभृति माछक बच्चा ।
छबि–सं० कान्ति १। आकार २ ।
छब्बीस–२६, षड्विंशति ।
छब्बीसम–षड्विंशतितम, छब्बीसक पूरक ।
छयाह–क्षयाह, मरणदिवस ।
छर–लोहादिक दण्ड ।
छरनि–ठाठक प्रथम आवरण (खडही प्रभृति सँ) ।
छरनौती–छारबाक (बाती) ।
छरपब–क्रि० फानब, कूर्दन ।
छरिआएब–क्रि० छरि+अब-अङ्गछिरि आएब।
छरीला–शैलेय, शिलापुष्प, औषधिविशेष।
छर्रा–बन्दूकक छोट-छोट गोली ।
छल–सं० कपट ।

छलरी–देहक अशुष्क चर्म ।
छह–त्रिवली ।
छहर–ऊँच ओ पैघ बान्ह ।
छहरदिबाल–प्राचीर, हि० सैरदिवाल ।
छहरदेबाली–प्राचीर, डीहक चारू कातक दिबाल ।
छहराएब–क्रि० छहर्+अब-छाहरिमे स्थित होएब ।
दहलब–क्रि० छछलब, पिच्छिलता प्रयुक्त अनायास घर्षणपूर्वक अग्रगमन ।
छही–मत्स्यविशेष ।
छहोछित्त–बहुत ठाम फाटल ।
छाउनी–भीतक रक्षार्थ नाम चार १। हि० डेरा २।
छाउर–राख, भस्म ।
छाक–जलपानसँ तृप्ति, एक श्वासे पेय।
छाकी–एक श्वासेँ भरि इच्छा दुग्धा-दिपान।
छागर–पुं० छाग ।
छाँछ–दधिपात्रविशेष ।
छाँछी–छोट छाँछ ।
छाँट–त्याग १। कुट्टन २। कुट्टनसँ त्यजित ३ ।
छाँटब–क्रि० छँट्+अब-अनुपयुक्तक हँटाएब १ कुट्टनसँ स्वच्छ करब २ ।
छाडन / **छाड़नि** } –नदीसँ त्यक्त भूमि ।
छाडब–क्रि० छाड्+अब-त्याग करब ।
छाड़ी–पहीरिकेँ त्यक्त (वस्त्र) ।
छात–छत, कोठाक उपर भाग ।
छाता–छत्र, आतपत्र ।
छाती–वक्षस ।
छान–घोड़ा प्रभृतिक अगिला दू पाएरक बन्धन ।
छानब–क्रि० छन्+अब-घोड़ाप्रभृतिक दू पाएर बान्हब १। वस्त्रादिद्वारा नि:सारित करब, निगालन २ ।
छानि / **छान्हि** } –उपरका भाग ।
छाप–मुद्रा, मोहर आदिक चिन्ह ।
छापब–क्रि० छप् + अब – मुद्रणा १। जालादिमे अभ्यन्तरीकरण २ ।
छापा–मुद्रित ।
छाबा–पाएरक उपर ठेहुनसँ नीच देहाङ्ग।
छार–क्षार, भस्मविशेष १। छारब, तृणादिसँ आच्छादन २।
छारतक–घोड़ाक जोरसँ दौड़नाइ ।
छारब–क्रि० छार्+अब-आच्छादन
छाल–त्वक् ।
छालही / **छाल्ही** } –दहीक उपरका नेनु ।
छिकब–क्रि० अकृत्रिम नासिका-शब्द करब, क्षुत् ।
छिकनी–तृणविशेष ।
छिकार–स्थलगणितमे अल्प अवशिष्ट अंश ।
छिक्का–छिकब, अकृत्रिम नासा शब्द ।
छिच्चा–सेचन ।
छिछरी पथिआ उठब–क्रि० व्याकुल होएब ।
छिछिआएब–क्रि० छिछि+अब-वारंवार अधिक ठाम जाएब ।
छिछिऐनी–वारंवार एमहर ओमहर चलब (निन्दामे) ।

छिछिऐनी लागब–क्रि० लग्+अब-वारंवार इतस्तत: गमनमे यत्न ।
छिजब–क्रि० धान्यादिक सीससँ खसब ।
छिटकब–क्रि० जेरसँ पृथकहोएब १। जलादिकणक उद्गमन २ ।
छिटका–उद्गत जल बिन्दु ।
छिटकिनी–छिटकी, केबाड़ लगएबाक यन्त्रविशेष ।
छिटकी–अर्गला, केबाड़ लगएबाकयन्त्र विशेष १। आनक पाएरमे घुमाए लगाओल पाएर २ ।
छिटब–क्रि० विकीर्ण करब ।
छिट्टा–पथिआ १। छीटल (धान्यादि) २ ।
छिट्टी–छोट पथिआ ।
छितनार–बीचमे उच्च (डाला आदि)
छितनी–छोट छिट्टा ।
छितराएब–क्रि० छितर्+अब-यत्रकुत्र होएब ।
छितरीबितरी / **छितिरबितिर** / **छित्तीबित्ती** } –असमीचीनतया यत्रकुत्रचित् स्थित ।
छिनभिन–छिन्नभिन्न ।
छिनब–क्रि० अनका हाथसँ बलात्लेब
छिनार–उ० लम्पट, व्यभिचारी । स्त्री छिनारि ।
छिनाइ–टेढ़ फाड़ल वा चीरल ।
छिन्नाताकब–क्रि० छिद्रान्वेष ।
छिपब–क्रि० नुकाएब १। सत्वर हँटाएब २।
छिपली–हि० छोट थारी ।
छिपाएब–क्रि० छिपब् + अब-आगाँ सँ नुकाए राखब ।
छिपाह–उ० चोराएकेँ नुकाए रखनिहार । स्त्री० छिपाह ।
छिमड़ि / **छिम्मरि** / **छिम्मी** } –द्विदल अन्नक बीजकोश ओ कदली फल शिम्बी ।
छिरिआएब–क्रि० छिरि + अब्-विकीर्ण होएब । छिरि अब् + अब-बिकीर्ण करब ।
छिरिऐनी–छिरिआएब ।
छिलब–क्रि० तक्षण ।
छिल्ला–खुरपीसँ छीलल (घास आदि) ।
छी–अ० गर्हयता ।
छीआ–अ० जुगुप्सा ।
छीक–अकृत्रिम नासाशब्द ।
छीकब–क्रि० छिक् + अब-अकृत्रिम नासाशब्द करब ।
छीका–छिक्का, अकृत्रिम नासाशब्द ।
छीजब–क्रि० छिज् + अब-धान्यादिक स्वत: सीससँ खसब ।
छीट–चित्रवस्त्र ।
छीटब–क्रि० छिद् + अब-विकिर ।
छीटा–पथिआ, छिट्टा १। छीटल धान्यादि २ ।
छीनब–क्रि० छिन् + अब-आनक हाथसँ बलात् लेब ।
छीना–कपड़ाक थानक समाप्तिचिह्न ।
छीप–बनसीद्वारा माछ मारबाक दण्ड १। बाँस आदिक जड़ि दिस छोड़ि अगिला भाग २ ।
छीपब–क्रि० छिप् + अब-नुकाएब १। सत्वर हँटाएब २ ।
छीमड़ि / **छमरि** / **छीमी** } –छिम्मड़ि, शिम्बी, द्विदल अन्न बीजकोष १। कोषसहित कदली फल २।

छीरीबीती }–असमीचीनतया यत्र
छीरीबिती } कुत्रचित् स्थित ।
छीलब–क्रि० छिल् + अब-तक्षण ।
छुइब–क्रि० छुब् + अब-स्पर्श करब ।
छुइल–स्पृष्ट ।
छुच्छ–तुच्छ, रिक्त ।
छुच्छी–स्त्री० निन्दनीया १ । बिअ निक फोँफी २ ।
छुछरी–नेनाकेँ लिङ्गपर हाथ नहि जएबाक हेतु तदाकार भूषण १। बिअनिक फोँफी २ ।
छुछिआ–स्त्री० निन्दनीया ।
छुछुन–स्वल्पाकारताहेतुक अशोभमान
छुछुन्नर–उ० अति कुत्सित क्रिया कयनिहार । स्त्री० छुछुन्नरि ।
छुछुन्नराइनि–छुछुन्नरिक गन्ध सदृश (गन्ध) ।
छुछुन्नरि–छुच्छुन्दरी, गन्धमुखी, मूषिकाकार जन्तु ।
छुछुम–स्वल्पाकारताप्रयुक्त अशोभन
छुटटुटाइ–बन्द कएलापर कदाचित स्वत: छुटनिहार ।
छुटब–क्रि० मुक्त होएब ।
छुट्टा–छुटल, बिनु लगाओल (पान प्रभृति) ।
छुट्टी–क्रियाक विश्राम, कार्यकारीक अवकाश ।
छुतका–सूतकाद्यशौच ।
छुतब–क्रि० स्पर्शसँ दुष्ट होएब ।
छुतहर–छुतल घैल, आँगन आदि लेपनार्थ अपवित्र घट ।
छुतुक–अशौच ।
छुतुकाह–उ० अशौचबाला । स्त्री० छुतुकाहि ।
छुद्र–क्षुद्र ।
छुद्रबिरही–क्षुद्रबृहती, ओषधिविशेष
छुरछुर-मूतब }–क्रि०सशब्द मूत्र
छुरछुराएब } त्याग ।
छुलछुल मूतब }–क्रि० लगले लागल
छुलछुलाएब } थोड़थोड़ मूत्रत्याग।
छुलाह–उ० चोराएकेँ खाद्य वस्तु खएनिहार । स्त्री० छुलाहि ।
छूछ–छुच्छ, तुच्छ, शून्य, रिक्त ।
छूटब–क्रि० छुट् + अब-मुक्त होएब ।
छूटि–आधिक्य ।
छूतब–क्रि० छुत + अब-दु:स्पर्शसँ कमनिहै होएब ।
छूति–अस्पृश्यसँ स्पर्ष ।
छूरा–छुरिका, अस्त्रविशेष ।
छूरी–छोट छूरा, चक्कू ।
छेआ नबेम–षण्णवतितम ।
छेआलीस–४६, षट्चत्वारिंशत् ।
छेआलीसम–षट्चत्वारिंशत्तम ।
छेआसठि–६६, षट्षष्टि ।
छेआसठिम–षट्षष्टितम ।
छेआसी–८६ षडशीति ।
छेआसीम–षडशीतितम ।
छेआँहिबेयाँहिँ–बहुत ठाम छिन्न ।
छेंक }–अवरोध, अश्वबन्धन ।
छेक }
छेकब }–क्रि० अवरोध करब १ ।
छेंकब } अदृढ बन्धन २ ।
छेगाएब–क्रि० छेग् + अब-क्रिया में अनुभूतदोषक होएब ।

छेद–वेध ।
छेदब–क्रि० वेध करब ।
छेरनाति–पु० नातिक बेटा, प्रपौत्र
छेरनातिनि–स्त्री० नातिक बेटी, प्रपौत्री ।
छेला–सोनारक एक हथियार ।
छेहगर }–पृथक् पृथक् स्थित
छेहर } (धान्यबीजादि) ।
छेहत्तरि–षट्टसप्तति ।
छेहत्तरिम–षट्सप्ततितम ।
छैनी–लोहादि कटबाक लोहाक कील
छैनीकाट–थारीक प्रभेद ।
छोआ–इक्षुक विकार, राबसँ त्याजित रस।
छोट–लघु, ह्रस्व ।
छोटका–छोट प्रभेदक ।
छोटकीअड़ाँची–गुजराती एला ।
छोटपन }–नीचता, छोट लोकक
छोटपना } क्रिया ।
छोटपनी }
छोटाइ–कालप्रमाणकृत कनिष्ठता ।
छोटाह–उ० छोट प्रकृतिक । स्त्री० छोटाहि ।
छोटीमाइ–ओषधिविशेष ।
छोड़ब–क्रि० त्याग ।
छोप–उपरसँ काटब १ । अपुष्ट भित्तिक पश्चात् पोषण २ ।
छोपब–क्रि० उपरसँ काटब ।
छोपी–बिना दण्डक छत्र ।
छोभ–क्षोभ, मानस दु:ख ।
छोर–परम्परा १ । मालक पैघ डोरी २ ।
छोरब–क्रि० खढ़ काटब ।
छोलगढ़िआ–पुँ० मूर्ति निर्माता कुम्हार ।
छोलदारी–वस्त्रगृहविशेष ।
छोलना–छोलबाक साधन (सितुआ-प्रभृति)
छोलनी–व्यञ्जन लारबाक द्रव्यक दर्वी ।
छोलब–क्रि० घर्षणसँ त्वचाविमोचन ।
छोह–आवृत्ति (ई छोह बीआ खसल) ।
छोहका–बहुत शीघ्र बिक्रयादि ।
छोहाड़ा–मेबाविशेष, खजरप्रभेद ।
छौँक–फोड़न मिलाएब ।
छौँकब–क्रि० उपर सँ फोड़न देब ।
छौँकिआएब–ना० छौँकी + अब्= छौँकीसँ मारब ।
छौँकी–पातर दण्ड ।
छौँड़ी–स्त्री० अनादरणीय बालिका
छौर–क्षौर ।

ज

जँ–अ० यदि ।
जइ–यवानी, यवाकार अन्न ।
जइओ–अ० यद्यपि ।
जइती–अ० जयबाक कालमे ।
जइधी–स्त्री० पतिभ्राताक पुत्री ।
जउआँ–जौआँ, एक गर्भसँ-सहोपन्न १ । जोटल कदली फलादि २ ।
जओ–यव, अन्नविशेष ।
जकजिआर–प्रकाश ।
जकड़ब–क्रि० सर्बाबयबेँ सम्बन्ध, दृढ़ सम्बन्ध ।
जकथक–आरब्ध अप्रचलित (कार्य) ।
जकथकाएब–क्रि० जकथक् + अब-प्रारब्ध भए अप्रचलित होएब ।
जकाँ–अ० तुल्य ।
जकीरा–लगलग लगाओल रोपणीय वृक्ष।
जखन–अ० यदा, जाहि क्षणमे ।

जखनुक }
जखनुका } –जाहि क्षणमे भेल ।
जगति–कूपादिक बद्ध कुट्टिम ।
जगदम्बा–पक्षिरूपा भगवती ।
जगन्नथिआ–जगन्नाथक्षेत्रयात्री ।
जगन्ननाथ–सं० पुरीमे स्थापित कृष्ण ।
जगन्नाथी–जगन्नाथक्षेत्रयात्री ।
जगमोहन–कोठाक वाह्य कोष्ठक कुट्टिम।
जगरना–जागरण ।
जँगलाह–अनिविड़ वन ।
जँगलिया }
जँगली } –वन्य, वनमे रहनिहार ।
जँघगर–उ० पैघ जाँघबाला, अधिक चलनिहार ।
जँघासब–क्रि० गतायातेन-अनेकधा मार्गक परिच्छेद ।
जँघिआ–पहिरबाक वस्त्रविशेष ।
जङलाह–क्षुपादिसँ संकुल ।
जङलिआ }
जङली } –वन्य, बनैआ ।
जङली खेहड़ा–वन्य मुद्ग ।
जङ्ग–वि० लड़ाइ, युद्ध ।
जङ्गल–वि० वन ।
जङ्गलझार–वनोपवन ।
जङ्गलिआ }
जङ्गली } –वन्य, वनभव ।
जङ्गली खेड़हा–वन्यमुग्द ।
जङ्गी–बि० सैन्य ।
जङ्घर–पैघ जाँघबाला, अधिक चलनिहार।
जङ्घासब–क्रि० अधिक गतायातसँ मार्गक परिच्छेद ।
जङ्घासल–गतायातसँ अभ्यस्त (मार्ग) ।
जङ्घिआ–वस्त्रविशेष ।
जचनिहार–उ० परीक्षक ।
जजमनिका–याजन वृत्ति ।
जजमान–यज्ञ कयनिहार १ । पात्र-पुरोहितादिक आश्रय २ ।
जज्जल–अनेक छिद्रादियुक्त अनुपयुक्त (गृहादि) ।
जज्जाल–झंझट
जज्जीर–परस्पर सम्बद्ध शृङ्खला, कड़ी।
जट–छोट जटा ।
जटा–सं० सटल लम्बा केशसंघ ।
जटा-जटिनि–स्त्रीक क्रीड़ाविशेष ।
जटाधारी–पुष्पविशेष १ । जटा रखनिहार (साधु) २ ।
जटामसी–जटामांसी, सुगन्धि औषधि विशेष।
जटित–खचित १ । निश्चय रूपें अवधृत २ ।
जटिल–दृढ़, कठिन, गूढ ।
जठर–अति शीत ।
जड़–अज्ञ ।
जड़काला–शीतऋतु ।
जड़ब–क्रि० जटित करब ।
जड़ाउ }
जड़ाओ } –स्वर्णजटित रत्नभूषण ।
जड़ाओन–किञ्चित् शैत्ययुक्त (वातादि)।
जड़ाह–उ० शैत्ययुक्त, अप्रियशैत्यस्वभावक (व्यक्ति) ।
जड़ि–बृक्षमूल ।
जड़िआएब–ना० जड़ि + अब-जड़ि रोपब ।

जड़िआठी–वंशादिक जड़ि दिसक खण्ड।
जड़ी–रोगनिवारक मूल वा शाखाक खण्ड।
जढ़–अति अज्ञ ।
जतए–अ० यत्र, जाहिठाम ।
जतनी–जाहि अल्प परिमाणक ।
जतबा–जाहि परिमाणक, यावान् ।
जतय–अ० जाहिठाम, यत्र सं० ।
जतहि–अ० जाही ठाम, यत्रैव सं० ।
जतहु–अ० जाहूठाम, यत्रापि सं० ।
जतिगर }
जतिमन्त } –उ० उत्कृष्ट जातिसँ युक्त।
जती काल–जतबा काल, यावान् समय ।
जतीखन–जतबा क्षण ।
जतुपुतहु–स्त्री० जाउतक पुत्रक स्त्री ।
जतेक–जतबा, जाहि परिमाणक, यावान्।
जथगर–उ० धनशाली, पर्याप्त ।
जथा–धन ।
जन–सं० लोक १। दैनिककार्य्य नियुक्त २।
जनउ–यज्ञोपवीत ।
जनखड़–अधिक जन लागब ।
जनगर–अधिकलोकयुक्त १ । अधिक दैनिकनियुक्त २ ।
जनम–जन्म, उत्पत्ति ।
जनमब–क्रि० उत्पत्ति ।
जनमौटी–अल्पदिवसोत्पन्न (शिशु) उत्तानशय ।
जनार–गौरैयाक हेतु दूध पिअब ।
जनारो–साधु सबहिँक भोज्य ।
जनि–अ० उत्प्रेक्षाव्यञ्जक ।
जनी–स्त्री० स्त्रीलोक ।
जनी जात–स्त्रीगण ।
जनु–अ० नहि ।
जनेर–अन्नविशेष ।
जनौ–यज्ञोपवीत ।
जनौरी–जन पर रुपैया ।
जन्तर–भूषणविशेष १। तान्त्रिक यन्त्र २।
जन्तु–जानबर ।
जन्त्री–खाम्हकेँ उपर उठएबाक यन्त्र ।
जप–सं० मानस पाठ ।
जपब–क्रि० जप करब ।
जबकब–क्रि० जलादिक अधिक संलग्नता होएब ।
जबकाह–जलादिसँ सार्द्र (भूमि)
जबर–वि० जब्बर, अधिक बलिष्ठ ।
जबरदस्त–वि० अधिक बलिष्ठ (लोक)।
जबरदस्ती–वि० बलात्कार ।
जबरा–साजक झपना ।
जबा–आँगुरक यवाकार चिह्न
जबाखार–क्षारक प्रभेद, यबक्षार सँ०
जबाब–वि० उत्तर ।
जबाबी–वि० अपेक्षितोत्तरक ।
जब्बर–वि० अधिक बलिष्ठ ।
जमकब–क्रि० द्रववस्तुक अधिक सम्बन्ध १ । यथेष्ट अधिक पाएब २ ।
जमघट्ट–अधिक लोकक एकत्र आस्मर्द, तुमुल ।
जमड़ी–मोट भए बैसल मल ।
जमतिगर–पैघ जमाति ।
जमब–क्रि० भोजन १। नृत्यादिक उत्कर्ष २ । मलादिक दृढ़तया स्थिति ३ ।
जमल–उत्कृष्ट होइत (नृत्यादि) १। अधिक जमा भेल (कजरी प्रभृति) २ ।
जमलखानी–गहूमक प्रभेद ।

जमा–वि० एकट्ठा भेल ।
जमाइनि–यवानिका, अन्नविशेष ।
जमाए (य)–पुँ० जामाता ।
जमाएजन–जमाएक सङ्ग रहनिहार लोक।
जमाएब–क्रि० जमब् + अब- महत्वक प्रकाश करब १ । एकत्र मञ्चय करब २ ।
जमाति–बाबाजीक संघ ।
जमादार–वि० सिपाहीक मेट ।
जमान–तरुण ।
जमानि–यावानी, अन्नविशेष ।
जमाय–पुँ० जामाता ।
जमालगोटा–जापाल, जुलाब फलविशेष।
जमुअठि–इनारक तली ।
जमुआ–जामुक लकड़ी १ । कारी रङ्गक प्रभेद २ ।
जमुनिआ रङ्ग–रङ्गक प्रभेद ।
जमोट–जमाओल, वस्त्रादि ।
जयकार–जयशब्दक उच्चारण ।
जयपन्थी–विनाशमार्ग ।
जयपुरी–जयपुरमे निर्मित ।
जयबार–मैथिल ब्राह्मणविशेष, अपज्जीबद्ध ।
जर–जरायु १। ज्वर २। एकत्रित ३ । सघ ४ ।
जरखोड़ / **जरखोर** }–मालक ज्वर ।
जरचौठि–दातव्यक चतुर्थांश ।
जरती–जरबाँस विनष्ट ।
जरती जाएब–क्रि० ज् + अब- जरबाँस विनष्ट हो एब ।
जरदा–वि० पानमे खएबाक सुगन्धित तमाकू ।
जरन–आन्तर दाह ।
जरनघरा–जारन रखबाक घर ।
जरनबाहि–जारनक सञ्चय ।
जरब–क्रि० दग्ध होएब ।
जरलग्गू–जकरा ज्वर लगैत होइक ।
जराइनि–मांस जरबाक गन्ध १ । ज्वरक गन्ध २ ।
जर्राह–वि० हड़जोड़ा ।
जल–सं० पानीय ।
जलकर–सं० जलसम्बन्धी कर ।
जलखइ–हि० जलपानार्थ भक्षण ।
जलगर–अधिक जलयुक्त ।
जलगेन्हारी–शाकविशेष ।
जलधर–जाहिमे जल अधिक समाविष्ट हो से (करीन इनार आदि) ।
जलजन्तु–जलमे रहनिहार जानबर ।
जलपइ–फलविशेष ।
जलपान–जलखइ ।
जलफाँफी–अत्यन्त विरल बानक (कपड़ा) ।
जलबाह–जाल फेकनिहार ।
जलबाहि–जालक व्यापार ।
जलमड़ै / **जलमरै** }–राजाम्रविशेष ।
जलहस्ती–सं० हाथीसन जलजन्तु ।
जलाशय–स० पोखरि ।
जल्दी–वि० शीघ्र ।
जल्ला–मकराक घर १ । घासक हेतु जाली २ ।
जस–यश ।
जसबा–धान्यविशेष ।
जसी–यशस्वी ।

जसोन्ह–भूषणविशेष ।
जस्ता–यसद ।
जहपटार–यत्रकुत्र चत् पसरल ।
जहर–वि० विष ।
जहरकनैल–उपविषविशेष पुष्प-वृक्ष ।
जहरबात–शोणितविकारज वात-रोग ।
जहरमोहरा–सर्पविषशोषक गड्डुरक मस्तकचर्म ।
जहरी–मत्स्यविशेष ।
जहल–कारा ।
जहलखाना–कारागार ।
जहाँ–अ० जतए ।
जहाद–हि० विशाल नौका ।
जहाँ दए–अ० यत्स्थानहेतुक ।
जहिँ–अ० जाही हेतु ।
जहिआ–अ० यदा ।
जहिखन–अ० जाही काल ।
जहिना–अ० जाही प्रकारेँ ।
जहूद–वि० भारी ।
जहूरी–वि० रत्नव्यापारी ।
जा–अ० यावत् १ । खेद २ ।
जाउत–पुं० स्वाभीक भायक बालक ।
जाएब–क्रि० ज् + अब-गमन ।
जाएफर–सुगन्धि फलविशेष, जातीफल ।
जाकड़–चिरस्थापित (वस्त्रादि) ।
जाकब–क्रि० जक् + अब-अवयव शैथिल्यक हेतु एकत्र राखब ।
जाग–प्रबोध ।
जागब–क्रि० जग् + अब-जागरण ।
जागीर–वि० दत्तभूमि ।
जाङ्घ–ऊरु, ठेंगँहुनक उपरका अङ्ग ।
जाङ्घिल–पक्षिविशेष ।
जाच / **जाँच** }–परीक्षा, तत्वनिर्द्धारण ।
जाचब / **जाँचब** }–क्रि० जच् + अब-परीक्षा करब ।
जाट–काचक पात्रविशेष ।
जाठि–यष्टि, पोखरिक यज्ञयष्टि ।
जाड़–जाड्य, शैत्य ।
जाँत–पिसबाक यन्त्रविशेष, घरट्ट १। दबाएब २ ।
जाँतब–क्रि० जँत् + अब-दबाएब ।
जाति–सं० सामान्य, ब्राह्मणत्व घटत्वादि।
जादू–वि० मारणादि प्रयोगविशेष १। असत्यक दर्शन कराएब, इन्द्रजाल २ ।
जादूगर–अद्भुत अन्यथा दर्शन कारक, ऐन्द्रजालिक ।
जाधरि–अ० यावत्पर्यन्त ।
जान–वि० प्राण
जानजानी–अ० प्राणानपेक्ष ।
जानब–क्रि० जन् + अब-ज्ञान ।
जान्तबे–अ० ज्ञानानुसार ।
जापत्री–सुगन्धिपत्रविशेष । जातीपत्री स० ।
जापाल–दु:साध्य, अतिकष्टप्रद ।
जाफर–सुगन्धि फलविशेष, जातीफल स० ।
जाफरी–वंशनिर्मित सच्छिद्र आवरण विशेष ।
जाबी–जालाकार फलादिपात्र विशेष १। तद्धाकार बड़दक मुखड़ा २ ।
जामा–स्यूत वस्त्रविशेष ।
जामिन–प्रतिभू ।

जामिनी–प्रतिभूकर्म ।
जामु–जम्बू ।
जामेबार–वस्त्रविशेष ।
जायफर–जायफल, सुगन्धि फल विशेष, जातीफल सं० ।
जारन–इन्धन, आगिक हेतु काष्ठ ।
जारब–क्रि० जार् + अब-डाहब, भस्मीकरण ।
जारी–वि० प्रवृत्त ।
जाल–सं० आनाय ।
जालबन्दी–लहठीक प्रभेद ।
जाला–भुस्सा लएबाक जालाकार पात्र ।
जाली–आम्रादि रखबाक छोट जाल, झोरी ।
जासूस–वि० गुप्तचर ।
जाह–अ० खेद ।
जिआरि–धान्यविशेष ।
जिगा–भूषणविशेष ।
जिच्च–वि० सिकस्त १। सतरञ्ज में शत्रुक असम्मुख-स्थानशून्य बादसाह २।
जिज्ञसपर–जिज्ञासाबाला ।
जिज्ञासा–सं० बुझबाक इच्छा ।
जिञ्जीर–लोहशृङ्खला ।
जितिआ–जीमूतवाहव्रतक पाबनि ।
जिदिआह–उ० दुराग्रही, स्त्री जिदिआहि।
जिद्द–वि० दुराग्रह ।
जिद्द लागब–क्रि० लग् + अब-अधिक आग्रह होएब ।
जिद्दी–आग्रही ।
जिनिस–वि० उपजा अन्न ।
जिनिसी–जिनिससँ आमदनी ।
जिमड़ / **जिम्मड़** }–वृक्षविशेष ।

जिरतिआ–कृषिकार्य करएबामे नियुक्त, जिरातक कार्य कएनिहार ।
जिरात–वि० मालिकक क्षेत्र ।
जिला–वि० मण्डल, ग्रामसमूह ।
जिलेबी–मिष्टान्नविशेष ।
जिलो–बारातक जुलुस ।
जिल्द / **जिल्ल** }–वि० बद्ध पुस्तक ।
जिल्लो–वि० जुलुम ।
जिस्ता–वि० कागतक प्रमाणविशेष ।
जिहिआ–जह्वोल्लेखनिका ।
जिहुलाह–उ० रमलोलुप । स्त्री जिहुलाहि।
जी–प्राण १ । अ० वि० स्वीकार २ ।
जीअत–जीवित, (गूआप्रभृति) ।
जीत–विजय ।
जीतय–क्रि० विजय ।
जीन–पल्ययन, घोडापर बैसबाक आसन १ । म्लेच्छजातिक भूत २ ।
जीबट–सिद्ध करबाक उत्साह ।
जीबन–स० प्राणधारण ।
जीर–स० जीरक, अन्नविशेष ।
जीह–जिह्वा ।
जीह पनिछाएब–क्रि० जीह पानिसै युक्त, होएब, खयबाक विशेष इच्छा ।
जुआन–जबाव, तरुण ।
जुआनी–तारुण्य, यौवन ।
जुगुताएब–क्रि० ओरियाएकेँ राखब, सुरक्षित करब ।
जुगुति–युक्ति ।
जुगुलात–युक्त, नीक ।
जुटब–क्रि० एकत्रित होएब ।
जुटान–बहुत व्यक्तिक एकट्ठा हो एब।

जुटिकाबन्हन–जूटिकाबन्धन, उपनयनक पूर्वादन राति में कतव्य विशेष ।
जुट्टी–जूटी, वेणी ।
जुड़पित्ती–रोगविशेष ।
जुड़ब–क्रि० उपायसँ प्राप्त होएब ।
जुड़बन्ह–भूषाविशेष ।
जुड़ाएब–क्रि० जुड्+अब-ठण्ढा होएब।
जुतिआएब–ना० जूता+अब-जुतिअब्+अब-जूतासँ मरब ।
जुत्थ–यूथ, समूह ।
जुनेठब–ना० जुनेठ+अब-जुन्नासँ बान्हब ।
जुन्ना–तृणक ऐँठल एकगुणक रस्सा ।
जुबान–स्वीकारवाक्य ।
जुबान देब–क्रि० द्+अब-स्वीकारवाक्य कहब ।
जुबानी–मुखद्वार, कथिता, मौखिक ।
जुमब–क्रि० अधिक प्राप्य होएब ।
जुमहुगर–अधिक जुमाहु ।
जुमाहु–अधिक प्राप्य ।
जुरबन्द–भूषणविशेष ।
जूआ–द्यूत ।
जूआसारि–द्यूतस्थान ।
जूटब–क्रि० जूट्+अब-एकत्रित होएब ।
जूटिकाबन्धन–उपनयनाक पूर्व-रात्रिकर्तव्य शिखामे जूटी बान्हब ।
जूटी–वेणी ।
जूड़–उपरका खोपा १ । शीतल २ ।
जूड़ब–क्रि० जुड्+अब-प्राप्य होएब ।
जूड़शीतल–जलक्रीड़ादिवस, मेष-संक्रान्तिक परात ।
जूड़ा–माथक उपरका खोपा ।
जूता–हि० उपानत्, पनही ।

जूताजुतौबली / **जूताजूती** }–परस्पर जूता मारब
जूति–स्वाधीनता १ । वीयवस्था २ ।
जूम–तमाकूक मात्रा ।
जूमब–क्रि० जुम्+अब प्राप्ति ।
जूमा–बटेरक युद्धक आकरण ।
जूस–यूष ।
जूही–यूथिका, पुष्पविशेष ।
जे–यद, सर्वनामा ।
जें–अ० जाहि कारणेँ ।
जेकाँ–अ० सम, तद्वत् ।
जेजा–वि० नामक पाँछा तिर्यग्रेखा
जेठ–ज्येष्ठ, अधिक वयसक १ । ज्यैष्ठमास २ ।
जेठजन–उ० ज्येष्ठ व्यक्ति (पुत्र प्रभृति)।
जेठजनी–स्त्री० ज्येष्ठा व्यक्ति (कन्याप्रभृति)
जेठरैअति–पुं० श्रेष्ठ असामी, मालगुजारी ओसूलमे नियुक्त ।
जेठसासु–स्त्री० पत्नीक जेठि बहिनि ।
जेठाइ–ज्येष्ठता ।
जेठीमधु–यष्टीमधु, ओषधिविशेष ।
जेना–अ० जाहि प्रकारें, यथा ।
जेमब–क्रि० भोजन ।
जेमहर / **जेम्हर** }–अ० जाहि दिसि ।
जेर–वि० समूह ।
जेरगर–अधिक समूह ।
जेहन–यादृश, जकर सन ।
जेहनसन–अ० यादृश अवसर ।
जेहरि–पादभूषणविशेष ।
जै–यवाकार अन्नविशेष, यवानी ।

जैओ–अ० यद्यपि ।
जैती–अ० जयबाक कालमे ।
जैतुक–जौतुक ।
जैधी–स्त्री० स्वामीक भ्राताक कन्या
जोआएब–क्रि० जो+अब-परिणत होबए।
जोआरि–समुद्रक तरङ्ग ।
जोँक–जलौमा ।
जोकर–अ० योग्य ।
जकटी / **जोकठी** –पेटमे फड़ल कीट विशेष ।
जोँकी–पेटक छोट छोट चोली ।
जोख–तौल ।
जोखब–क्रि० तौलब ।
जोग–योग्य १ । श्रोत्रियत्वयोग्य मैथिल २ । औषधसहमिश्रण ३ ।
जोग-टोन–तान्त्रिक क्रिया (वशीकरणदि)
जोगाड़ (र) करब–क्रि० सामग्रीक सम्पादन ।
जोगि–उ० पटबा जातिविशेष । स्त्री० जोगिनी ।
जोगिआ–ओड़हुल फूल ओ अण्डीक प्रभेद ।
जोगिनि–स्त्री० पटबा जातिक स्त्री ।
जोगिनी–भूषणविशेष ।
जो (यो) गी–योगाभ्यासी ।
जोँगी हड़ीर / **जोङी हड़ीर** –बिनु आँठीक हड़ीर, छोटकी हड़ीर।
जोगौली–भूषणविशेष ।
जोट–सर्पादिक मिथुनसम्बन्ध ।
जोट लागब–क्रि० लग्+अब-सर्पादि स्त्रीपुरुषक संयुक्त होएब ।
जोड़–एककार्यकारी दू गोट १। सन्धि २।
जोड़न–जनमबाक हेतु दूधमे देल दही।
जोड़ब–क्रि० जोड़ ।
जोड़ी–दू घोड़ा गाड़ी ।
जोत–हलसँ कर्षण ।
जोतब–क्रि० हलसँ कर्षण १ । अश्वादिक रथादिमे योजन २ ।
जोतल–कृष्ट ।
जोता–कृषीबल, खेत कएनिहार ।
जोति–ज्योति, कान्ति ।
जोतिखी–ज्योतर्विद् ।
जोती–पालोमे बड़द बन्हबाक डोरी ।
जोभ–तृणविशेष ।
जोर–वि० बल ।
जोरगर–उ० बलिष्ठ । स्त्री० जोरगरि ।
जोरबन्द–सतरञ्जक लेखक एक प्रभेद ।
जोर्रा–पाछाँसँ जोर देब ।
जोलहा–तन्तुवाय, वस्त्र बिननिहार जातिविशेष ।
जोलही–जोलहासँ निर्मित (वस्त्र) ।
जोह–धारमे माछक गमन १। अन्वेषण २ ।
जोहब–क्रि० वस्तुक अन्वेषण ओ संग्रह।
जोहारि–समुद्रकतरङ्ग ।
जौआँ–यमज, एक पेटसँ सहोत्पन्न ।
जौड़–रज्जु, साबेक डोरी ।
जौतुक–सं० वरकेँ देल वस्तुजात ।
ज्ञाति–सं० सात पुस्तिसँ उपर दश पुस्ति पर्यन्त ।
ज्ञान–सं० बोध ।
ज्ञानपचीसी–क्रीड़ाविशेष ।
ज्योति–सं० प्रकाश ।
ज्वर–सं० बोखार हि० ।
ज्वरी–सं० ज्वरयुक्त ।
ज्वाला–सं० धाह, आगिक धधरा ।

झ

झकझक–चाकचक्ययुक्त देखि पड़ब ।
झकाएब–क्रि० झकब्+अब-ठारि डोलाए फलक पातन १ । फल खसबाक हेतु गाछक आन्दोलन २ ।
झकास–सवात चिर-वृष्टि ।
झकाझक / **झकाझक्क** –बहुत चकचक ।
झखनी–दैन्यचिन्ता ।
झखनी लागब–क्रि० दैन्य चिन्ता सँ युक्त होएब ।
झखब / **झख मारब** –क्रि० औदास्यपूर्वक दीनताक चिन्ता करब ।
झगड़–कलह ।
झगड़ब–क्रि० कलहकरब ।
झगड़ा–कहल ।
झङ्खाड़ / **झङ्खार** –अति बृद्ध ।
झझउ–झझौ, बहुधा निशीर्ण (कदलीपत्र)
झझराह–जाहिसँ झरझर जल चुबए तादृश (करीन आदि) ।
झझाएब–क्रि० झझ्+अब-उच्चताप्रयुक्त जलक मन्दगीत ।
झझौ–झझउ, बहुधा-विशीर्ण (केराक पात) ।
झञ्झट–कार्यव्यग्रता, अनेककार्य-पात ।
झट–अ० शीघ्र ।
झटक–वायुवेगसँ तिर्य्यक्कृत वर्षा ।
झटकब–क्रिण वायुवेगसँ तिर्यक् जलपतन।
झटका–अग्रभागक आघात ।
झटकारब–क्रि० झटकार्+अब-शीघ्र -शीघ्र डेग देब।
झट-दए / **झट-पट** / **झट-सन** –अ० शीघ्र ।
झट्टा–जाहि काटल धानक गाछसँ झाँटिकेँ धान हटाओल गेल हो ।
झठहा–फेंकिकेँ फल तोड़ब आदि कार्यहेतुक डण्टा ।
झड़ (र) ब–क्रि० उद्धूननसँ धूली प्रभृतिक ओ मन्त्रसँ सर्पविषादिक हटब ।
झड़र–छोटका बड़र ।
झड़ी–सवातवृष्टि ।
झड़ी लाधब–क्रि० लध्+अब-सवात वृष्टिक चिरप्रवृत्ति ।
झड़ोखा–कोठाक उपरका भाग ।
झण्ठी–ठुट्ठ, शाखारहित (वृक्ष) ।
झनक–मालक व्याधिविशेष १। किञ्चित् विक्षेप २ ।
झनकब–क्रि० पाएर घँसैत मालक चलब १ । पछबासँ धानक पाकब २ ।
झनकाह–उ० बताहसन ।
झनझनाएब–क्रि० झनझन्+अब-झनझन बाजब ।
झन दए उठब–क्रि० हठात् झनत्कार शब्द होयब ।
झपओन–झपोन, किञ्चित् मेघाच्छादित (समय) ।
झपझप–अ० शीघ्र-शीघ्र ।
झपट–पक्षीक आक्रमण ।
झपटब–क्रि० पक्षीक चांगुरसँ वस्तु लेबाक आक्रमण ।
झपना–झपबाक वस्तु, जाहिसँ झापल जाय।

झपसी–सवात मेही वृष्टि ।
झपसी लाधब–क्रि० लध् + अब - चिरस्थायी सवात मेही वर्षण ।
झपोन–झपओन, किञ्चित् मेघाच्छादित समय ।
झप्पा–झापा, काष्ठमञ्जूषाक प्रभेद ।
झबरब–क्रि० समन्तात् लटकब ।
झबरा–जकरा रोइआँ झबरल रहए से (कुकुर) ।
झबरी–धान्यविशेष ।
झभहा–दूध नपबाक पैघ पात्र-विशेष ।
झभही–दूध नपबाक छोट पात्र ।
झमकब–क्रि० झमझम शब्द करब ।
झमटगर–अधिक शाखाबाला (वृक्ष) ।
झमाएब–ना० झामजेकाँ शोकादिसँ कारी होएब, शोकेँ दुर्वर्ण होएब ।
झमानसँ खसब–क्रि० हठात निराश होएब ।
झमार–आन्दोलनजन्य श्रान्ति ।
झमारब–क्रि० झमार्+अब-जोर सँ आन्दोलित करब ।
झमेल–परिछौटमे विवाद ।
झमेलिआ–परिछौटमे विवादस्वभावक ।
झम्पान–पृष्ठवाह्य यानविशेष ।
झर–नमेरक स्वयंपतित बीजसँ जनमल धान ।
झरक–ज्वालासम्बन्ध ।
झरकब–क्रि० अल्प दाह ।
झरका लागब–क्रि० लग्+अब-धानक सुखैनी, रोगविशेष ।
झरखरब–क्रि० वार्द्धक्यसँ अतिकार्श्य ।
झर-झमेल–लेन-देन कार्यमे विवादप्रभृति।
झरझराएब–क्रि० झरझर्+अब-झरझर शब्द करब ।
झरना–निर्झर, पर्वतीय क्षुद्र नदी ।
झरनी–क्रि० आन्दोलनसँ आम्रादिक पतन १ । मन्त्रसँ विषादिक अपगम २ ।
झरबड़र–छोटका बड़र ।
झरोखा–कोठाक अग्रभाग ।
झलकब–क्रि० नैर्मल्यसँ चाकचक्य युत होएब ।
झलकी–नैर्मल्यजन्य चाकचक्य ।
झलझल–परदा नहि कएनिहार पातर (वस्त्रादि) ।
झलझली–विरलताप्रयुक्त अल्प आवरण।
झलफल–अल्प सुझबाक योग्य समय १ । रोगादिवश सुस्पष्ट सुझबाक शक्तिहीन (नेत्र) २ ।
झलफलाएब–क्रि० रोगवश सुस्पष्टदर्शन शक्तिशून्य होएब ।
झलफली–अल्प सुझब, अल्प प्रकाश ।
झलहेरि–नौकासँ जलक्रीड़ा ।
झलाबोर–जलसँ बहुत दूर आच्छादित ।
झलिबज्जा–झालि बजओनिहार ।
झल्ला–शाकविशेष ।
झहर-झहर–झरना जेकाँ निरन्तर (जलादिक पतन) ।
झहरब–क्रि० उपरसँ क्रमिक देबाल प्रभृतिक खसब ।
झहार–नीचाँ पतनयोग्य भूमि ।
झा–ओझा, कतोक मैथिल ब्राह्मणक उपाधि ।
झाँड़–अल्पसम्बन्ध १ । दुराग्रह २ ।
झाँड़ उठब–क्रि० कोनो कार्यमे दुराग्रहक उत्थान ।

झाँक–सुखएबाक हेतु जारनकेँ पजरल चूल्हिपर चढ़ाएब ।
झाँकब–क्रि०-झँक्+अब-पाकपात्रसँ उद्धार कए पात्रान्तरमे भातक राखब ।
झाँकी–भगवानक दर्शन ।
झाखड़–लतादिसंकुल क्षुप ।
झाँखी–गाछक पातर-पातर ठारि ।
झाखड़, **झाखुर** } –लतादिसंकुल छोट गाछ ।
झाँझ–झल्लरवाद्य १ । अनेकच्छिद्र द्रव्यक दर्वी २ ।
झाँझन–विदीर्ण कए पसारल बाँस ।
झाँट–झाँटब ।
झाँटब–क्रि० झँट्+अब-वारंवार उठाएकेँ पटकब ।
झाँटि–क्षुपविशेष १ । तीव्रवायु २ ।
झाड़–अपाकरण १ । वृक्षाकार शृङ्गारी वस्तुविशेष २ ।
झाड़-फूक–मन्त्रादिद्वारा रोग-विषादिक अपाकरण ।
झाड़ब–क्रि० झाड्+अब-आन्दोलन १। मन्त्रसँ अपाकरण २ ।
झाड़ि–जङ्गल ।
झाड़ी–भृङ्गारक, जलपात्रविशेष ।
झाड़ू–हि०, बाढ़नि, सम्मार्जनी ।
झाँप–आच्छादन १ । शिबिकाक स्यूत आवरणवस्त्र २ ।
झापन–आवरण ।
झाँपब–क्रि० झँप्+अब-आवृत करब ।
झाँपा, **झापा** } –झप्पा, काष्ठरचित मञ्जूषाविशेष ।
झाबा–गुच्छ ।
झाम–अधिक तापसँ कारी भेल इष्टका ।
झार–झारब १ । सीसाक गुच्छ २ ।
झारनि–दाउनिमे धानक झारब ।
झार-फुनुस–बरिआत सजबाक झाड़ आदि।
झार-फूक–मन्त्रादिद्वारा रोगक अपाकरण।
झारब–क्रि० झार् + अब - उद्धनन १। मन्त्रदिसँ रोगादिक अपाकरण २ ।
झालरि–गेडुआ प्रभृतिमे सौन्दर्यार्थ चारूकात घोकचाए लगाओल वस्त्र।
झालि–झल्लक, वाद्यविशेष ।
झिंगुनी–झिङ्गिनी, व्यञ्जनफलविशेष ।
झिङ्गुर–कीटविशेष ।
झिझरी–अल्पछिद्रसमूह ।
झिमझिमिआ–कानक भूषणविशेष ।
झिलम–व्यायामसाधनविशेष ।
झिलमिली–वातायन ।
झिलिआएब–क्रि० झिलिअब्+अब-कोदारिसँ माटि सरिआएब ।
झिल्ला–पक्षिविशेष ।
झिल्ली–वर्षामे शब्दकारी लघु जन्तुविशेष।
झिल्लो–जलीय पक्षिविशेष ।
झीक–जाँतमे पिसबाक हेतु देय एक मुट्ठी अन्न ।
झीकब–क्रि० झिक्+अब-आकर्षण ।
झीकातीरी–परस्पर झीकब ।
झीरो–तृणविशेष ।
झील–जलमय, धान नहि उपजबाक योग्य चर ।
झीलो–एक प्रकारक कौड़ीक खेड़ि ।

झीसी–सूक्ष्म जलकण ।
झुकनी–तन्द्राहेतुक झुकब ।
झुकब–क्रि० नम्र होएब ।
झुकाह–एक भाग झुकल, एकभगाह ।
झुझुआएब–क्रि० झुझु+अब-अल्पता हेतुक असन्तोष ।
झुझुआन–अल्प होएबाक हेतु असन्तोषास्पद (अन्नादि) ।
झुटका / **झुटकी** }–फूटल माटिक बासनक बहुत छोट खण्ड ।
झुट्टी–धानक सीसक जूटी ।
झुडुर–झखार, अतिवृद्ध ।
झुण्ड–प्राणीक समूह ।
झुत्थर–झखार, अतिवृद्ध ।
झुनकी–ठेँगाक वाद्य ।
झुनखुना–शाकविशेष ।
झुनझुना–झुनझुन बजनिहार नेनाक खेलओना ।
झुनझुनी–चिरभाराक्रांन्तिप्रयुक्त शोणित-सञ्चारक अल्पतासँ क्षणिक वेदना विशेष ।
झुनझुनी भरब–क्रि० पूर्वोक्त वेदनासँ युक्त होएब ।
झुमक–झुम्मक, कानक भूषणविशेष ।
झुमका–ओड़हुल फूलक प्रभेद ।
झुमकी–छोट झुमक ।
झुमरि–अनेकनर्तकसम्पाद्य नृत्यविशेष १। गीतविशेष २ ।
झुम्मक–झुमक, कानक भूषणविशेष ।
झुरकुटिआ–कदलीफलक एक प्रभेद ।
झुरमुठ / **झुरमुठि** }–जोरसँ परस्पर पकड़ब ।
झुलब–क्रि० आन्दोलन ।
झुल्ला–स्त्रीक स्यूत वस्त्रविशेष ।
झूकब–क्रि० झुक्+अब-एक दिस नीच होएब १ । नम्र होएब २ ।
झूटब–क्रि० झुट्+अब-जोरसँ आक्रमण ।
झूर–कड़ा कए तरल (तरकारी आदि) ।
झूला–हाथीक उपरक दुहु दिस नमरल कपड़ा ।
झूलन–भगवानक झुलबाक शृङ्गार १ । जे हाथी सतत झुलैत रहए २। झुलबा कालक गीत ३ ।
झूलब–क्रि० झुल्+अब-आन्दोलन ।
झोँक–कोठाक बाहरक छदि १ । जोर, आघात २ ।
झोँकब–क्रि० अधिक विनियोग ।
झोँका–भूताद्यपसारणार्थ अधिक धूप ।
झोँकारा–अधिक विनियोग ।
झोँकाह–उ० हठात् क्रियाक आवेगबाला (व्यक्ति) ।
झोँकी–हठात् क्रियाक आवेग ।
झोखरब–क्रि० वार्द्धक्यप्रयुक्त देहक ह्रास।
झोँझ–अप्रवेश्य मध्यमे अदृश्य जङ्गल ।
झोँट–बढ़ल समस्त माथक केशपुञ्ज ।
झोटकी–झोँट ।
झोटहा–स्त्रीगण ।
झोँटाझोँटी–परस्पर झोट पकड़ब ।
झोर–तीमनक एक प्रभेद १ । तीमनक जल २ ।
झोरगर–अधिक झोरसँ युक्त (तीमन) ।
झोरब–क्रि० मृगादिक वनमे अन्वेषण ।
झोरा (ड़ा)–वस्तु रखबाक स्यूत वस्त्रविशेष ।

झोराएब–ना० झोरसँ युक्त करब ।
झोरी–छोट झोरा ।
झोल–चार आदिमे लागल धूमादिकृत विकार ।
झोलब–क्रि० शुष्क चूर्णकेँ वस्त्रपूत करब ।
झोलरतू–झोलसँ मलिन ।
झोलराह–नीच भेल (खाट आदि) ।
झोली–झोलक विकार ।
झौआ–वृक्षविशेष १। जम्बीरविशेष २ ।
झौसब –अत्यल्पतैलादिसँ धूआँ
झौँसब बहकाए व्यञ्जन रान्हब ।

ञ

ञहाँ / **ञेहाँ** }–अहाँ, भवान् सं० ।

ट

टउआएब–क्रि० टउ+अब-अनाथ भए इतस्ततः घूमब ।
टक–एकतान दृष्टि ।
टकगर–अधिक रुपैआबाला ।
टकटक करब–क्रि० अत्यन्त दुर्बल होएब ।
टकटक ताकब–क्रि० तक्+अब-एकतान दृष्टिसँ ताकब ।
टकटकी–एकतान दृष्टि ।
टकटकी लागब–क्रि० लग्+अब-दृष्टि एकतान होएब ।
टकटोरब–क्रि० नहि देखैत हाथसँ ताकब ।
टकटोरिआ–नहि देखैत भूमिमे वारंवार हाथ राखब ।
टकटोरिआ देब–क्रि० द्+अब-नहि देखैत भूमिमे अनेकधा हस्तारोपण।
टकबेल–मल्लीपुष्पक एक प्रभेद ।
टक लागब–क्रि० लग्+अब-एकतान दृष्टि रहब ।
टकसाल–रुपैआक निर्माणस्थान ।
टकुआ–टाकु, तर्कु ।
टकुआ तान–टकुआजेकाँ सोझ ।
टकुरी–सूत कटबाक छोट यन्त्रविशेष ।
टकुरी काटब–क्रि० कट्+अब-टकुरीद्वारा सूतक निर्माण करब ।
टकोरा–आमक बहुत बच्चा फल ।
टक्कर–हि० आघात ।
टगब–क्रि० आबल्यनिद्रादिप्रयुक्त झुकब।
टग हानब–क्रि० हन्+अब-आबल्यसँ झुकैत चलब ।
टघड़ब / **टघरब** }–क्रि० स्रवण ।
टघाड़ (र)–स्रवण ।
टघाड़ (र) ब–क्रि० स्रुत करब ।
टङगर / **टङ्गर** }–पैघ पाएरबाला, अधिक चलनिहार ।
टटउ–टाटबाला (घर) ।
टटकबाह–कर्षणाद्युत्तर बीजवपनादिये विरामाभाव ।
टटका–तात्कालिक, अपर्युषित (जल आदि) ।
टटबन्हा–टाट बन्हबाक (जौड़) १। टाट बन्हनिहार (जन) २ ।
टटमजार–वैनट्य ।
टटहा–कागतक एक प्रभेद ।
टटाएब–क्रि० टट्+अब-सोहारी आदि शुल्क भए कठोर होएब ।